आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 05 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मई, 2012 ★ ज्येष्ठ, 2069

ISSN
2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

दूध की धरती खून से लथपथ..!

गोमांस निर्यात का कड़वा सच

सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

व्हिएतनाम, मलेशिया, फिलिपाइल्स, कुवैत, अंगोला, ओमन, इराक, कोंगो, सिरिया, इरान, अर्मेनिया, कोटेडआयवारै, मॉरिशस, कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, ब्रुनै, उझबेकिस्तान जैसे कई

इजिप्त, सौदी अरबिया, अरब अमिराती, जॉर्डन, जॉर्जिया, लेबनॉन गॅबॉन, सेनेगल, घाणा, कतार पाकिस्तान, बहीरन, अझबैजन, तजाकिस्तान, अल्बॅनिया, नामिबिया, चीन, अफगाणिस्तान, देशो में यह मांस निर्यात हो रहा है ।

पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?

अहिंसा तीर्थ

रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र
'अहिंसा तीर्थ', कुसुंबा, अजंता रोड, जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212

सौजन्य

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

''नयनतारा'', सुभाष चौक, जलगाँव
0257-2223903

''स्वर्णतीर्थ'', आकाशवाणी चौक, जालना रोड, औरंगाबाद
0240-2244520

''नयनतारा इस्टेट'', उन्टवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक
0253-2315644

जहाँ विश्वास ही परंपरा है । मानवीय आहार शाकाहार ।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अह कालंमि संपत्ते,
आघायाय समुस्सयं।
सकाममरणं मरइ,
तिण्हमन्नयरं मुणी।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.32

मरण घड़ी आने पर मुनिवर,
अनशन से कृश देह करे।
सकाममरण त्रिविध में कोई,
एक मरण स्वीकार करे।।

मई, 2012
वीर निर्वाण संवत्, 2538
ज्येष्ठ, 2069

वर्ष 69 अंक 5

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	वैराग्य की अर्द्धशती	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
	वाग्वैभव(3)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
प्रवचन-	भूलसुधार के लिए कोई समय बुरा नहीं	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	12
प्रासङ्गिक-	उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी : जीवन रेखा	-संकलित	18
	ज्ञान-क्रिया के अनुपम योगी उपाध्यायप्रवर	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	19
	सेवा और साधना के पर्याय : उपाध्यायप्रवर	-श्री नौरतन मेहता	21
	सरलता, साधना एवं संयम की त्रिवेणी	-श्री सम्पतराज चौधरी	33
	साधनासुमेरु निरासक्तयोगी उपाध्यायप्रवर	-श्री ज्ञानेन्द्र बाफना	43
साक्षात्कार-	अनासक्ति एवं वैराग्य की प्रतिमूर्ति उपाध्यायप्रवर	-श्री ज्ञानेन्द्र बाफना	49
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Fight Corruption by Technological and Educational Innovation	*-Sh. Pankaj Chordia*	53
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(14)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	56
युवा-स्तम्भ-	बनें महावीर के सच्चे अनुयायी	-श्री. आर.के.जैन	61
एकांकी-	सदुपयोग	-डॉ. रमेश 'मंयक'	64
प्रेरक-प्रसंग-	नैतिकता का आनन्द	-श्री नितेश नागौता जैन	70
नारी-स्तम्भ-	कैसे बचाएँ टूटते परिवार?	-श्रीमती अंकिता मांडोत	72
प्रतिक्रिया-	विवाह और जैन एकता	-डॉ. दिलीप धींग	78
बाल-स्तम्भ -	भीख और भिक्षा में भेद	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	80
कविता/गीत-	ज्ञानी-ध्यानी-त्यागी-तपसी	-श्री धर्मचन्द जैन	17
	मुनिवर मान महान् हैं	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	20
	श्रमणमार्ग के राही तेरा	-श्री सम्पतराज चौधरी	32
	शासन मिला प्रभु का	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	42
	जिनवाणी को उर में धारो	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	52
विचार-	आचार्य हस्ती के अनमोल वचन	-सौ. कमला सिंघवी	51
	जूठा न डालने पर आपका अभिनन्दन	-श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया	55
	संघ-एकता	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	63
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (28)	-श्री नमन मेहता	84
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (26)	-संकलित	87
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	91
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		92
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		114

सम्पादकीय

वैराग्य की अर्द्धशती

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जिस प्रकार तीर्थंकरों की वाणी हमारे जीवन को सम्यक् दिशा प्रदान करती है, उसी प्रकार उनकी वाणी के अनुसार संयमी जीवन जीने वाले महापुरुषों की वाणी और उनके आचरण का भी प्रभाव जनमानस पर पड़ता है। ऐसे संत-महापुरुष प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करते हैं। कभी उनके सान्निध्य में बैठने मात्र से प्रकाश की प्राप्ति होती है तो कभी उनके साथ की गई चर्चा से समाधान प्राप्त हो जाता है। जिनको अपने लिए कुछ नहीं चाहिए, ऐसे अकिंचन किन्तु अभाव-रहित संत-महापुरुष हम संसारी मानवों की उलझन को पल भर में सुलझा देते हैं। उन्हीं संत-महापुरुषों की शृंखला में इस वर्ष दो संत-महापुरुषों का दीक्षा अर्द्धशती वर्ष उपस्थित हो रहा है। जैन आगम और तत्त्वज्ञान के प्रति श्रद्धावान् होकर निरतिचार संयम पालने वाले वे दो संत-महापुरुष हैं- रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज एवं रत्नसंघ के प्रथम उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी महाराज। दोनों की दीक्षाओं में मात्र छह माह का अन्तर है। दीक्षापर्याय में उपाध्यायप्रवर वरिष्ठ हैं तथा पद में आचार्यप्रवर का स्थान वरेण्य है। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी महाराज की दीक्षा अर्द्धशती का शुभारम्भ वैशाख शुक्ला त्रयोदशी, शुक्रवार, 4 मई 2012 को हो रहा है तथा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज की दीक्षा अर्द्धशती का शुभारम्भ कार्तिक शुक्ला षष्ठी, सोमवार, 19 नवम्बर 2012 को हो रहा है। निरतिचार संयमी जीवन की यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इसके प्रति श्रद्धालुओं के मन में उत्साह और उल्लास का भाव होना स्वाभाविक है। सद्गुणियों के प्रति श्रद्धा और उल्लास जीवन को असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। इन दोनों महापुरुषों का जीवन निष्काम संयम को समर्पित है। दोनों एक-दूसरे को आदर की दृष्टि से देखते हैं तथा संघ के संचालन में दोनों समवेत स्वर से एक राय रखते हैं।

उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी महाराज के दर्शनों का जिस किसी को सौभाग्य प्राप्त हुआ हो, वह निश्चित ही उनकी सरलता, शालीनता, सहजता, सजगता, संयमनिष्ठा, गम्भीरता, शान्तता, वात्सल्य, आत्मीयता, सेवाभाव आदि गुणों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा होगा। आगम का संदेश उनके रग-रग में मौजूद है। विद्वत्ता को वे आचरण से सुशोभित करते हैं। उनकी दृष्टि में कोरा ज्ञान बिना आचरण के विशेष महत्त्व नहीं रखता। अतः वे ज्ञान और क्रिया दोनों के संगम हैं। वैराग्य का रंग उन पर गहरा चढ़ा हुआ है। साथ में

रहने वाले संतों को भी वे इसी का प्रशिक्षण देते हैं। उन्होंने अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज, स्वामीजी श्री भोजराज जी महाराज, पं.रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचन्द जी महाराज के सान्निध्य में जो कुछ सीखा, उसे जीवन का मानो मंत्र बना लिया। स्वाध्यायशीलता, वैयावृत्त्य और अप्रमत्तता आपके जीवन के उत्कृष्ट गुण हैं। प्रतिदिन 500 गाथाओं का स्वाध्याय वर्षों से चल रहा है। पं. रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचन्द जी महाराज एवं जयन्तमुनि जी महाराज की आपने जो अग्लान भाव से सेवा की वह इतर सम्प्रदायों के संतों के द्वारा भी प्रशंसित हुई। सेवा में ऐसी सहजता पुद्गलों की अनित्यता और संतों के प्रति आत्मीयता को समझे बिना नहीं हो सकती। रोगाक्रान्त अवस्था को छोड़कर आपने दीक्षा के पश्चात् दिन में कभी आडा आसन नहीं किया। प्रतिदिन 2 घंटे मौन एवं माला जप आपकी नियमित चर्या का अंग है। दिन में जब मांगलिक होती है, तो श्रद्धालुओं को उसके श्रवण में बड़ी आस्था रहती है।

उपाध्यायप्रवर वैचारिक दृष्टि से सुलझे हुए संत हैं। उनको अपना लक्ष्य स्पष्ट दिखाई पड़ता है। वे व्यर्थ के प्रपंच से सदैव दूर रहते हैं। साधकों की साधना कैसे आगे बढ़े, इसके लिए अवश्य उनकी प्रेरणा रहती है। "धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ", "अपमत्तस्स भयं नत्थि", "उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे, मायं चऽज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे", "मित्ती मे सव्वभूएसु" आदि आगम-वाक्य उनके जीवन-दर्शन के अंग हैं। कई संत लोकैषणा से युक्त होकर यश अर्जन की भावना रखते हैं तथा विभिन्न उपायों से लोगों द्वारा अपने को महिमा-मण्डित करवाते हैं। किन्तु उपाध्यायप्रवर सत्कार-सम्मान को एक परीषह मानते हैं तथा उस क्षण में साधना की कसौटी समत्व को धारण करने के प्रति सजग रहते हैं। वे कभी प्रवचन की तैयारी नहीं करते, उनका प्रवचन सहज एवं मार्मिक होता है। उसमें पदे-पदे लोगों को जो संदेश प्राप्त होता है, वह अंधकार में उजाले की भाँति प्रतीत होता है।

विचारों के आधार पर ही आचार की प्रतिष्ठा दृढ़ता को प्राप्त होती है। आपके विचार एकदम निर्मल हैं, इसलिए आपमें साधना का अमित बल है। आप फरमाते हैं- "बन्धुओं! संयम इस मुनिवेश का नाम नहीं है, संयम तो भीतर अन्तर आत्मा में रहता है। यदि कोई मुनि वातावरण को अशांत बनाता है, आवेश प्रकट करता है तो यह उसकी अपनी साधना के लिए अहितकर है।" "सच्चा साधक वह है जिसे विषम परिस्थितियों में भी उत्तेजना नहीं आती हो, प्रतिकूल वातावरण में भी जिसका मन शान्त एवं निर्विकार बना रहता हो, चुभती हुई बात कह देने पर भी चेहरे की भृकुटी में बल नहीं आते हों। मन में किसी के भी प्रति प्रतिशोध की भावना साधक को अंधकार की गर्त में धकेल देती है।"

किसी का अतीत यदि बुरा रहा है तो भी वह वर्तमान को सुधारता हुआ, भविष्य को

उन्नत कर सकता है, यह अटल विश्वास है उपाध्यायप्रवर का। वे फरमाते हैं- "वर्तमान को सुधारने वाला भविष्य को सुन्दर बना लेता है। आप वर्तमान को सुधार लीजिए, भविष्य अपने आप सुधर जाएगा।" मुनियों के लिए शास्त्र के स्वाध्याय को आप आवश्यक मानते हैं, आपका फरमाना है- "मुनिजनों के लिए स्वाध्याय, शास्त्र-वाचन अथवा आगम-पठन की नियमा है अर्थात् प्रतिदिन नियमपूर्वक स्वाध्याय करना नितान्त आवश्यक है।" किन्तु स्वाध्याय से भी अधिक आवश्यक वैयावृत्त्य है। वैयावृत्त्य की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए वे फरमाते हैं- "आभ्यन्तर तपों में वैयावृत्त्य पहले है और स्वाध्याय को बाद में रखा गया है। प्रत्येक शिष्य का कर्त्तव्य है कि वह प्रातः उठकर गुरुचरणों में विनययुक्त वन्दना करे और पृच्छा करे- भगवन्! कोई सेवा कार्य हो तो फरमावें, अन्यथा स्वाध्याय करूँ।" आप स्वाध्याय और सेवा में भेद करते हुए कहते हैं- "स्वाध्याय से स्व का अध्ययन और स्व के अध्ययन से स्व का कल्याण होता है। दूसरी ओर जिसकी सेवा करते हैं उसको साता एवं सुख उपजता है तथा संयम में स्थिरता आती है। कई बार देखा जाता है कि आवश्यकता के समय सेवा करने वाला नहीं मिलता है तो संयमी आत्मा धर्मपथ से, संयम से, चारित्र से डिग जाता है। वह विचार करने लगता है कि मैं कहाँ फंस गया?"

सेवा के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए आपने फरमाया- "संत-सेवा की बात तो अलग, घर में भी माता-पिता के प्रति अपनत्व नहीं हो तो सेवा करना कठिन है। आत्मीयता जुड़ेगी तो सेवा-भावना का उद्भव होगा, विनय की उत्पत्ति होगी और यही सेवा या विनय भाव व्यक्ति को धर्म से जोड़ेगा।" सेवा करने वाला व्यक्ति गृहस्थ हो या साधु वह अन्य को साता पहुँचाता हुआ अपने कर्मों की निर्जरा भी करता है। उपाध्यायश्री का मानना है कि सेवा से ज्ञान की प्राप्ति का रास्ता आसान होता है। इसलिए सेवा या वैयावृत्त्य को जीवन में प्राथमिकता के साथ स्थान देना चाहिए।

परमश्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज के महाप्रयाण के पश्चात् आप प्रत्येक अष्टमी को अपने व्याख्यान में आचार्य हस्ती के गुणों का स्मरण करते रहे हैं। एक बार आचार्य हस्ती के जन्म-दिवस पर जनवरी 2004 में आपने फरमाया-"गुणगान कर लेना पर्याप्त नहीं है, हम सच्चे शिष्य तभी हैं जबकि भगवन्त ने जो कुछ भी कहा है उसको जीवन में उतारें। आज्ञा पालन की बात जीवन में उतारने के लिए होनी चाहिए। आप गुणगान तो करें पर आज्ञा-आराधन में पीछे रहें तो काम नहीं चलेगा।"

संघहित चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में एक बार आपने फरमाया था- "संघ का हर व्यक्ति अंग है। पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं होती, पर वे मिलकर काम करना चाहें तो कोई भी काम हो सकता है। व्यक्ति चाहे बड़ा हो या छोटा, सभी प्रेमपूर्वक एक-दूसरे का सहयोग करते हुए

एक-दूसरे के दुःख को दुःख समझते हुए चलें। संघ में सहयोग जरूरी है, अकेला अध्यक्ष या मंत्री कुछ नही कर सकता। आप सबका सहयोग होगा तो ही काम हो सकेगा। शरीर के किसी एक अंग में पीड़ा होती है तो उसे सारा शरीर अनुभव करता है, इसी प्रकार संघ में कोई एक व्यक्ति पीड़ित है तो आपको उसकी अनुभूति होनी चाहिए। यह तब होगा जब हर व्यक्ति संघ को अपना समझे।''

सेवा करना गृहस्थ का कर्त्तव्य है। इस संबंध में आपका चिन्तन है- ''गृहस्थ को चाहिए कि वह सेवा कार्य द्वारा सभी को साता पहुँचाए। गृहस्थ यदि माता-पिता, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, भाई-बहन, मित्र को सुसंस्कारित करने का प्रयत्न करे, उनकी सांसारिक रुचि को धर्मरुचि की ओर मोड़ने में प्रयत्नशील बने तो यह शासन की सेवा होगी।'' भौतिक सुख के आकर्षण के प्रति सचेत करते हुए आपश्री फरमाते हैं-''यह भौतिक सुख, शारीरिक सुख एवं तुच्छ सम्पदा से मिलने वाला सुख तो आगे दुःख देने वाला है, इसमें उलझना नहीं है। अगर पूर्व के पुण्य से कुछ मिला है तो उस मिले हुए का सदुपयोग करें, उसमें उलझे नहीं। उसमें आसक्ति नहीं करते हुए जीवन जीने वाला साधक दुःखों को आमंत्रित नहीं करता है।''

कुछ लोगों को व्रत-प्रत्याख्यान बड़े भारी लगते हैं। उपाध्यायप्रवर का चिन्तन है- ''धर्म का कार्य जितना सहज है, उतना सरल कोई और नहीं। परन्तु आपको धर्मकार्य कठिन लग रहा है और पाप कार्य सहज एवं सरल लग रहे हैं। किन्तु यह आपका भ्रम है। जो व्रत अंगीकार कर नैतिकता और प्रामाणिकता को अपने जीवन में स्थान देता है, उसका जीवन निर्भयतापूर्वक अच्छी तरह से चलता है। आज के युग में पूर्व की अपेक्षा व्रतों की अधिक आवश्यकता है। श्रावकों को अपनी प्रतिष्ठा व्रतों के माध्यम से फिर से प्राप्त करना है।''

चौथे आरे की बानगी के उदाहरण रूप में विश्रुत उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी महाराज आज भी कई संत-सतियों के लिए प्रेरणास्तम्भ हैं। आचरण में शिथिलता उन्हें पसन्द नहीं। आडम्बरों और जलसों में उनकी कोई रुचि नहीं। सीधा-सरल जीवन, जिसमें कथनी और करनी का भेद न हो, उसके उदाहरण हैं उपाध्यायप्रवर। गुरुदेव एवं उपकारियों के प्रति कृतज्ञता का भाव तथा छोटे संतों के प्रति वात्सल्य का भाव आपके जीवन में साधना के रस को सिंचित करता रहता है। आप किसी को बलात् कोई नियम नहीं कराते, किन्तु व्यक्ति को यह प्रतीति करा देते हैं कि जीवन को अच्छा बनाना है तो उसे संयमित रखना आवश्यक है। इसीलिए कई भक्त उन्हें भगवान् के रूप में देखते हैं। दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में उपाध्यायप्रवर के जीवन और प्रवचनों से हम कुछ ग्रहण कर अपने जीवन को शांति, सरलता, सहनशीलता, सेवाभाव आदि गुणों से सज्जित कर सकें तो यह हमारे लिए इस अवसर की उपलब्धि कही जा सकती है। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

पाप श्रमण

जे केइ उ पव्वइए, निद्दासीले पगामसो।
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ।।
आयरिय-उवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए।
ते चेव खिंसइ बाले, पाव-समणि त्ति वुच्चइ।।
आयरिय-उवज्झायाणं, सम्मं नो पडितप्पइ।
अप्पडिपूयए थद्धे, पावसमणि त्ति वुच्चइ।।
सम्मद्दमाणे पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य।
असंजए संजयमन्नमाणे, पावसमणि त्ति वुच्चइ।।
संथारं फलगं पीढं निसेज्जं पायकंबलं।
अप्पमज्जिय आरुहइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ।

अर्थ-

जो कोई प्रव्रजित होकर, अत्यधिक निद्राशील रहता है, खा-पीकर सुख से सो जाता है, वह 'पापश्रमण' कहलाता है।

जिन आचार्यों और उपाध्यायों से श्रुत (सिद्धान्तज्ञान) और विनय (आचार) ग्रहण किया (सीखा) है, उन्हीं की जो निन्दा करता है वह बाल विवेक-विकल, 'पापश्रमण' कहलाता है।

जो आचार्य और उपाध्यायों की सम्यक् प्रकार से सार संभाल नहीं करता, वह अप्रतिपूजक (बड़ों का सम्मान न करने वाला), अभिमानी (साधु), 'पापश्रमण' कहलाता है।

द्वीन्द्रिय आदि प्राणी, बीज और हरित वनस्पति (हरियाली) का सम्मर्दन करने वाला तथा असंयमी होते हुए भी स्वयं को संयमी मानने वाला, 'पापश्रमण' कहलाता है।

जो संस्तारक, बिछौना, फलक-पाट (पट्टा) पीठ आसन निषद्या स्वाध्याय-भूमि, पैर पोंछने के कम्बल का टुकड़ा (पाद पोंछन) का, प्रमार्जन किए (पूँजे) बिना ही, उन पर बैठता है, वह 'पापश्रमण' कहलाता है।

-उत्तराध्ययन सूत्र, सतरहवाँ अध्ययन, पाप श्रमणीय, गाथा-3-7

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

स्वाध्यायी

- देश और देशवासियों की रक्षा के लिए सेना की आवश्यकता होती है। यह शस्त्रधारी सेना बाह्य शत्रुओं से ही रक्षा कर सकती है, आन्तरिक शत्रुओं से नहीं। आन्तरिक शत्रु हैं- अनाचार, अनैतिकता, पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष, कलह आदि। इन आन्तरिक शत्रुओं से रक्षा के लिए, इन्हें दूर करने के लिए आवश्यकता है-शास्त्रधारी (श्रुतज्ञानी) सेना की।
- शास्त्रधारी सैनिक सत् शास्त्रों का अध्ययन करके, ज्ञान और चारित्र पक्ष को हृदय में धारण करके, स्वयं अपने जीवन की अनैतिकताओं को निकाल बाहर फेंकते हैं, साथ ही आन्तरिक शत्रुओं से मुक्त होने में अन्य लोगों के भी सहायक बनते हैं। इसलिए आज संसार को अनाचार, अनैतिकता, ईर्ष्या-द्वेष, कलह आदि की समाप्ति के लिए शस्त्रधारी नहीं, शास्त्रधारी सैनिकों की आवश्यकता है।
- जो स्वाध्यायी पठन-पाठन में प्रवेश पा चुके हैं, वे यह न सोचें कि वे पूरे स्वाध्यायी बन गये हैं। जिस तरह पहली कक्षा में पढ़ने वाला भी विद्यार्थी कहलाता है और जब तक स्नातक नहीं हो जाता तब तक भी विद्यार्थी ही कहलाता है। स्नातक बन जाने के पश्चात् ही वह कहता है कि उसने पढ़ाई पूरी कर ली है। उसी प्रकार आप भी स्वाध्याय के निरन्तर अभ्यास द्वारा अज्ञान को मिटाते हुए निरन्तर आगे बढ़ते रहेंगे तभी पूरे स्वाध्यायी कहला सकते हैं। इसी लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ना है।
- यह प्रमोद का विषय है कि हमारे अनेक बंधु स्वाध्याय में, स्वाध्याय-शिक्षण ग्रहण करने में प्रवृत्त हो गये हैं। जो नहीं हुए हैं जिनके मन में जिनशासन के प्रति प्रेम है, वीतरागवाणी के प्रति श्रद्धासिक्त स्नेह है, वे स्वाध्याय में प्रवृत्त हों।
- कभी-कभी ऐसा अनुभव होता है कि स्थानक में झाडू स्वयं स्वाध्यायी भाइयों को लगाना पड़ता है और घर-घर पर जाकर भाइयों को बुलाना पड़ता है। यदि स्वाध्यायी भाई घबरा जायेंगे तो काम नहीं चलेगा, कहीं भोजन पकाने वाला नहीं मिलता, सार-संभाल करने वाला नहीं मिलता तो यह नहीं सोचें कि मैं यहाँ पर क्या रहूँ, ऐसा सोच लिया तो सेवा नहीं होगी। सेवा नहीं होगी तो सच्चे स्वाध्यायियों के नम्बर में पास नहीं होंगे।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (3)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

तप (2)

- अगर आप अपनी कीमत बढ़ाना चाहें तो अल्प बोलें। जितनी जरूरत है, उतना बोलें।
- बीस अक्षर के बजाय पाँच से काम चलता हो तो आप पाँच ही बोलें।
- इन्द्रियों को नियंत्रित करना भी तप है।
- भूल को स्वीकार करना और शुद्धीकरण करना प्रायश्चित्त तप है।
- विनय, वैयावृत्त्य, स्वाध्याय और ध्यान भी तप है।
- ममता घटेगी तो अन्त समय में हाय-हाय नहीं करना पड़ेगा।
- अनन्त कर्मों के संग्रह को तप के माध्यम से खपाया जा सकता है।
- आँवले के साथ यदि इमली का सेवन किया जा रहा है तो विकार घटने के बजाय बढ़ेगा।
- जैसे ऊष्मा के सहारे शरीर चलता है, वैसे ही तप के सहारे धर्म आगे बढ़ता है।
- तप के जितने शूरमा जैन धर्म में मिलेंगे, शायद अन्यान्य धर्मों में नहीं मिलेंगे।
- सर्दी-गर्मी में बच्चे जितने तपेंगे, उतने सशक्त बनेंगे।
- आप उपवास-बेले-तेले नहीं कर सको तो कम से कम विकार बढ़ाने वाले जो व्यसन हैं, उन्हें छोड़िये, यह भी तप है।
- मूल है श्रद्धा। श्रद्धा जग जायेगी तो तप भारी नहीं लगेगा।
- आपके पास पहनने के लिए कपड़ों की पेटियाँ भरी हैं, आप इस वर्ष के लिए कपड़ा नहीं लेंगे तो वह भी तप है।
- गृहस्थ रोज तप कर सकता है। वह तप चाहे फिर अनशन हो, ऊणोदरी हो या वृत्तिसंक्षेप हो।
- धर्म की दृष्टि से, कर्म-निर्जरा की दृष्टि से, स्वास्थ्य की दृष्टि से तप उपयोगी है।
- योग पाना उतना कठिन नहीं, जितना पाये हुए योग का सही उपयोग करना।
- मानव यदि ज्ञान-दर्शन-चारित्र के गुण धारण करें तो वह अनमोल हो जायेगा।
- चारित्रवान को देखने मात्र से शान्ति मिलती है।
- गृहस्थ का प्रमुख कर्तव्य है- दान।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-1 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

भूलसुधार के लिए कोई समय बुरा नहीं

▪तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा रामनवमी, 1 अप्रेल, 2012 को महावीर कॉलोनी, अजेमर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। -**सम्पादक**

अनादिकालीन मूढ़ता को समाप्त कर, अविद्या का अंत कर सम्पूर्ण विद्या को प्रकट करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और उसी अविद्या का अन्त करने के लिए निरन्तर प्रेरणा प्रदान करने वाले, स्वयं उसी विद्या के प्रकाश में चरण बढ़ाते हुए मुमुक्षुओं को आगे बढ़ाने वाले आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्......।

बड़ा विचित्र संयोग है, बचपन से एक अप्रेल को मूढ़ दिवस के रूप में सुनते आए हैं। सरकार का आर्थिक वर्ष तो पहले से एक अप्रेल था, पिछले लगभग पच्चीस साल से सरकार द्वारा निर्देशित होने के कारण आप-सब आज के दिन को आर्थिक वर्ष के रूप में लेते हैं।

चैत्र शुक्ला नवमी-राम नवमी है, आज, वार रविवार और प्रातः 9 बजकर 12 मिनिट से पुष्य नक्षत्र। इस त्यौहार से जैन संस्कृति के आठवें बलदेव वासुदेव लक्ष्मण के अग्रज मर्यादा पुरुषोत्तम राम का नाम जुड़ गया और साथ में रविवार का दिन पुष्य नक्षत्र की महिमा बता रहा है। जीव जब से जगे तभी से अच्छा है। चर्पटमंजरी में शंकराचार्य ने लिखा- **"मूढ़! जहीहि धनागमतृष्णां, कुरु सद्बुद्धिं मनसि वितृष्णाम्।"** मूढ़! धन के आगमन की तृष्णा को छोड़ो, सद्बुद्धि लाओ एवं मन में वितृष्णा को उत्पन्न करो। 31 मार्च की बैलेंस-सीट बताती है इस साल इतना कर लिया, बस रात दिन इसी जड़ के पीछे भागते रहना इसी को कहते हैं मूढ़ता। इसी का नाम मूर्खता है।

शरीर को चलाने के लिए पुद्गल की आवश्यकता होती है, पर आत्मशांति के लिए पुद्गल की ममता छोड़ना अनिवार्य होता है। पुद्गल बाद में छूटता है, पुद्गल की ममता पहले छूटती है। आचारांग सूत्र (2/6) में कहा गया है- **"जे ममाइयमइं जहाइ से चयइ ममाइयं, से हु दिट्ठपहे मुणी जस्स णत्थि ममाइयं"** जो ममत्व बुद्धि छोड़ता है वही ममत्व का त्यागी है। पहले ममत्व की बुद्धि छूटेगी। इस शरीर से मेरापन छूटे बिना कोई

मुक्त नहीं हो सकता। पूज्य गुरुदेव ने फरमाया-

इस जग की ममता ने मुझको डाला गर्भावास।
अस्थि मांसमय अशुचि देह में मेरा हुआ निवास।।
मेरे अन्तर भया प्रकाश।।

सारे बन्धनों का मूल क्या? बन्धनों का मूल है मिले हुए को अपना मानना। मिले हुए से मैं का मूल्यांकन करना। हम भगवान महावीर स्वामी के भव को देखने का प्रयास कर रहे हैं, नयसार के पहले वह जीव भी इसी मूढ़ दृष्टि में जी रहा था। मैं और मेरे में जीवन-बुद्धि रखकर आगे बढ़ रहा था। एक मौका मिला। भाव मन के लिये अथवा चिन्तन के लिए द्रव्य मन की आवश्यकता होती है। द्रव्य मन की प्राप्ति भी अनन्त पुण्यवानी से होती है।

नौ प्रकार का पुण्य है। पुण्य का ज्यादा सम्बन्ध भावना से जुड़ता है। पुण्य के सम्बन्ध को लेकर कई लोगों के माथे में कई प्रश्न घूमते रहते हैं। चित्त बीच की कड़ी है। चित्त अलग है, मन अलग है। वन्दनीय अलग हैं, उपकारी अलग। उपकार किसी का भी हो सकता है। वंदनीय पंच परमेष्ठी हैं। उपकार तो चोर का भी हो सकता है, पेड़ का भी हो सकता है, आप गृहस्थों का हो सकता है। मैं आपको वन्दना तो नहीं कर सकता, पर आपके उपकारों से मैं ज्ञान-ध्यान सीखकर आगे बढ़ सकता हूँ। चित्त क्या? चित्त को समझने के लिए मैं दादा भगवान की एक पुस्तक का आभार मानता हूँ। दादा भगवान ने अन्तःकरण के स्वरूप में मन, बुद्धि और चित्त सबकी व्याख्याएँ दे रखी हैं।

चित्त क्या? चित्त ज्ञान और दर्शन दोनों के योग से मिलकर बना है। अशुद्ध चित्त, असद् उपयोग। शुद्ध चित्त, शुद्ध उपयोग। एक समय में एक उपयोग ही रहता है। पर दोनों का सम्मिलित प्रभाव चित्त के रूप में प्रतिबिम्बित होता रहता है। चित्त खराब और अच्छा दोनों दशाओं में आया हुआ है। अभिधान राजेन्द्रकोश में स्पष्ट व्याख्याएँ दी गई हैं। एकेन्द्रिय में मन नहीं है, चित्त है। भावों का मुख्य कर्त्ता चित्त होता है। मन उसमें सहकारी बनता है। मन पौद्गलिक होता है। मनोवर्गणा लोक में व्याप्त है। मन बनता है, बिखरता है। दशाश्रुत स्कन्ध के अनुसार चित्त-समाधि केवल मरण तक रहती है। यह शास्त्रीय आधार है। चित्त अलग है, मन अलग है। यह भीतर जाने पर अनुभूति में आयेगा। आप 'चित्तशुद्धि' किताब पढ़ सकते हैं। उत्तराध्ययन सूत्र के तीसरे अध्ययन की बारहवीं गाथा में कहा गया- **"सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।"** ऋजुभूत की शुद्धि होती है। शुद्ध आत्मा में धर्म ठहरता है। शुद्ध चित्त में धर्म ठहर सकता है। चित्त शुद्धि उसकी होगी जो सरल है। अब, सरलता कैसे आती है यह प्रश्न है। उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन की 5वीं पृच्छा में

इसका जबाब दिया- **आलोयणाए उज्जुभावं जणयइ।**

अपने दोषों को देखने से सरलता आती है। दूसरों के दोष देखने से वक्रता आती है। हम चौबीस घंटे में कब-कब कहाँ-कहाँ दोष लगे उन्हें देखें तो हम में सरलता आती जायेगी। भूल किसी से भी हो सकती है। **भूल करने के लिए कोई समय अच्छा नहीं और की हुई भूल को सुधारने के लिए कोई समय बुरा नहीं है।**

पहले एक दृष्टान्त पढ़ा था। अनादिकाल की भूल को सुधारने का मौका भगवान महावीर के जीव को नयसार के भव में मिला। गुणों का अभिमान दोषों की भूमिका है। जहाँ भी गुण का अभिमान आया वहाँ दोष लगेगा ही। अपने नाम का पट्टा लिखा देखा तो मन राजी होगा या नहीं? आप यहाँ जिनवाणी श्रवण करने के लिए आए हैं। किसी भक्त ने कहा-

"महाराज! कल का आपका व्याख्यान बहुत अच्छा था, मुझे मेरे प्रश्न का समाधान मिल गया। बस सुना और मन में राजीपन हो गया, तो हो गया ना गुणों का अभिमान।"

चौथे गुणस्थान के ऊपर वाले गुणस्थानों में अनादेय नाम कर्म का उदय नहीं होता। आदर की कामना तभी तक रहती है जब तक व्यक्ति अपनी दृष्टि में आदर के योग्य नहीं बन जाता। मैं दूसरों के दोष देखने की बात सोचता हूँ तो मैं हिंसा कर रहा हूँ। कई हैं जो महाराज के पास आते हैं, कहते हैं वहाँ ऐसा हो रहा है, यहाँ वैसा हो रहा है, यह आलोचना भी हिंसा है। मेरा जीवन भीतर की तैयारी में लगा हुआ है तो मैं जागरूक बना रहूँगा। जागृति नहीं होने पर जीव दूसरों पर अधिकार जमायेगा। तब तक वह हिंसक ही रहेगा। दूसरों पर अधिकार चलाना हिंसा है। यह बच्चा मेरा कहना नहीं मानता ऐसी भावना मन में आना भी हिंसा है। हम अपने-आपको देखें। स्वयं अपने को टटोलें। अपने भीतर में देखें। कल मंत्री जी ने किसी के मासखमण की तपश्चर्या पर पन्द्रह मिनट बहुत अच्छा बोला, आज मेरे मासखमण पर उन्हें दो मिनट बोलने का समय नहीं। मासखमण इसीलिये किया? नाम, नाम, नाम।

आज समाज में न जाने कितने-कितने टकराव हैं? कौनसा गाँव है जहाँ समाज की मीटिंग शांति से हो जाती है? जैन समाज की मीटिंग में अशांति होना कितनी शर्म की बात है। मैंने सुना था एक जगह थोड़ी लड़ाई हो गई। बात-बात में लड़ाई आगे चलकर हाथापाई में और फिर लाठी-भाटे के जंग में बदल गई, शहर में कर्फ्यू लग गया। लड़ाई हिन्दू-मुस्लिम की थी। देखते ही देखते चाकू-छुरे चल गये। वहाँ एक मदारी था जो बंदरिये

का खेल दिखाकर पेट भरता था। लोगों ने मदारी को पकड़ लिया। पूछा-बता, तू हिन्दू है या मुसलमान?

वह बोला- मैं न तो हिन्दू हूँ, न मुसलमान, मैं तो इन्सान हूँ। मैं हिन्दूओं के बच्चों को और मुसलमानों के बच्चों को बंदरिया का नाच दिखाता हूँ। मुझे तो हिन्दू भी पैसे देते हैं और मुस्लिम भी। मेरा गुजारा तो दोनों से चलता है।

भीड़, भीड़ ही होती है, किसी ने कहा- बता तूं है कौन? लोगों को जवाब नहीं मिला तो उसे मार दिया गया। बंदरिया जंगल भाग गई। जंगल में बन्दरों की मीटिंग हुई। उन्होंने अपनी बात कही। बन्दर भी अपनी बात कह सकते हैं। बन्दर तो पंचेन्द्रिय प्राणी हैं, अपने यहाँ तो एकेन्द्रिय से भी कहला दिया गया है? आप बोलते हैं ना-

पान खिरन्तो इम कहे सुन तरुवर वनराय।
अबके बिछुडे कब मिले दूर पड़ेंगे जाय।।
तब तरुवर उत्तर दियो, सुनो! पुत्र इक बात।
इण घर ऐसी रीत है, इक आवत इक जात।

न पत्ता बोलता है, न तरुवर। यह उपमा है। जब अनुयोग द्वार सूत्र में आए पान और तरुवर बोल सकते हैं तो बन्दर तो बोलते ही हैं।

बन्दरों ने कहा- हम राजघाट पर जायेंगे, वहाँ जाकर तोड़फोड़ करेंगे, उत्पात मचायेंगे और राजघाट पर महात्मा गांधी के तीन बन्दर हैं, उनको वहाँ से लेकर आयेंगे।

गाँधी तेरे तीन बन्दर, किस्मत के सिकन्दर।

बन्दरों की मीटिंग में कोई कुछ, कोई कुछ कहने लगा। एक बन्दर बोला- हम डारविन के घर पर जाकर धरना देंगे। डारविन ने कैसे कहा कि मानव बन्दर का विकसित रूप है?

एक अनुभवी ने कहा- मानव अपना धर्म छोड़ सकता है, हम अपना धर्म नहीं छोड़ सकते। इसलिये हम डारविन के पास जायेंगे और शांति से कहेंगे कि वह सिद्धान्त को सही रूप से प्रतिपादित करे कि मानव वानर का विकसित नहीं, विकृत रूप है।

आज हमारी क्या स्थिति हो रही है? चिन्तन करें। भूल करने के लिए कोई समय अच्छा नहीं, और भूल सुधारने के लिए कोई समय बुरा नहीं। मैं अपने-आपको देखूँ, मैं अपने आपको समझने का प्रयास करूँ। दूसरों को नहीं, देखना ही है तो अपने-आपको। जो स्थानक में प्रवेश करते ही निस्सही निस्सही कहता है, यहाँ आने पर जूते-चप्पल यतना से खोलता है, वह संवर करता है। धर्मस्थान की मर्यादा कब रहेगी?

अजमेर के एक डॉक्टर मित्तल साहब हैं। मित्तल साहब को आपने देखा होगा।

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज के संथारे के पहले, इसी अप्रेल महीने में 1991 की बात है, डॉ. मित्तल साहब को निमाज में देखने का काम पड़ा। गजब की छाप है उस डॉक्टर की। वे इतना धीमे बोलते हैं कि बात एक कान से दूसरे कान के सिवाय कोई नहीं सुन सकता। वे डॉक्टर साहब बोले- "ये भगवान हैं। अब इनकी जो इच्छा है, करने दिया जाय।"

आज हमारे धर्मस्थानों में कोई तेज आवाज में भजन बोल रहा है तो वह स्वाध्यायियों के लिए अन्तराय का भागी तो नहीं बन रहा? हमारा धर्म उधार का सौदा नहीं है। पुण्यबंध बाद में उदय होता है, धर्म से शांति तत्काल मिलती है।

पुण्य भी धर्म का सहयोगी तत्त्व है, पर संवर-निर्जरा तत्काल होती है। पानी तपती भट्टी पर है तब तक उकलता है और ज्यों ही भट्टी से नीचे रख दिया, तो उबलते पानी में ठण्डक शुरु हो जाती है। भले ही वह तत्काल न भी दिखे पर भट्टी से पानी को उतार दिया तो ठण्डक शुरु हो जायेगी। यहाँ धर्मस्थान में संवर-निर्जरा होगी तो तत्काल फायदा होगा। सम्यग्दर्शन का गुण तो बाद में प्रकट होगा, पर पहले कर्म के तीव्र अनुभाग को मन्द करेगा ही।

आप जानते हैं, सूर्योदय होता है उसके पहले लालिमा हो जाती है। अन्तर्मुहूर्त पहले से जीव के परिणाम विशुद्ध से विशुद्ध होते जाते हैं। तीन लेश्याएँ रहती हैं। कौनसी? तेजो, पद्म और शुक्ल। सातवीं नारकी के नेरिये के परिणामों में विशुद्धि! सही दृष्टि करने के लिए जीव सबसे पहले काया का पुण्य बढ़ाता चलता है। भावों से विशेष पुण्य बढ़ता है। भगवती सूत्र शतक 14 उद्देशक 8 में कहा- पेड़ का पत्ता धूप के ताप को सहन करता है तो अकाम निर्जरा से, और परिणामों से वह जीव भी वन्दनीय-पूजनीय बन सकता है। एकेन्द्रिय पर्याय से जीव मनुष्य एवं सिद्ध गति प्राप्त कर सकता है। हम किसी भी लिंग की चर्चा करें, हर आत्मा साधना करके मुक्ति पा सकती है। आज जो भी सिद्ध अवस्था में हैं उनमें कोई भेद नहीं है।

आज फर्स्ट अप्रेल है, आज का दिन मूढ़ता के लिए जाना जाता है। आज वित्तीय वर्ष यानी हिसाब-किताब का दिन है, वह भी एक तरह की मूढ़ता ही है। कहा भी है-

ममता से संताप उठाया, आज हुआ विश्वास।
भेदज्ञान की पैनीधार से, काट दिया भव पाश।।

आज का दिन बहुत तरह से प्रेरणा दे रहा है। आज रवि पुष्य है। रवि पुष्य नक्षत्र में आचार्य भगवन्त ने अपना आयुष्य पूर्ण किया। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज का स्वर्ग-गमन रवि पुष्य नक्षत्र में हुआ। महासती श्री सूरजकंवर जी महाराज ने

आपके शहर अजमेर में ग्यारह दिवसीय चौविहार संथारे के साथ नश्वर देह का जिस दिन त्याग किया उस दिन भी पुष्य नक्षत्र था। अरणक का जहाज विजय मुहूर्त्त पुष्य नक्षत्र में गया। विजय मुहूर्त्त और पुष्य नक्षत्र आते ही कहा- जहाज रवाना करो। एक-एक नक्षत्र का महत्त्व होता है। मूढ़ता को समाप्त करने का आज स्वर्णिम अवसर है। आज मर्यादा पुरुषोत्तम राम की जयन्ती है। आचार्य भगवन्त चार-चार मास जैन रामायण बांचते हैं, फिर भी वह पूरी नहीं होती। अतीत काल की भूलों को हम गहराई से देखने का प्रयास करें। भूलों को देखकर आलोचना करने से सरलता आती है और सरल आत्मा ही शुद्ध होती है। आप-हम सही दिशा में आगे बढ़ें, वही हमारे लिए हितकर होगा।

ज्ञानी-ध्यानी-त्यागी-तपसी...।।

श्री धर्मचन्द जैन

(तर्ज- दुनिया में देव अनेकों हैं......)

ज्ञानी-ध्यानी-त्यागी-तपसी, मेरे मान गुरु का क्या कहना।।
उनकी शान्ति का क्या कहना, उनके आनन्द का क्या कहना।
ज्ञानी-ध्यानी-त्यागी-तपसी.....।

जो शान्त-दान्त-गंभीरा हैं, संयम-पालन में शूरा हैं।
जो ज्ञान-क्रिया में पूरा हैं, मेरे मान गुरु का क्या कहना।।
ज्ञानी-ध्यानी-त्यागी-तपसी.....।।1।।

जो उपाध्याय-पद-धारक हैं, चारित्र-गुणों के पालक हैं।
जो समता-गुण-आराधक हैं, मेरे मान गुरु का क्या कहना।।
ज्ञानी-ध्यानी-त्यागी-तपसी.....।।2।।

छोटा माता के नन्दन हैं, सेठिया-कुल के चन्दन हैं।
जोधाणा में दीक्षा पाये हैं, मेरे मान गुरु का क्या कहना।।
ज्ञानी-ध्यानी-त्यागी-तपसी.....।।3।।

माघ बदि चौथ को जन्में हैं, वैराग्य-भाव मन धरते हैं।
अठहत्तर वर्ष में आये हैं, मेरे मान गुरु का क्या कहना।।
ज्ञानी-ध्यानी-त्यागी-तपसी.....।।4।।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. : जीवन-रेखा

पिताश्री- वीर पिता श्री अचलचन्द जी नागसेठिया, जोधपुर

माताश्री- वीरमाता श्रीमती छोटाबाईजी

जन्मतिथि- विक्रम संवत् 1991 माघ कृष्णा चतुर्थी

दीक्षा- विक्रम संवत् 2020 वैशाख शुक्ला त्रयोदशी, सरदार स्कूल, जोधपुर

दीक्षा प्रदाता- जैनाचार्य पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.

नेश्राय गुरु- पं.रत्न श्री लक्ष्मीचन्द जी म.सा. (बड़े)

उपाध्याय पद- विक्रम संवत् 2048 प्रथम वैशाख शुक्ला 9, 22 अप्रेल, 1991, निमाज

अध्ययन- आगम-शास्त्रों का तलस्पर्शी अध्ययन

विचरण क्षेत्र- राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा।

विशेषताएँ- आत्मार्थी, शान्त-दान्त, सरल स्वभावी, महान् सेवामूर्ति, वात्सल्यनिधि, प्रभावी प्रवचनकार, दृढ़ संयमी, निरतिचार साधक, निरभिमानी, प्रसन्न मुखमुद्रा।

चातुर्मास- पीपाड़शहर (विक्रम संवत् 2020), मेड़ता शहर (2021), कोसाना (2022), अहमदाबाद (2023), जयपुर (2024), भोपालगढ़ (2025), सरदारपुरा-जोधपुर (2026), थांवला (2027), जोधपुर (2028), पाली (2029), जयपुर (2030), विजयनगर (2031), हरसोलाव (2032), गोटन (2033), घोड़ों का चौक, जोधपुर (2034-2039), जयपुर (2040), अहमदाबाद (2041), पाली (2042), विजयनगर (2043), जयपुर (2044), चांदनी चौक-दिल्ली (2045), ब्यावर (2046), पाली (2047), जोधपुर (2048), भीलवाड़ा (2049), कोटा (2050), कंवलियास (2051), पाली (2052), कोसाना (2053), जयपुर (2054), मदनगंज (2055), सवाईमाधोपुर (2056), जलगांव (2057), धुले (2058), होलनांथा (2059), जोधपुर (2060), जयपुर (2061), बालोतरा (2062), पीपाड़ शहर (2063), भोपालगढ़ (2064), सिवाना (2065), ब्यावर (2066), गोटन (2067), नागौर (2068)।

50 वाँ दीक्षा-दिवस

ज्ञान-क्रिया के अनुपम योगी उपाध्यायप्रवर*

श्री पी. शिखरमल सुराणा

(1) श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़ में शिक्षण कार्य (परोपकारमय न्यायोपार्जित जीविका) से आपका वैराग्य पुष्ट हुआ तथा संयम लेने के निर्णय में सहायक बना।

(2) आपकी दीक्षा के दिन आपके पिता श्रद्धानिष्ठ समर्पित सुश्रावक श्री अचलचन्दजी सेठिया ने आजीवन चारों खन्द (सचित्त जल सेवन का त्याग, रात्रि चौविहार त्याग, ब्रह्मचर्य पालन तथा हरी वनस्पति का त्याग) का नियम ग्रहण कर लिया। धन्य है ऐसे वीरपिता को।

(3) पंडितरत्न बड़े लक्ष्मीचन्दजी म. सा. (दो वर्ष जोधपुर में स्थिरवास के दौरान) एवं बाबाजी श्री जयन्तमुनिजी म. सा. की जिस उत्साह, समर्पण व श्रद्धाभाव से आपने सेवा की, वह रत्नसंघ के स्वर्णिम इतिहास का गौरवशाली अध्याय है। श्री जयन्तमुनिजी म. सा. को खड़े-खड़े भी जब अशुचि आ जाती तो उसे अग्लानभाव से आपने हाथों से उठाकर साफ किया।

(4) हस्ती गुरु ने आपकी योग्यता व प्रतिभा देखकर अहमदाबाद और दिल्ली जैसे बृहत् क्षेत्रों में स्वतंत्र चातुर्मास प्रदान किये, जिनमें ज्ञान-क्रिया का सुन्दर सुमेल देखकर वहाँ के श्रावकगण अत्यन्त प्रभावित हुए। दिल्ली के श्रावक कहने लगे - जब मानचन्द्रजी म. सा. ज्ञान-क्रिया में इतने ऊँचे हैं तो इनके गुरुदेव कैसे होंगे? दिल्ली का शिष्टमण्डल सवाईमाधोपुर में पूज्य गुरुदेव के दर्शन कर इतना प्रमुदित हुआ, मानो भगवान के दर्शन किये हों।

(5) संथारा लेने से पहले आचार्य भगवंत श्री हस्तीमलजी म. सा. का निमाज की ओर विहार हो रहा था। श्रद्धेय श्री मानमुनिजी विहार क्रम में पीछे चल रहे थे। गुरुदेव ने श्रावकों को उन्हें सेवा में पधारने का संकेत करते हुए फरमाया - "मेरी संथारा करने की भावना है। मानमुनिजी म. सा. से पूछ लें एवं चतुर्विध संघ की अनुमति ले लें।" 12 अप्रेल 1991 को श्रद्धेय श्री मानमुनिजी म. सा. को अपने मुखारविन्द से महान गुरुदेव को ऐतिहासिक संथारा के प्रत्याख्यान करवाने का परम सौभाग्य मिला।

*उपाध्यायप्रवर को दीक्षा अर्द्धशती वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 4 मई, 2012 के अवसर पर प्रकाशित

(6) आपका जीवन और व्यवहार आपके नाम (मान) से विपरीत भी है और अनुरूप भी। मान आपको छू भी नहीं गया है। आपका जीवन साधुता का प्रकाशमय मानस्तंभ है। आपसे जिनशासन, रत्नसंघ और हमारा मान बढ़ा है, वह सदैव बढ़ता रहे।

(7) आपके साधनामय चुम्बकीय व्यक्तित्व में भक्तगण 'चौथे आरे की बानगी' का अनुभव करते हैं।

(8) रत्नसंघ की यशस्विनी परम्परा के आप प्रथम उपाध्याय हैं।

-अध्यक्ष : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

मुनिवर मान महान् हैं

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

(तर्ज- जिया बेकरार है........।)

मुनिवर मान महान् हैं, जिनशासन की शान हैं।
त्यागी और वैरागी उत्तम, साधु की पहचान है।।
रत्नवंश के अनुपम मोती, उपाध्याय पद पाया हो।
नाम मान पर ज्ञान क्रिया का, मान तनिक नहीं आया हो।।
जीवन विनय प्रधान है, गुण रत्नों की खान है,
त्यागी और वैरागी........।। 1।।

आत्मार्थी शान्त मूर्ति, प्रवचन सरल रसीले हो।
चौथा आरा याद करे जो वाणी अमृत पी ले हो।।
गहरा आगम ज्ञान है, साधक प्रज्ञावान हैं,
त्यागी और वैरागी........।। 2।।

तप संयम का तेज झलकता, कर में रहती माला हो।
तारों में चंदा-सा देखो, जीवन बड़ा निराला हो।।
चेहरे पर मुस्कान है, शान्त सौम्य गुणवान है,
त्यागी और वैरागी........।। 3।।

संतों की सेवा में निशदिन, आप रहे हैं आगे हो।
शिथिलाचार प्रपंचों से ये, दूर हमेशा भागे हो।।
कथनी-करनी समान है, करता 'गौतम' गान है,
त्यागी और वैरागी........।। 4।।

प्रासङ्गिक

सेवा और साधना के पर्याय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.*

श्री नौरतनमल मेहता

जन्म

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का जन्म मरुधरा की राजधानी सूर्यनगरी-जोधपुर में वि.सं. 1991 की माघ कृष्णा चतुर्थी को हुआ। भारतीय परम्परा में माघ मास बहुत शुभ माना जाता है। भगवान ऋषभदेव का मोक्ष कल्याणक, भगवान अजितनाथ का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक, भगवान अभिनन्दन का दीक्षा कल्याणक, भगवान पद्मप्रभु का च्यवन कल्याणक, भगवान शीतलनाथ का जन्म व दीक्षा कल्याणक, भगवान श्रेयांसनाथ एवं भगवान वासुपूज्य का केवल कल्याणक, भगवान विमलनाथ का जन्म व दीक्षा कल्याणक, भगवान धर्मनाथजी का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक माघ मास में आते हैं। आचार्यप्रवर पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. का जन्म एवं आचार्य पद ग्रहण दिवस, माघ मास में आता है, वहीं जीवन-निर्माण के शिल्पकार आचार्यप्रवर पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का दीक्षा-दिवस भी माघ मास में आता है। प्रतिपल स्मरणीय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का दीक्षा-दिवस माघ शुक्ला द्वितीया को आता है। रत्नसंघ के प्रथम उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. जिन्हें हम सेवा और साधना के पर्याय के रूप में देखते हैं, उनका जन्म-दिवस भी माघ मास में आता है।

पारिवारिक-परिचय

उपाध्यायप्रवर का जन्म, सूर्यनगरी के सुज्ञ श्रावकरत्न अनन्य गुरुभक्त, दृढ़धर्मी वीरपिता श्री अचलचन्दजी नागसेठिया के घर-आँगन में उनकी धर्मपरायणा-धर्मपत्नी वीरमाता श्रीमती छोटाबाईजी की रत्नकुक्षि से हुआ। वीरपिता अचलचन्दजी सेठिया के सात पुत्ररत्न और तीन सुपुत्रियाँ हुईं। श्री भोपालचन्दजी सेठिया अग्रज हैं तो श्री प्रेमचन्दजी, श्री चंचलचन्दजी, श्री धनपतचन्दजी, श्री राजेन्द्रचन्दजी, श्री महेन्द्रचन्दजी उपाध्यायप्रवर के सांसारिक अनुज हैं। श्रीमती पुष्पाजी चौपड़ा, श्रीमती मानकंवरजी नाहटा व श्रीमती किरणदेवीजी कोठारी उपाध्यायप्रवर की सांसारिक बहिनें हैं। सात भाइयों एवं तीन बहिनों के भरे-पूरे परिवार का परस्पर का प्रेम आज भी प्रेरणादायी है। सर्व श्री भोपालचन्दजी, श्री

*वैशाख शुक्ला 13, दिनाँक 4 मई, 2012 को दीक्षा अर्द्धशती वर्ष प्रारम्भ होने के उपलक्ष्य में प्रकाशित

चंचलचन्दजी सेठिया सरकारी सेवा में रहे और उन्होंने सेवावधि में अच्छे कीर्तिमान कायम किए। सर्व श्री प्रेमचन्दजी, श्री धनपतचन्दजी और श्री महेन्द्रचन्दजी मेडिकल व्यवसाय में हैं और श्रमणोचित औषधोपचार में प्रत्येक परम्परा के साधु-साध्वियों की सेवा-भक्ति में सक्रिय हैं। श्री राजेन्द्रचन्दजी भी व्यवसायी हैं। तीनों सुपुत्रियों ने पारिवारिक संस्कारों के कारण चौपड़ा, नाहटा और कोठारी परिवार में धर्म के प्रति परिवारजनों में प्रगाढ़ता बढ़ाने में सक्रियता-सजगता रखी इसीलिए आज चौपड़ा, नाहटा, और कोठारी परिवारों में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना एवं व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति अच्छी भावना है।

व्यावहारिक शिक्षण एवं रोजगार

उपाध्यायप्रवर का व्यावहारिक शिक्षण जोधपुर में हुआ। जोधपुर की प्रतिष्ठित शिक्षण संस्था सरदार स्कूल से आपने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उस समय सरकारी सेवा के लिए मैट्रिक उत्तीर्ण व्यक्ति को नौकरी मिलने में कोई दिक्कत नहीं थी, फिर आपके अग्रज जो राजकीय सेवा में थे उन्होंने कहा भी कि मैं आर्डर लाकर देता हूँ, लेकिन उपाध्यायप्रवर राजकीय सेवा में जाने के लिए इच्छुक नहीं थे। उनकी धारणा थी कि सरकारी नौकरी में झूठ-फरेब का सहारा नई बात नहीं है। अत: सरकारी नौकरी के बजाय निजी सेवा को चुना इसके पीछे आत्मनिर्भरता और आत्मोन्नति का लक्ष्य कारण रहा। उन्होंने भोपालगढ़ में कुछ समय अध्यापक के रूप में कार्य किया।

बचपन से धर्म-साधना और उसका प्रभाव

होनहार बालक पुण्यवानी की पूँजी लेकर पैदा होता है। उपाध्यायप्रवर पुण्यवानी के प्रताप से स्वस्थ तन, स्वस्थ मन लेकर पैदा हुए। पारिवारिक संस्कारों से संस्कारित जीवन में सरलता, सादगी, सहजता, सजगता, सहिष्णुता आदि गुण बचपन में विकसित हो गये थे। संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सेवा-भक्ति में उन्हें बचपन से अच्छा रस था। वे अपने अग्रज के साथ व्याख्यान-वाणी में तो जाते ही, सामायिक-प्रतिक्रमण सीखने में भी उन्होंने पुरुषार्थ किया। आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. अपने सुशिष्यों के साथ प्राय: जोधपुर पधारते रहते। दर्शन-वन्दन की भावना बपचन से रही, फिर पं. रत्न लक्ष्मीचन्दजी म.सा. के प्रति उनका लगाव हो गया। विनय-विवेक के कारण उन्होंने पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. का मन जीत लिया। बाल्यकाल से आप कुशाग्र-बुद्धि के धनी थे। पं. रत्न मुनिश्री की कृपा का सुफल ही था कि आपने थोड़े समय में सामायिक-प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर लिया। वि. सं. 2010 में सिंहपोल में छ: महान् संतों का संयुक्त चातुर्मास हुआ। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की चरण-सन्निधि में रहते हुए सात्त्विक प्रकृति के धनी मानचन्द्रजी में

वैराग्य-भावना जगी। दीर्घ-द्रष्टा गुरु हस्ती व्यक्ति-व्यक्ति के मनोभावों के पारखी थे, अत: उस दिव्य-दिवाकर ने कुशाग्र बुद्धि के धनी मानचन्द्रजी से कहा-तुम ज्ञानवृद्धि में पुरुषार्थ बढ़ाओ। पूज्य गुरुदेव के शान्त-सहज वचनों में न केवल माधुर्य ही था, अपितु अपनत्व का समावेश था, जिसका मानचन्द्रजी के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

बचपन से सन्तोषवृत्ति के कारण युवावस्था में उन्होंने संकल्प कर लिया कि मेरे निमित्त जहाँ तक बन सके कोई क्रिया नहीं लगे अत: नए वस्त्र सिलवाने के बजाय आप अपने बड़े भ्राता के उतरे वस्त्रों का उपयोग करने लगे। भोजनादि में और दैनिक आवश्यकता पूर्ति में वे मर्यादित द्रव्य रखते। प्रात: सायं के भोजन के उपरान्त आप मुँह में कोई वस्तु नहीं डालते। भोजन के समय घर आने पर माताश्री या भाभीजी भोजन परोस देती तो खा लेते, अन्यथा कुछ समय ठहर कर घर से निकल जाते। भोजन में एक बार जो भी आ गया उसी से सन्तोष कर लेते, दूसरी बार न माँगते, न लेते। कभी किसी को जानकारी नहीं होती और अनजान में एक-दो चपाती रख दी जाती तो उसे खाकर उठ जाते। जीवन में इस प्रकार के संकल्प साकार करना वस्तुत: सन्तोषवृत्ति के साथ साधना का उत्कृष्ट उदाहरण आपके यौवनावस्था में स्पष्ट झलकता था।

यौवनावस्था में प्राय: विवाह-सम्बन्ध के लिए घर-परिवार में बात होती रहती है। एक दिन उन्हें आभास हुआ कि माता-पिता, विवाह-सम्बन्ध के लिए विचार कर रहे हैं। आप सांसारिक बन्धन में बंधने के कतई इच्छुक नहीं थे, अत: आप पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. की सेवा में पहुँचे और भावना रखी कि मुझे आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के प्रत्याख्यान करवा दीजिये। मुनिश्री ने युवक की भावना सुनी और कहा-ठीक है, यथा समय नियम करवाया जा सकता है। पुन: पुन: प्रार्थना पर मुनिश्री ने मर्यादित सीमा के साथ नियम करवा दिया। घर वालों को जब इस नियम की जानकारी मिली तो स्वाभाविक ही था कि वे पूछताछ करते, गृहस्थ जीवन जीने पर जोर देते और हुआ भी वैसा ही। न केवल घर-परिवारजनों ने अपितु इष्ट-मित्रों ने भी समझाने का प्रयास किया, लेकिन दृढ़ संकल्पी मानचन्द्रजी अपने मनोगत भावों पर अडिग रहे।

यौवनावस्था में मानचन्द्रजी ने आजीवन ब्रह्मचारी रहने का दृढ़ संकल्प कर लिया। स्वभाव से सरल आत्मा को पग-पग पर सहज में सुयोग मिलता ही है। वे वि.सं. 2017 से 2019 तक गुरुचरण-सरोजों में रहे, ज्ञानाभ्यास की निरन्तरता रखी, और साधना की क्रमबद्धता में उनकी विरक्त भावना पुष्ट हुई।

फलीभूत हुई विरक्त बन्धु की भावना

'जहाँ चाह वहाँ राह' की उक्ति विरक्त बन्धु श्री मानचन्द्रजी के जीवन में वि. सं.

2019 में साकार हुई। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का उस समय सैलाना चातुर्मास था। जोधपुर के सेवाभावी सुश्रावक श्री अचलचन्दजी सेठिया गुरुचरणों में सैलाना पहुँचे। विरक्त बन्धु दीक्षा की अनुमति के लिए प्रयासरत पहले से थे। जोधपुर के कवि श्रावकरत्न श्री दौलतरूपचन्दजी भण्डारी भी आज्ञा प्राप्त कराने के लिए यत्नशील रहे। आचार्य भगवन्त ने सेठिया परिवार के मुखिया से लिखित आज्ञा-पत्र का अनुरोध किया। वीरपिता ने हस्ताक्षर कर आज्ञा-पत्र सौंप दिया। उस समय वीरपिता के पास उनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री भोपालचन्दजी सेठिया भी सैलाना आ गये थे। बड़े भाई की भी सहमति प्राप्त हो, एतदर्थ आचार्य भगवन्त ने भोपालचन्दजी से सहमति रूप हस्ताक्षर करने को कहा तो उन्होंने आद्योपान्त आज्ञा-पत्र पढ़ा और हस्ताक्षर करने के पूर्व आज्ञा-पत्र पर एक पंक्ति अंकित कर दी कि 'यह आज्ञा-पत्र तभी मान्य होगा जब मुमुक्षु मानचन्द्रजी की दीक्षा जोधपुर में हो।' आचार्य भगवन्त ने लिखी पंक्ति पढ़ी तो सहसा मुँह से निकला-भोपाल ! 'तूं ने तो यहाँ भी मुंशीगिरी कर दिखाई।'

सैलाना चातुर्मास पश्चात् आचार्य भगवन्त आगे बढ़ने का चिन्तन कर रहे थे, किन्तु मुमुक्षु मानचन्द्र के आज्ञा-पत्र में जोधपुर में दीक्षा हो, ऐसी टिप्पणी के कारण भगवन्त को सैलाना चातुर्मास पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करना पड़ा।

मगन-मान की जोड़ी

स्वाध्यायी श्रावकरत्न श्री मगनराजजी मोहनोत पर्युषण सेवा के अनन्तर गुरुदर्शन की भावना से सैलाना आए। स्वाध्यायी श्रावक श्री मगनराजजी को सैलाना में यह विदित हो गया था कि मुमुक्षु मानचन्द्र का आज्ञा-पत्र हो चुका है। मगनराज जी ने मन-ही-मन संकल्प कर लिया कि जब तक मेरी आज्ञा न हो जाय तब तक मैं पारणक नहीं करूँगा।

एक ओर मुमुक्षु मगनराजजी का दृढ़ संकल्प था तो दूसरी ओर उनके पिताश्री आज्ञा देने में कतरा रहे थे उनका कहना था कि उनके छोटे-छोटे बच्चे अविवाहित हैं, उनकी शादी हो जाय तो आज्ञा दूँगा। सुश्रावक श्री अचलचन्दजी सेठिया एवं सुश्रावक श्री सोनराजजी मोहनोत एक स्थान पर ठहरे हुए थे। दोनों में परस्पर बातचीत हुई। क्या करना, कैसे करना, समस्या का समाधान क्या हो, विचार-चिन्तन के क्रम में स्थंडिल पधारते आचार्य भगवन्त ने बीच रास्ते में भोपालचन्दजी सेठिया से पूछा-क्या सोनराजजी मोहनोत यहीं हैं ?

आचार्य भगवन्त ने सोनराजजी मोहनोत से बात की। उस दिव्य दिवाकर ने कहा- आप क्या सोच रहे हैं? आचार्य भगवन्त ने समझाया कि संयम की भावना होने पर उसे सांसारिक कारणवश असंयम में रखना ठीक नहीं है। गुरु के प्रति अनन्य आस्था और अटूट

विश्वास पहले-से था, अतः गुरु की हितशिक्षा पर विचार करके सुश्रावक श्री सोनराजजी मोहनोत ने भी आज्ञा देने का मानस बना लिया।

सैलाना के सेठ रांकाजी का आग्रह

मुमुक्षु मानचन्द्रजी और मुमुक्षु मगनराजजी की दीक्षा की बात तय होने पर उदारमना सेठ प्यारचन्दजी रांका ने दोनों परिवारों के मुखिया के समक्ष दीक्षा सैलाना में करवाने की पुनः पुनः प्रार्थना रखी और अनुनय-विनय में सेठ साहब ने अपनी पगड़ी दोनों वीरपिताओं के समक्ष रखते कहा कि आप कृपा करके दीक्षा के सुअवसर का लाभ हमें दें तो हमारा यह चातुर्मास सोने में सुहागा वाली कहावत चरितार्थ करने वाला बन जाएगा। सेठ साहब ने आचार्य भगवन्त की आगे बढ़ने की भावना की बात भी रखी और यहाँ तक कह दिया कि मैं दीक्षा के पावन प्रसंग पर जोधपुर से सैलाना स्पेशल ट्रेन की व्यवस्था करूँगा जिससे दीक्षा- महोत्सव पर जोधपुरवासियों को दीक्षा की अनुमोदना के लाभ से वंचित नहीं रहना पड़ेगा। सेठ साहब की भावना साकार नहीं हो सकी, क्योंकि सेठिया व मोहनोत परिवार दीक्षा जैसे अलभ्य लाभ को कतई नहीं छोड़ना चाह रहे थे।

मगन-मान की दीक्षा तिथि एवं दीक्षा महोत्सव की तैयारियाँ

सूर्यनगरी में युगद्रष्टा-युगमनीषी के मुखारविन्द से दो-दो मुमुक्षुओं की भागवती दीक्षा के कारण जोधपुर में ही नहीं, अपितु मारवाड़ में उमंग-उल्लास छा जाना स्वाभाविक था। तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर दोनों विरक्त बन्धुओं को बाने बैठाया गया। दीक्षा वैशाख शुक्ला त्रयोदशी को होगी यह बात एक दूसरे को एक दूसरे के माध्यम से यत्र-तत्र-सर्वत्र पहुँच गई। सुदूरवर्ती क्षेत्रों के सुज्ञ श्रावकगण अपने पारिवारिक-परिजनों के साथ दीक्षा महोत्सव के अनुमोदनार्थ जोधपुर पहुँचने लगे। दीक्षा महोत्सव के पूर्व दोनों मुमक्षुओं की भव्य शोभायात्रा की विशालता जिस किसी ने देखी वह 'जहाँ का तहाँ' ठहर गया। हजारों जैन-अजैन आबाल-वृद्ध सबने न केवल शोभायात्रा में भागीदारी प्रदर्शित की, अपितु स्थान-स्थान पर स्वागत-सत्कार में सक्रियता का परिचय देकर शोभायात्रा को अविस्मरणीय बना दिया। जोधपुर राज्य के तत्कालीन मंत्री श्री भोपालचन्दजी लोढ़ा ने अपने सुपुत्र डॉ. लक्ष्मीचन्दजी लोढ़ा की अपनी खुली कार को शोभायात्रा के लिए सहर्ष प्रदान किया और गाड़ी स्वयं उन्होंने चलाई जिसमें दोनों मुमुक्षु बन्धु हाथ जोड़े जनता का अभिवादन कर रहे थे।

शोभायात्रा घोड़ों के चौक से प्रारम्भ हुई। शाहपुरा मौहल्ला, सिलावटों का बास, त्रिपोलिया बाजार, सिरे बाजार, आडा बाजार, पुष्टिकर स्कूल, नृसिंहधड़ा, कबूतरों का चौक होते हुए शोभायात्रा पुनः घोड़ों के चौक पहुँची, शहरवासियों ने हर्षित-प्रमुदित हो

मुमुक्षुओं का स्वागत किया, वीर परिवारों के प्रति धन्यवाद-साधुवाद शब्द उच्चरित कर मोहनोत व सेठिया परिवार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। घरों-मौहल्लों-बाजारों में तो लोगों का हुजूम था ही, छतों-छज्जों पर बैठकर लोगों ने मुमुक्षुओं की भव्य शोभायात्रा देखी तो देखते ही रहे। वैशाख मास की कड़कड़ाती गर्मी के बावजूद भी लोग हिलने का नाम नहीं ले रहे थे।

दीक्षाभिषेक

वि. सं. 2020 की वैशाख शुक्ला त्रयोदशी के मंगल प्रभात में बहिनें 'आज सोना रो सूरज ऊगियो' बोल में गीत गाती और श्रमण भगवान महावीर और युगद्रष्टा-युगमनीषी आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. के जय-जयकार के गगनभेदी जयनाद करती उतावली होकर सरदार स्कूल की ओर बढ़ रही थी। विरक्त-बन्धु पारिवारिक-परिजनों और इष्ट-मित्रों के साथ पहुँचें, उसके पहले हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने सरदार स्कूल पहुँच कर अपना स्थान ग्रहण कर लिया। दोनों मुमुक्षु सरदार स्कूल पहुँचे, जय-जयकार के अनवरत जयनादों से वातावरण में मानों भक्ति का ज्वार आ गया।

आचार्य भगवन्त एवं संत-सतीवृन्द की चरण सन्निधि में सरदार स्कूल के विशाल प्रांगण में हजारों भक्तों ने मुमुक्षुओं के वन्दन से लेकर, वस्त्र परिवर्तन, केश कर्तन और श्रमण वेश में गुरुचरण-सेवा में पहुँचने का दृश्य अपलक देखा। साधुवेश में उपस्थित दोनों वैरागियों ने गुरु हस्ती द्वारा प्रदत्त दीक्षा पाठ के एक-एक शब्द को सहजता-एकाग्रता से श्रवण किया। उपस्थित जनसमुदाय ने नवदीक्षित मुनियों के साहस को, उनके परिवारजनों के सहयोग को और गुरु हस्ती की बगिया में दो श्रमणरत्नों के शुभागमन को सूर्यनगरी का सौभाग्य माना। जय-जयकारों का अनवरत जयनाद एवं दीक्षा की अनुमोदना में व्रत-नियमों की श्रद्धा समर्पण का भाव आज भी अनेक प्रत्यक्षदर्शियों को याद है।

मुथाजी के मन्दिर में बड़ी दीक्षा

नवदीक्षित मुनिद्वय की बड़ी दीक्षा नागौरी गेट स्थित मुथाजी के मन्दिर में ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्थी को सम्पन्न हुई। आचार्य भगवन्त ने नवदीक्षित श्री मगनमुनिजी म.सा. को स्वामीजी श्री भोजराजजी म.सा. की नेश्राय में और नवदीक्षित श्री मानचन्द्रजी म.सा. को पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. की नेश्राय में रखने की घोषणा फरमाई।

गुरु सान्निध्य में मुनि-जीवन का अभ्यास

नवदीक्षित सन्तरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने आचार्य भगवन्त की चरण-सन्निधि में वि. सं. 2020 का पीपाड़ चातुर्मास किया, जिसमें मुनि-जीवन के अभ्यास के प्रति पूर्ण

सजगता देखने को मिली। नेश्राय गुरु पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. की सेवा में नवदीक्षित मुनि ने साध्वाचार का ज्ञान व अनुभव तो प्राप्त किया ही, आगम-शास्त्रों और बोल-थोकड़ों का तलस्पर्शी ज्ञान अर्जित कर सुयोग्य गुरु के सुयोग्य शिष्य के रूप में ख्याति अर्जित कर ली। वि.सं. 2035 की पौष शुक्ला दशमी को जोधपुर में नेश्राय गुरु पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. के स्वर्गगमन के पश्चात् आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने उन्हें स्वतन्त्र चातुर्मास हेतु आज्ञा प्रदान की। सेवा और साधना के पर्याय मुनिश्री ने रत्नसंघ और जिनशासन की जाहोजलाली में चार चाँद लगाने में सदा सजगता रखी।

उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास

जोधपुर में गुरु हस्ती के मुखारविन्द से प्रव्रजित होने वाले संतरत्न ने सर्वप्रथम आचार्य भगवन्त के पावन श्रीचरणों में वि.सं. 2020 का पीपाड़ चातुर्मास किया। आपने नेश्राय गुरु पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. के पावन सान्निध्य में वि.सं. 2021 का मेड़ता, 2022 का कोसाना चातुर्मास किया। प्रारम्भ के तीन वर्षावासों में श्रमण-जीवन का अध्ययन व अभ्यास करके आपने विशिष्ट योग्यता-पात्रता अर्जित कर ली। वि.सं. 2023 का अहमदाबाद, 2024 का जयपुर, 2025 का भोपालगढ़, 2026 का जोधपुर, 2027 का थाँवला, 2028 का जोधपुर, 2029 का पाली, 2030 का जयपुर, 2031 का विजयनगर, 2032 का हरसोलाव, 2033 का गोटन चातुर्मास सम्पादित करके पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी संतरत्न का गौरव अर्जित किया।

श्रमण-जीवन में स्वाध्याय और वैय्यावृत्त्य दो मुख्य कार्य होते हैं। पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के जीवन-व्यवहार में 'मैं सबका हूँ, सब मेरे हैं,' देखने को मिलता है। आपश्री को न प्रसिद्धि की चाहना है, न लोकैषणा की कामना। आप अल्पभाषी हैं, मितभाषी हैं और जब भी बात करते हैं तो सहज-स्वाभाविक शब्दों में थोड़े में बहुत कुछ कह जाते हैं। आपके प्रवचनों में सहजता-सरलता परिलक्षित होती है। शब्द-वाक्य, भाषा-भाव, चिन्तन-मनन और प्रस्तुतीकरण सब-कुछ इतना सरल होता है कि हर व्यक्ति आपश्री की बात सुन-समझकर उसे आत्मसात् करने को तत्पर हो जाता है।

पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. में सेवा का विशेष गुण रहा हुआ है। वि.सं. 2034 से 2039 तक छः वर्ष जोधपुर में रहकर आपश्री ने संतों की सेवा का अनुपम आदर्श उपस्थित किया। सेवा की ऐसी मिसाल प्रायः कम ही देखने को मिलती है।

वि.सं. 2034 से 2039 तक घोड़ों के चौक जोधपुर में पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने बाबाजी म.सा. की अग्लानभाव से सेवा करके सेवाभावी संतरत्न होने का गौरव

प्राप्त किया। राजस्थान गौरव सेठ श्री मोहनमलजी चोरड़िया जिनका कार्यक्षेत्र मद्रास था, वे संत दर्शन-वन्दन के निमित्त मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म.सा. के श्रीचरणों में बैठे हुए थे, जिज्ञासावश पृच्छा की कि इस युग में सेवाभावी संत के रूप में कौन हो सकते हैं? सेठ साहब ने यह भी पूछा कि क्या इस समय कोई संत ऐसा भी है जिसे हम चौथे आरे की बानगी के रूप में कह सकते हैं ?

मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म.सा. ने कहा-सेठ साहब ! 'आपको चौथे आरे की बानगी और सेवाभावी संत देखना हो तो घोड़ों के चौक, जोधपुर जाकर देख सकते हैं।' सेठ मोहनमलजी जोधपुर पहुँचे। घोड़ों के चौक स्थानक में वे सामायिक करके बैठ गये। सेठ मोहनमलजी चोरड़िया पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. से पहले परिचित नहीं थे। सामायिक-साधना में बैठे-बैठे सेठ साहब यह देखकर कि एक संत हर समय सेवा में सन्नद्ध है, वह अपना काम छोड़कर सेवा-धर्म की साधना में समर्पित रहता है। बाबाजी महाराज काफी अस्वस्थ थे। उन्हें बैठाना-उठाना, खँखार साफ करना जैसे सभी काम पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. इस खूबी से करते कि वृद्ध एवं अस्वस्थ संत को साता का अहसास तो होता ही, सेवाभावी संतरत्न के प्रति मन-ही-मन ढेरों शुभाशीष का भाव रहता। सेठ साहब ने देखा- वृद्ध एवं बीमार संत खांसी कर रहा है, किन्तु खंखार बाहर नहीं आ रही है। सेवामूर्ति सन्तरत्न श्री मानचन्द्रजी आहार करते हुए नीचे पहुँचे और अपने हाथ की अंगुली बाबाजी के मुँह में डालकर खँखार निकाला।

सेठ साहब सेवा का ऐसा आदर्श देखकर दंग रह गये। नाम पूछा, वन्दन किया और लोगों को इंगित कर कहा कि मरुधरकेसरीजी म.सा. ने 'चौथे आरे की बानगी देखनी हो तो घोड़ों के चौक में जाइये', वस्तुतः मैंने यहाँ आकर जो कुछ भी देखा है, वह अन्यत्र कहीं नहीं मिला।

पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने बाबाजी म.सा. के स्वर्गगमन तक सेवा-धर्म की साधना की, फिर विक्रम संवत् 2040 का जयपुर चातुर्मास किया। वि. सं. 2041 का अहमदाबाद, वि. सं. 2042 का पाली, वि. सं. 2043 का विजयनगर, वि. सं. 2044 का जयपुर, वि. सं. 2045 का दिल्ली, वि. सं. 2046 का ब्यावर और वि.सं. 2047 का चातुर्मास आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की सेवा में पाली किया।

दिल्ली का चातुर्मास

पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा का वि. सं. 2045 में चातुर्मास दिल्ली में था। दिल्लीवासियों ने त्याग की साक्षात् मूर्ति का चातुर्मास पाकर अनुमान लगाया कि जो संत समाचारी पालन में इतना दृढ़ है तो इनका गुरु कैसा होगा? दिल्ली के सुज्ञ श्रावकों ने पूरे

चातुर्मास में पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा का आचार-विचार-व्यवहार नजदीक से देखा, ज्ञान-क्रिया का सुन्दर रूप देखकर भक्तजन आश्चर्यचकित थे कि क्या स्थंडिल के लिए पाँच-छः किलोमीटर जाना और आना सम्भव हो सकता है ?

पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की सरलता, सहजता, सहिष्णुता, निरभिमानता, स्वाध्यायशीलता, जप-तप की क्रमबद्धता और प्रवचन की पटुता जैसे गुणों को देखकर दिल्ली के श्रावकों ने पृच्छा की कि हम आपश्री के गुरुवर्य के दर्शन करना चाहते हैं। शान्त-सहज पं. मुनिश्री ने कहा- आचार्य भगवन्त सवाईमाधोपुर विराज रहे हैं आप चाहें तब दर्शन-वन्दन और सेवा कर सकते हैं।

दिल्ली के प्रबुद्ध श्रावक माधोपुर पहुँचे। आचार्य भगवन्त के दर्शन-वन्दन करने के पश्चात् सेवा का लाभ लिया और दिल्ली पहुँचकर अन्यान्य श्रावकों से कहा-हमने साक्षात् भगवान के दर्शन किए हैं। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. जब ऐसे तेजस्वी महापुरुष हैं तो उनके शिष्य में क्या कमी रहने वाली है ?

आचार्य भगवन्त की सेवा में अन्तिम वर्षावास

रत्नसंघ के पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं पं. रत्न श्री हीराचन्द्रजी म.सा. अपने आराध्य गुरुवर्य की चरण-सन्निधि में पाली वर्षावास में प्रायः प्रतिदिन प्रवचन सभा में गुरु हस्ती के आजू-बाजू विराजते। सुयोग्य गुरु ने अपने सुयोग्य शिष्यरत्नों के लिए सार्वजनिक रूप से कई बार उद्घोषणा की कि मेरी ये दोनों भुजाएँ मजबूत हैं। गुरु हस्ती के जीवन में कथनी-करनी की सदा एकरूपता रही, उस दिव्य-दिवाकर ने अपने तेरह दिवसीय तप-संथारे के साथ मृत्यु को महोत्सव तो बनाया ही, संघ-व्यवस्था हेतु अपने स्व-लिखित पत्र में पं. रत्न श्री हीराचन्द्रजी महाराज को 'आचार्य' और पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी महाराज को 'उपाध्याय' पद प्रदान किया, निमाज में श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित विशाल जनमेदिनी ने जय-जयकार के गगनभेदी जयनाद कर, गुरु हस्ती के आदेश को सहर्ष शिरोधार्य किया। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. द्वारा मनोनीत दोनों महापुरुषों का 50 वाँ दीक्षा वर्ष वि.सं. 2069 में प्रारम्भ हो रहा है।

आचार्यप्रवर-उपाध्याय प्रवर में विचार-साम्य

गुरु हस्ती की चरण-सन्निधि के सुयोग का जीवन पर्यन्त मन-वचन-काया से और समर्पित भाव से उपयोग करने वाले दोनों महापुरुषों के विचारों में साम्य है। संघहित के विविध विषयों पर दोनों का सकारात्मक चिन्तन रहता है तो साधना-आराधना में भी दोनों सक्रिय-सजग महापुरुष हैं। ज्ञान-क्रिया की निर्मलता, आचार-विचार-व्यवहार की

पवित्रता, संघ-समाज उन्नयन में जागरूकता के कारण दोनों महापुरुषों का जीवन सबके लिए प्रेरणादायी है।

आचार्यश्री-उपाध्यायश्री के संयुक्त चातुर्मास

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने निमाज पहुँचने के पश्चात् एक ओर अपने अन्तर्मन की भावना रखी कि मुझे खाली हाथ नहीं जाना है तो दूसरी ओर अपने शिष्य-शिष्याओं को भोलावन दी कि 'पूर्वाचार्यों की उज्ज्वल-विमल-धवल परम्परा के रक्षण-संवर्धन में कभी कोताही नहीं हो।' दोनों महापुरुषों के जीवन में गुणग्राहकता का भाव रचा-पचा होने से परस्पर विचार-चर्चा में संघ-दीप्ति का भाव प्रखर रहता है। आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर ने निमाज से जोधपुर पहुँच कर वि.सं. 2048 में घोड़ों के चौक में संयुक्त चातुर्मास किया। चातुर्मास में दोनों महापुरुषों का परस्पर प्रेम, आत्मीयता और एक दूसरे का एक दूसरे के प्रति अनुराग की शुभभावना के कारण चतुर्विध संघ में व्यक्ति-व्यक्ति के मन में श्रद्धा-भक्ति की भावना प्रगाढ़ हुई, वह प्रथम संयुक्त चातुर्मास की सार्थक उपलब्धि कहें तो उसमें कोई अतिशयोक्ति जैसी बात नहीं है।

उपाध्यायप्रवर के वि.सं. 2049 का भीलवाड़ा, वि.सं. 2050 का कोटा, वि.सं. 2051 का कंवलियास, वि.सं. 2052 का पाली, वि.सं. 2053 का कोसाना, वि.सं. 2054 का जयपुर चातुर्मास ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन सभी दृष्टियों से सफल रहा। वि. सं. 2055 का आचार्यप्रवर- उपाध्यायप्रवर का पुनः संयुक्त चातुर्मास मदनगंज-किशनगढ़ हुआ जिसमें संघहित की दृष्टि से विविध विषयों पर मंत्रणा सफल रही। उपाध्यायप्रवर का वि. सं. 2056 का सवाईमाधोपुर चातुर्मास पूरे पोरवाल क्षेत्र के चातुर्मास के रूप में सफल रहा।

आचार्यप्रवर ने वि.सं. 2056 के नागौर चातुर्मास के अनन्तर मध्यप्रदेश होते हुए महाराष्ट्र की ओर बढ़ने का चिन्तन किया तब श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर की सेवा में समाचारों का संप्रेषण इस भावना से करवाया कि राजस्थान से बाहरी प्रदेशों को सिंचित करने के लिए आपका पधारना संघहित में होगा, उपाध्यायप्रवर ने संघहित की भावना को मूर्तरूप दिया। वि.सं. 2057 का जलगाँव और वि.सं. 2058 का धुलिया जैसे संयुक्त वर्षावासों की सफलता से परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग की भावना तो पुष्ट हुई ही, एकता-एकरूपता का जन-जन को सुखद अहसास भी हुआ।

आचार्यप्रवर धुलिया चातुर्मास के अनन्तर महाराष्ट्र के अन्यान्य ग्राम-नगरों और महानगरों के साथ कर्नाटक-तमिलनाडु जैसे क्षेत्रों के भक्तों को सँभालने का चिन्तन कर रहे थे, वहीं उपाध्याय प्रवर का आगे बढ़ने का मानस नहीं था अतः वि.सं. 2059 का

होलनांथा (महाराष्ट्र) चातुर्मास कर राजस्थान की ओर जहाँ वृद्ध संत भी प्रतीक्षारत थे और राजस्थान के गाँव-गाँव, नगर-नगर में प्राय: जन-जन के मन में यह भावना बन रही थी कि दोनों महापुरुषों में से कोई एक तो राजस्थान सँभाले, उपाध्यायप्रवर ने वि.सं. 2060 का जोधपुर, वि.सं. 2061 का जयपुर, वि.सं. 2062 का बालोतरा, वि.सं. 2063 का पीपाड़शहर, वि.सं. 2064 का भोपालगढ़, वि.सं. 2065 सिवाना, वि.सं. 2066 ब्यावर, वि.सं. 2067 गोटन और वि.सं. 2068 का चातुर्मास नागौर करके जयपुर-जोधपुर सहित मारवाड़ अंचल को चातुर्मास प्रदान कर जन-जन की भावना का समादर किया।

आचार्यप्रवर ने वि.सं. 2069 का अपना आगामी चातुर्मास जयपुर स्वीकार किया, वहीं उपाध्याय प्रवर का चातुर्मास मेड़तासिटी घोषित कर भक्तिनगरी मेड़ता की वर्षों से चल रही भावना को साकार किया है।

उपाध्यायप्रवर की साधना की निरन्तरता

उपाध्यायप्रवर ने जैसे सेवा के क्षेत्र में अनुपम आदर्श रखा वैसे ही उपाध्यायप्रवर का साधना का पक्ष भी जैन-जैनेतर जन समुदाय को आकर्षित करता है। वय सम्पन्न होने और शारीरिक कमजोरी के बाद भी उपाध्यायप्रवर विहार की क्रमबद्धता बनाए रखते हैं। आपश्री की जीवनचर्या पूरी तरह व्यवस्थित रहती है। स्वाध्याय, ध्यान, मौन, तपश्चरण और हर वक्त 'आनन्द है' का मुस्कान भरा उत्तर जन-जन को प्रेरित-प्रभावित करता है। शान्त-गम्भीर और प्रपंच से सर्वथा दूर उपाध्यायप्रवर का जीवन हम-सबके लिए प्रेरणादायी है।

आपश्री प्रबल पुरुषार्थी हैं। इस उम्र में भी आप अपना काम स्वयं करते हैं। किसी पर आश्रित होकर रहना आपको कभी इष्ट नहीं रहा। देश की राजधानी दिल्ली में चातुर्मास हो या मारवाड़ के छोटे-से ग्राम कोसाना अथवा जयपुर-जलगाँव-अहमदाबाद जैसे बड़े शहर में, उपाध्यायश्री की दिनचर्या सदा एक-सी रहती है। मध्याह्न 12 से 2 बजे तक ध्यान-मौन का समय वर्षों से विधिवत् चलता है, कृष्ण पक्ष की दशमी को अखण्ड मौन और उपवास का अनवरत क्रम भी वर्षों से विद्यमान है।

सरलता, सहिष्णुता, सौम्यशीलता, स्वाध्यायशीलता और सेवा-साधना के प्रति समर्पण से आपश्री का जीवन सुशोभित है। आप शतायु हों, दीर्घायु हों और आपकी स्वास्थ्य-समाधि सुखद बनी रहे, इन शुभभावनाओं के साथ दीक्षा-अर्द्धशती-वर्ष में हम-सब आपके अनेकानेक सद्गुणों को जीवन-व्यवहार में अपना सकें, वैसी शक्ति हम भक्तों में संचरित करें, यही अभिलाषा है।

-अतिरिक्त महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर

गीत

श्रमणमार्ग के राही तेरा अभिनन्दन शत वन्दन है

श्री सम्पतराज चौधरी

(लय- जिसने राग-द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया)

आत्मस्वरूप के आनन्द में तुम, नियमित नित्य नहाते हो,
दिव्यज्ञान की बोधि से तुम, विषय-विकार मिटाते हो।
परम शान्त मुद्रा में रहकर, शांति-सुधा बरसाते हो,
संयम में पुरुषार्थ जगाकर, शान्त-दान्त कहलाते हो।।

उपाध्याय के पद से शोभित, गुरुवर मंगलदाता है,
सार पूर्ण उद्‌बोधन तेरा, मिथ्याज्ञान मिटाता है।
शरण पड़ा जो तेरे गुरुवर, तेरे ही गुण गाता है,
भक्तिभाव से वन्दन तेरा, जीवन को सरसाता है।।

मानचन्द्र है नाम भले ही, विनय धर्म का शानी है,
वीतराग में रंगा हुआ, वह जीवन का विज्ञानी है।
सहज स्वभाव सरलता से, मुनि मानचन्द्र सुखदानी है,
बचपन से अब तक हे गुरुवर, तेरी यही कहानी है।।

सेवा करके संतजनों की, उत्तम धर्म सिखाया है,
निर्मल चन्द्र सरीखे हो तुम, किंचित् भी नहीं माया है।
शरण तुम्हारी जो भी आया, शीतलता ही पाया है,
ज्ञान-ध्यानी निस्पृही गुरुवर, 'हस्ती' की प्रति छाया है।।

दोषमुक्त आचार तुम्हारा, जीवन का अनुरंजन है,
कोमल उर में रहता तेरे, जन-जन का हित चिंतन है।
दीक्षा की है स्वर्ण जयन्ती, अवसर ये सुख कन्दन है,
श्रेयमार्ग के राही तेरा, अभिनन्दन शत वन्दन है।।

-14, वरदान अपार्टमेंटस्, 64, इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

प्रासङ्गिक

उपाध्यायप्रवर मानचन्द्रजी : सरलता, साधना एवं संयम की त्रिवेणी*

श्री सम्पतराज चौधरी

बिन पुकारे दे रहे, वात्सल्य का जो दान है।
उपमित करूँ किससे तुम्हें, मिलता नहीं उपमान है।।
शांत तेरी धवल छवि, मन पटल पर छा रही।
हर अमावस देख तुझको, पूर्णिमा बन आ रही।।

वर्तमान समय में जैन श्रमण संस्कृति की धारा को अक्षुण्ण रखने वाले संतों में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का नाम अत्यन्त गौरव के साथ लिया जाता है। उनके संयम-जीवन की पावन गंगा जन-जन को सदाचरण से आप्लावित करती हुई अब अपने पचासवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। यह एक ऐसे त्यागी, उदारचेत्ता संत की यात्रा है जिसमें साधना की धवलिमा है और निश्छल-निर्मल चारित्र की गरिमा है। उनके साधना पथ में वात्सल्य और विराग की धारा एक साथ फूट रही है। उनका जीवन प्रेरणा का वह जल है जो धरती में निहित बीज को पनपने का प्रबल निमित्त देता है। संयम और सरलता की इस मूर्ति में जीवन की सहजता और मुमुक्षा बोलती है, जिसे अभिव्यक्त करने का यह एक विनम्र प्रयास है।

कुल एवं जन्म

मानचन्द्र जी का जन्म माघ कृष्णा चतुर्थी, वि.सं. 1991 को जोधपुर में सेठिया परिवार में हुआ। पिता का नाम श्री अचलचन्द जी और माता का नाम था श्रीमती छोटाबाई। उनका प्रारम्भिक शिक्षण हाई-स्कूल तक हुआ। उसके पश्चात् पारिवारिक, धार्मिक संस्कारों की उर्वरा भूमि पर जब उनका संतों से समागम होने लगा तो उनमें विराग के अंकुर प्रस्फुटित होने लगे। सेठिया परिवार में जन्म लेकर उनमें श्रेष्ठ जीवन के वरण की अभीप्सा जगी। पिताश्री के नाम से भावों में संकल्प की अचलता का सूत्रपात हुआ तो माताश्री के नाम से वे अकिंचनता के गुण को ग्रहण करने लगे। ये गुण उनके वैराग्य की भूमिका बन गये। वि.सं. 2010 में आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज सहित छः महान् संतों का

* वैशाख शुक्ला 13, दिनाँक 4 मई, 2012 को दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष प्रारम्भ होने के उपलक्ष्य में प्रकाशित

सिंहपोल, जोधपुर में संयुक्त चातुर्मास हुआ। मानचन्द्र जी को अपने अग्रज श्री भोपालचन्द जी के साथ उस चातुर्मास में संत-समागम का अनुपम संयोग मिला। आचार्य हस्ती के संवत् 2018 के चातुर्मास में प्रतिदिन श्री सुगनचन्द जी म.सा. की सेवा में रहकर ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ उनकी श्रमण जीवन के प्रति आस्था बढ़ती गई। आचार्य श्री हस्ती के जीवन में अप्रमत्तता और सेवा की सजगता देखकर युवा मानचन्द्र जी का मन संत-सेवा में लगने लगा। आचार्य भगवन्त ने उनके मनोभावों को जानकर उन्हें जागरण का संदेश देते हुए कहा- ''मानचन्द्र! तुम ज्ञानवृद्धि में पुरुषार्थ करो।'' इस वात्सल्यभरी आत्मीयता में मानचन्द्र जी के लिये महावीर के मार्ग की पुकार थी। उन्होंने रास्ते की उस पुकार को सुना और उन्हें रास्ते पर अग्रसर होने का सम्यक् बोध दिया पं.रत्न लक्ष्मीचन्द जी महाराज ने। स्वयं को जानने और तारने की चेतना जाग्रत हो गई। उस चेतना को प्राण मिला आचार्य भगवन्त से और वे अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने के अनुकांक्षी बन गये। उनकी श्रमणपथ पर अग्रसर होने की आन्तरिक भावनाएँ सबल हो गईं। रास्ता सही नहीं होता है तो उस पर चलना भी व्यर्थ होता है। इसलिए महावीर ने सूत्र दिया- ''पढमं नाणं तओ दया' अर्थात् पहले ज्ञान होना चाहिए, फिर उसके अनुसार दया-यानी आचरण। आचार्य भगवन्त ने रास्ता बता दिया और श्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज ने रास्ते का बोध दे दिया। यही मानचन्द्र जी की विरक्ति के अध्याय का प्रारम्भ था।

मोह से अमोह की यात्रा का प्रारम्भ

यूं तो गृहस्थ में रहकर भी मोह से अमोह का पथ लिया जा सकता है, पर गृहस्थ जीवन में इस तरह अनासक्त रहना अत्यन्त दुष्कर है। अतः मोक्षार्थी के लिये अनगार धर्म ही श्रेष्ठ कहा गया है। श्रमण निर्ग्रंथ संस्कृति में संन्यास को गृहस्थाश्रम से उच्च कोटि का ही नहीं बताया गया है, अपितु स्थानांग सूत्र में गृहस्थ का यह मनोरथ बताया गया है- ''कयाणं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइस्सामि?'' अर्थात् कब मैं मुण्डित होकर अगार से अनगारिता में प्रव्रजित होऊँगा?

जिनवाणी के इस प्रकाश में मानचन्द्र जी की वैराग्य भावनाएँ बलवती होती गईं। उन्होंने समझ लिया कि संयम-जीवन ही आत्मकल्याण का सर्वोत्कृष्ट मार्ग है, मानव जीवन की उपादेयता और समाधान का मार्ग है और यही शाश्वत आनन्द का मार्ग है। आचार्य हस्ती ने पारिवारिक मोह को क्षीण करने हेतु कुछ समय मानचन्द्र जी को भोपालगढ़ छात्रावास में रहने की प्रेरणा की जहाँ उन्होंने अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दी। इस तरह वहाँ भी आपकी वैराग्य भावनाएँ उत्तरोत्तर परिपक्व होती गईं। साधु-जीवन में जो आचार व्यवहार पालनीय है, उसका आंशिक रूप में अभ्यास आपने गृहवास में ही

करना शुरू कर दिया। सुबह शाम के भोजन के बाद कोई खाद्य वस्तु मुँह में नहीं डालते। घर में जब उनके विवाह के प्रस्तावों की चर्चा चलने लगी तो उन्होंने आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर लिया। श्रमण-जीवन का महत्त्व और उसके पालन का संकल्प उनके गृहवास में ही स्पष्टरूप से दिखने लगा। उन्होंने अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख को संसार में घुलने नहीं दिया और जीवन को उस पार भी देखना शुरू कर दिया।

आचार्य हस्ती और लक्ष्मीचन्द जी महाराज के चरणों में उनका ज्ञानाभ्यास तीन वर्ष तक चलता रहा। इसी के साथ विहार और साधना भी चलती रही। परिवार वालों ने जब निश्चित रूप से जान लिया कि उनकी दीक्षा लेने की भावना प्रबल है तो उनको संसार में रखने के किसी भी तरह के प्रयास छोड़ दिये। जब आचार्य हस्ती का संवत् 2019 में सैलाना में चातुर्मास था, उस अवसर पर श्री मानचन्द्र जी के पिता सुश्रावक श्री अचलचन्द जी सेठिया गुरु सेवा में सैलाना पहुँचे। आचार्य भगवन्त के प्रवचन के दौरान, भाद्रपद शुक्ला प्रतिपदा को, वैरागी मानचन्द्र जी के लिए उनके माता-पिता द्वारा दीक्षा की अनुमति की घोषणा उपस्थित सुश्रावक कविवर दौलतरूपचन्द जी भंडारी ने कर दी। वीर पिता का आज्ञापत्र सहर्ष आचार्य भगवन्त के चरणों में समर्पित कर दिया गया। आचार्य भगवन्त ने श्री मानचन्द्र जी के बड़े भ्राता श्री भोपालचन्द जी से आज्ञापत्र पर सहमति के रूप में हस्ताक्षर करने की बात फरमाई। उन्होंने भी आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। उसके कुछ ही दिन पश्चात् एक अन्य वैरागी, श्री मगनराज जी मोहनोत ने भी अपने पिताश्री से दीक्षा की आज्ञा प्रदान करने का निवेदन किया। आचार्य भगवन्त के हितकारी वचन सुनकर श्री मगनराज जी मोहनोत के पिता श्री सोनराज जी ने भी अपने पुत्र को दीक्षा की आज्ञा प्रदान कर आज्ञापत्र आचार्यश्री की सेवा में समर्पित कर दिया। यद्यपि सैलाना के श्रावकश्रेष्ठ श्री प्यारचन्द जी रांका का अत्यन्त आग्रह रहा कि दोनों दीक्षाएँ सैलाना में ही हों, परन्तु दीक्षार्थीजनों के परिवार वालों की भावनाओं को ध्यान में रखकर उन्हें सम्मान देते हुए आचार्यश्री ने दीक्षा प्रदान करने हेतु जोधपुर की ओर विहार कर दिया।

निर्ग्रंथ मार्ग का वरण

ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए आचार्य भगवन्त संवत् 2020 के वैशाख मास में जोधपुर पधारे। द्वितीय वैशाख शुक्ला त्रयोदशी, वि.सं. 2020 को दोनों ही विरागी आत्माओं को दीक्षा प्रदान करने की तिथि घोषित हो गई। निश्चित तिथि के मंगल प्रभात में दीक्षा महोत्सव का भव्य आयोजन सरदार स्कूल, जोधपुर के विशाल प्रांगण में चतुर्विध संघ की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। हजारों लोगों के मध्य दोनों का दीक्षाभिषेक आचार्य

भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज के मुखारविन्द से अत्यन्त भव्य वातावरण में शोभित हुआ।

दीक्षा के दूसरे ही दिन गुरुदेव ने मुनि मानचन्द्र जी से कहा- "प्रमाद तो जीवन में आता ही रहता है, तुम अप्रमत्त रह कर बताओ।" आचार्य भगवन्त की यह सीख मुनि मानचन्द्र जी के जीवन का गुरुमंत्र बन गया। तत्पश्चात् नवदीक्षित मुनिद्वय की बड़ी दीक्षा मुथाजी के मंदिर, नागौरी गेट, जोधपुर में ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्थी, संवत् 2020 को हुई। दीक्षा के समय मुनि मानचन्द्र जी की आयु 29 वर्ष की थी।

पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी म.सा. (संवत् 1767-1840) की शिष्य परम्परा पूज्यपाद आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. के यशस्वी नाम से विश्रुत हुई। आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज ज्ञान और क्रिया दोनों में अग्रणी संत थे। वे शान्त प्रकृति के प्रतिभाशाली संत होने के साथ ही साथ आगमवेत्ता और कवि भी थे। उनकी निस्पृहता,विनयशीलता एवं आचार के प्रति कठोरता संत-जीवन के लिए प्रेरणादायक है। इस परम्परा के सभी आचार्य लघुवय में दीक्षित अखण्ड बाल ब्रह्मचारी हुए हैं, जिन्होंने अपनी ज्ञान गरिमा, जिनशासन समर्पण एवं निरतिचार चारित्र साधना से अपनी परम्परा की गुण गरिमा को अभिवृद्ध किया है। इसी परम्परा के सप्तम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज साहब त्याग, वैराग्य, विद्वत्ता, शुद्ध श्रमणाचार एवं अनेक आत्मगुणों से सम्पन्न थे। उनका चित्त पवित्र था, वे सरलता की प्रतिमूर्ति और अत्यन्त प्रशस्त जीवन के धनी थे। ऐसे दिव्य पुरुष के मुखारविन्द से मुनि मानचन्द्र जी ने श्रमणव्रत अंगीकार कर अपने को धन्य समझा। मानचन्द्र जी को आचार्य भगवन्त के चरणों में समर्पित कर उनके सांसारिक माता-पिता भी महिमावन्त माता-पिता हो गये। आचार्यदेव ने नवदीक्षित मुनि मानचन्द्र जी को श्रद्धेय पंडितरत्न श्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज की नेश्राय में रखने की घोषणा की।

श्रमण जीवन का शुभारम्भ

दीक्षा के प्रारम्भिक काल से ही मुनि मानचन्द्र जी ने संयमी-जीवन को पूर्ण निर्मल और जिनाज्ञा के अनुरूप ढालकर अप्रमत्त बनने का संकल्प ले लिया। आपकी दीक्षा के बाद जब गुरुदेव का प्रथम चातुर्मास पीपाड़ में होना निश्चित हुआ, तो पहले चातुर्मास में आपने गुरुदेव की सेवा में ही रहने का निवेदन किया। इसके पीछे यह भी भावना रही कि चातुर्मास में गुरुदेव की सेवा में रहने वाले मुनि श्री छोटे लक्ष्मीचन्द जी महाराज से आहारादि की गवेषणा तथा आसेवना और ग्रहणा शिक्षा के साथ साध्वाचार के सूक्ष्म नियमों का ज्ञान भी हो सकेगा। उस चातुर्मास में उन्होंने जो मुनिश्री छोटे लक्ष्मीचन्द जी महाराज से सीखा उससे उनके संयमी-जीवन का क्रियात्मक पक्ष प्रारम्भ से ही दोषमुक्त और अप्रमत्त रहा।

अक्षय तृतीया पर अक्षय प्रतिज्ञाएँ

अप्रमत्त जीवन जीने के लिए मुनि मानचन्द्र जी ने दीक्षा के दूसरे वर्ष में ही अक्षय तृतीया पर गुरुदेव हस्ती के समक्ष अक्षय प्रतिज्ञाएँ की, जिनमें कारण विशेष के आगार के साथ, प्रमुख प्रतिज्ञाएँ हैं-

1. वय के 50 वर्ष पर्यन्त दिन में आडा आसन नहीं करना।
2. एक दिन में 500 आगम गाथाओं का स्वाध्याय किये बिना और दो थोकड़ों को चितारे बिना शयन नहीं करना।
3. क्रोध नहीं करना और जिस दिन क्रोध आ जाए तो प्रायश्चित्त के रूप में एकाशन अथवा 500 गाथाओं का स्वाध्याय करना।
4. प्रतिदिन दो घण्टे मौन रखना।
5. नूतन गाथाओं और थोकड़ों को सीखना।
6. उपवास, एकाशन, पौरसी आदि के लिए हुए नियमों का निरन्तर पालन करना।
7. आहार मर्यादा का निरन्तर पालन करना।

आचारांग की उक्ति- ''अलं कुसलस्स पमाएणं'' (प्रज्ञाशील साधक अपनी साधना में किंचित् मात्र भी प्रमाद न करे) को वे अपने जीवन में दृढ़ता से आत्मसात् करने में जुट गये। अप्रमत्त बनने की दिशा में जो संकल्प संयम-जीवन के प्रारम्भ में लिये थे, उनका वे आज वृद्धावस्था में भी निरतिचार रूप से पालन कर गुरुदेव की शिक्षा को साकार कर रहे हैं। अस्वस्थता को छोड़कर, आपने दिन में कभी शयन नहीं किया। स्वाध्याय, माला आदि में नियमित-निरन्तर मग्न रहते हैं।

ज्ञानार्जन

प्रथम चातुर्मास आचार्यप्रवर की सन्निधि में करने के बाद वे अधिकतर अपने नेश्राय गुरु की सेवा में ही रहे। चौदह चातुर्मास नेश्राय गुरु पं. रत्न लक्ष्मीचन्द जी महाराज (बड़े) की सेवा में ही हुए। उस समय उनकी सन्निधि में गहन ज्ञानाभ्यास किया। ज्ञान पिपासु शिष्य को पंडित जी महाराज ने आगमज्ञान के साथ-साथ संस्कृत और प्राकृत भाषा ज्ञान में भी निष्णात बना दिया। मुनि मानचन्द्र जी आगमविद् हो गये। उनके आगम ज्ञान से अभिभूत होकर आचार्य भगवन्त ने उन्हें 'पंडित रत्न' के विशेषण से विभूषित किया।

वैयावृत्त्य तप की साधना

जो वैयावृत्त्य की सजगता उन्होंने आचार्य भगवन्त में देखी, वह उनके मन में गहरी पैठ गई थी। जब पंडित जी महाराज साहब बीमार हुए तो उन्होंने पूर्ण लगन और अग्लान

भाव से उनकी सेवा कर उन्हें साता पहुँचाने का अथक प्रयास किया। पंडित जी म.सा. का देवलोक गमन पौष शुक्ला दशमी, वि.सं. 2035 को जोधपुर में हो गया। मुनि मानचन्द्र जी ने श्री चौथमल जी महाराज की सेवा भी इसी लगन और भावना से की जैसी पंडित जी महाराज की की थी। संवत् 2037 में श्री चौथमल जी महाराज का स्वर्गवास हो गया। पंडित जी महाराज और बाबाजी श्री जयन्ती मुनि जी की अस्वस्थता के कारण मुनिश्री के संवत् 2034 से 2039 के सभी चातुर्मास जोधपुर में ही हुए। मुनिश्री ने उस समय बाबाजी महाराज की अति रुग्ण अवस्था में जिस अग्लान भाव से सेवा की, उसे देखने वाले अवाक् रह जाते थे। वे अपने दैनिक नित्यकर्म एवं प्रवचन के उपरान्त रात-दिन उनकी सेवा में ही रहते। यहाँ तक कि प्रवचन के दौरान भी बाबाजी महाराज की सेवा आवश्यक हो जाती तो वे प्रवचन से बिना हिचकिचाहट उठकर उनको सम्भालते। स्थानांग सूत्र में कहा है- ''गिलाणस्स अगिलाए वेयावच्चकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ'' अर्थात् रोगी की सेवा करने के लिये सदा अग्लान भाव से तैयार रहना चाहिए। श्रमणसूर्य मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल मल जी म.सा. ने मान मुनि जी के वैयावृत्त्य के बारे में पद्मश्री सुश्रावक सेठ मोहनमल जी चोरड़िया से उस समय कहा था कि पंचम आरे में चौथे आरे की बानगी देखनी हो तो घोड़ों के चौक, जोधपुर में जाकर मान मुनि जी को देख लो। सेवा का मुनिश्री ने ऐसा अनुपम उदाहरण पेश किया जिससे आने वाली संत पीढ़ी को सेवा धर्म का प्रकाश मिलता रहेगा। बाबाजी महाराज के संवत् 2031 में स्वर्गवास के पश्चात् मुनि श्री के चातुर्मास जोधपुर के बाहर भी होने लगे। त्रिषष्टिशलाका पुरुष में कहा है-''कार्यकृद् गृह्यको जनः'' जो सेवा कार्य करता है लोक उसे पूजते ही हैं। इसी कारण मुनिश्री लोकपूज्य हो गये। उत्तराध्ययन सूत्र में तो यहाँ तक कहा गया है-''वेयानच्चेणं तित्थयरनामगोयं कम्मं **निबंधेइ** '' अर्थात् वैयावृत्त्य करने से जीव तीर्थंकर नाम कर्म गोत्र का उपार्जन करता है। रुग्ण संतों के प्रति उनकी सेवा स्वर्णाक्षरों में लिखने के योग्य है।

उपाध्याय पद का पदाभिषेक

मुनि मानचन्द्र जी का राजस्थान के बाहर पहला स्वतन्त्र चातुर्मास संवत् 2041 में अहमदाबाद में हुआ। संवत् 2045 में दिल्ली चातुर्मास अत्यन्त प्रभावशाली रहा। संवत् 2047 का मुनि श्री का चातुर्मास आचार्य भगवन्त की सेवा में पाली में हुआ, जो आचार्य भगवन्त का अंतिम चातुर्मास था। उसके पश्चात् आचार्य भगवन्त का निमाज में प्रथम वैशाख शुक्ला अष्टमी, संवत् 2048 को तेरह दिवसीय संथारे के साथ देवलोक गमन हो गया। उस समय आचार्य भगवन्त के लेखपत्र के अनुसार आचार्य पद का दायित्व परमश्रद्धेय पंडित रत्न आगम प्रभावक मुनि श्री हीराचन्द्र जी म.सा. को एवं रत्न संघ में

पहली बार उपाध्याय पद परम श्रद्धेय पंडितरत्न शान्त-दान्त प्रबल पुरुषार्थी मुनि श्री मानचन्द्र जी म.सा. को प्रदान करने की घोषणा की गई। उन्हें विधिवत् उपाध्याय पद निमाज में प्रथम वैशाख शुक्ला नवमी, संवत् 2048 को प्रदान किया गया। आचार्य भगवन्त हस्तीमल जी म.सा. के हृदय में मुनि श्री मानचन्द्र जी के लिए कितना गहरा स्थान था इसका पता केवल इसी तथ्य से ही चल जाता है, जब उन्होंने अपने मनोनयन के पत्र में मान मुनि जी को 'श्रद्धेय' शब्द से सम्बोधित किया। वर्तमान आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का आचार्यपद के लिये विधिवत् चादर महोत्सव ज्येष्ठ कृष्णा 5, संवत् 2048 को जोधपुर में हुआ। उपाध्याय श्री ने उन्हें आचार्यपद की चादर प्रदान की।

आत्मगुणों की महक

अपने लम्बे संयमी जीवन में उपाध्याय श्री ने तप को तन के साथ ही नहीं, मन के साथ भी पूरी तरह से जोड़ लिया है। उनका जीवन दीप न केवल स्वयं को ही प्रकाशित कर रहा है, अपितु उनके सान्निध्य में आने वाले प्रत्येक साधकजन को अपरिमित प्रकाश की आभा दे रहा है। वे एक सच्चे साधक के अनश्वर स्वर बन गये हैं। ब्रह्म अर्थात् परमात्म साधना में रत रहने से वे ब्राह्मण हैं, शान्त गुणों से विभूषित होने से संत हैं, इच्छाओं को तज देने से संन्यासी हैं, सत्य को धारण करने से साधु हैं, मौन की साधना से मुनि हैं, प्रबल पुरुषार्थी होने से श्रमण हैं और ऋजु हृदय होने से निर्ग्रंथ हैं। उनका जीवन संयम का एक ऐसा उपवन है जिसका हर पुष्प अपनी मनोहारिणी छटा के साथ अपनी सुगन्ध बिखेर रहा है। बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में यशस्वी संतों की जो उज्ज्वल परम्परा चली थी, उसी पंक्ति में वर्तमान में एक और नाम अपनी रत्नप्रभा से हमें आलोकित कर रहा है। इस संत-रत्न के विशिष्ट गुणों का बखान वर्षों से उनके पावन सान्निध्य में रहने वाले मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी प्रायः अपने प्रवचनों में और यदा-कदा अपने गीतों में करते रहते हैं।

गुण रत्नों की इस खान में अनेक हीरे-मोती निरन्तर आभा बिखेर रहे हैं। दिव्य गुणों से युक्त ऐसे चरितनायक, धर्मोद्योतक, शान्ति, निर्वेद और वैराग्य को उत्प्रेरित करने वाले बिरले, संत के गुणों को समग्र रूप में प्रस्तुत करने की मेरी क्षमता नहीं है। परन्तु ऐसे महापुरुषों के चारित्र का वर्णन करने वाले कर्म निर्जरा करते हुए आत्मोज्ज्वलता की ओर आगे बढ़ते हैं, इसी भावना के साथ-

अपने बिखरे भावों का मैं, गूँथ अटपटा सा यह हार।
चला चढ़ाने इन चरणों पर, जिनका मुझ पर है उपकार।।

ज्ञान और क्रिया का समन्वय

श्रमण जीवन अंगीकार करने के पूर्व ही उनमें धर्म के प्रति अत्यन्त श्रद्धा का भाव

था, इसलिए गृहवास में भी वे अनासक्त बन गये। धर्म के बारे में उनके मन में कोई संशय नहीं था। यही कारण है कि जिस श्रद्धा के साथ उन्होंने अभिनिष्क्रमण किया, साधना पथ अपनाया, उसी श्रद्धा के साथ आज भी वे निर्ग्रंथ मार्ग पर अनवरत गतिमान हैं। आगम की इस उक्ति को कि "जहाँ ज्ञान नहीं, वहाँ चारित्र भी नहीं रहता" उन्होंने अपनी सम्यक् साधना का मंत्र बनाकर प्रारम्भ से ही अपने आपको ज्ञानाराधना में लगा दिया। ज्ञान की उच्च आराधना के साथ-साथ वे धर्म क्रिया के पालन में भी अत्यनत दृढ़ एवं कुशल हैं। ज्ञान, दर्शन और क्रिया के समन्वित आचरण से ही मोक्ष प्राप्त होता है, ऐसा जैन दर्शन का स्पष्ट मन्तव्य है। ज्ञान, दर्शन चारित्र रूप निधि से संयुक्त, उपाध्यायप्रवर भक्तजनों के मन में दिव्य स्फुरणा उद्भासित करते हैं, जिनसे सम्प्रेरित होकर वे अपने जीवन में आध्यात्मिक आनन्द और आन्तरिक परितोष का अनुभव करते हैं।

अप्रमत्तता

दीक्षा के पश्चात जो पहला पाठ उन्होंने गुरु हस्ती से सीखा, वह था- अप्रमत्तता का। चारित्र पालन में जागृति की दृष्टि से प्रमाद की शृंखलाओं को सुदृढ़ करने वाले राग-द्वेष, मोह-तृष्णा, लोभादि कषाय एवं हास्यादि नोकषाय आदि के परिणामों से दूर रहने का संकेत गुरुवर ने दिया था। संयम-यात्रा में साधु को साधनों का उपयोग भी करना होता है, लेकिन उनका यतनापूर्वक उपयोग अप्रमाद की प्रवृत्ति को विकसित करता है। साधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के साथ वे कारण विशेष के अतिरिक्त दिन में नहीं सोते हैं। स्वाध्याय या ध्यान में अपना अधिकांश समय बिताते हैं। वे अत्यन्त मितभाषी हैं। यदि कोई धर्म-चर्चा करता है तो वे उसका समाधान देते हैं, अन्यथा वे किसी अन्य बातचीत से परहेज करते हैं। वे अनुशासन की पालना दृढ़ता से करते हैं। यतना का व्यवहार उनके जीवन में मानो घुल गया है। उनका प्रत्येक कार्य आत्मलक्ष्य के अनुरूप होता है। "मुणिणो सदा जागरंति" (मुनि सदा जाग्रत रहते हैं)-आगमसूत्र उनके जीवन में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। भारण्ड पक्षी की तरह निरालस्य विचरते हुए वे एक प्रमाद रहित श्रमण हैं जो वृत्ति में अन्तर्मुखता संजोये बड़े सौम्य प्रतीत होते हैं। अर्ध शताब्दी से एक नगर से दूसरे नगर, एक गाँव से दूसरे गाँव निरन्तर पद-यात्रा करते हुए वे जैन साधना-पद्धति की सम्यक् प्रभावना कर रहे हैं। उनके जीवन का उद्बोधन है कि अनित्य के प्रति सजग रहने में ही, अनित्य के प्रति निसंग बनाए रखने वाली प्रज्ञा समाई हुई है। अनित्य के प्रति निसंग होकर ही नित्य का साक्षात्कार किया जा सकता है। शील, समाधि और प्रज्ञा का परम परिशुद्ध धर्म को जीने वाला यह संत अपने भीतर में जगी अनित्य बोध की चेतना दे रहा है। यही उनका चित्त विशोधन का मंगल संदेश है। यही बंधन को बंधन समझकर उससे मुक्त होने के लिए अनासक्ति की ओर

उन्मुक्त होकर मन को वीतरागता की ओर मोड़ने का गुरुमंत्र है। 'श्रेयस' यानी आत्मसुख का मार्ग और 'प्रेयस' यानी लौकिक सुख का मार्ग- दोनों ही हमारे सामने हैं। उपाध्याय भगवन्त जैसे धीर पुरुषों ने प्रेयस की अपेक्षा श्रेयस मार्ग को चुना है और उसी पर अबाध गति से गतिमान हैं।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि दीक्षा के तुरन्त पश्चात् ही मुनि मान ने बहुत बड़ा लक्ष्य अपने सामने रखा- आत्म-कल्याण का, जो जीवन का सर्वोत्तम प्राप्य है, उसे साधूँ मन को नियन्त्रित कर तन्मयता पूर्वक आत्मचिंतन में लीन रहूँ और आगमज्ञान को स्वायत्त करूँ। इसी उद्देश्य से उन्होंने गुरु हस्ती से निवेदन किया कि अक्षय तृतीया पर मुझे कुछ अक्षय प्रतिज्ञाएँ दिलाएँ। आत्मवेत्ता आचार्य संयम जीवन की सच्चाई को समझते थे, अतः उन्होंने उनको अक्षय तृतीया पर अक्षय प्रतिज्ञाएँ दिला दी। फिर तो जैसे शब्द के पीछे अर्थ की परम्परा चलती है वैसे ही उन प्रतिज्ञाओं के बाद मुनि मान की साधना चलने लगी। प्रबल पुरुषार्थ पूर्वक आचरित साधना, आगम के अध्ययन में जागरूकता तथा दैनन्दिन साधुचर्या में अनालस्य व तत्परता, इन तीनों ने मुनि मान का स्थान आध्यात्मिक दृश्टि से बहुत ऊँचा कर दिया। इनका जीवन वृत्त प्राचीन श्रमण-जीवन का साक्षात् स्मरण करा देता है। इनकी साधना में निर्वेद तथा भक्ति की रसधारा छलकती है। यह करुणा के जल से सिंचित है, ज्ञान की दिव्य ज्योति से उद्दीप्त है, प्रज्ञा से अमल धवल है, सात्त्विक वात्सल्य से अनुरंजित है और आत्मज्ञान की किरणों से उद्भासित है। **(क्रमशः)**

-14, वरदान अपार्टमेंटस्, 64, इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

सदस्यों को सूचना

जिनवाणी के स्तम्भ सदस्यों एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित साहित्य के आजीवन सदस्य महानुभावों से निवेदन है कि उन्हें सदस्यता ग्रहण करते समय मण्डल कार्यालय में उपलब्ध सम्पूर्ण साहित्य प्रेषित कर दिया गया था। किन्हीं कारणों से किसी सदस्य महानुभाव को मण्डल से प्रकाशित पुस्तक 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के चारों भाग यदि प्राप्त नहीं हुए हैं और जो सदस्य इसकी आवश्यकता को अनुभव करते हैं तो वे सदस्य अपने सदस्यता नम्बर, पूर्ण पता मय फोन नम्बर सहित पत्र लिखकर मण्डल कार्यालय को भिजवा दिरावें, जिससे उनकी सेवा में मण्डल से प्रकाशित पुस्तक 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के संक्षिप्तीकरण का सेट भिजवाया जा सके।

-विरदराज सुराणा-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.)

गीत

शासन मिला प्रभु का

श्रद्धेय मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

परमश्रद्धेय मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा 26 फरवरी, 2012 को चरकड़ा (नोखा) में मध्याह्नकाल में उच्चारित इस गीत को श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, जयपुर द्वारा संकलित किया गया।-सम्पादक

(तर्जः- मुझे इश्क है.... अथवा इन्साफ की डगर.......)
(स्वर- मेरा आप की कृपा से.......)

शासन मिला प्रभु का, सौभाग्य है हमारा।
आराधना हो ऐसी, नहीं जन्म लें दुबारा।।
शासन मिला.....।। टेर।।

रिश्ते अनन्त हमने, हर जीव से बनाये।
कोई जगह न ऐसी, जहाँ पर न जन्म पाए।
चारों गति भटकते, नहीं पा सके किनारा।।
शासन मिला.....।। 1।।

नरभव मिले थे पहले, उपयोग कर न पाये।
सम्यक्त्व में ही जीता, वो भावना न लाये।
हर कीमती समय को, अज्ञान में गुजारा।।
शासन मिला.....।। 2।।

आओ रचें अभी हम, संकल्प की कहानी।
प्रतिकूलता हो कैसी, बनना है पूर्ण ज्ञानी।
संयम की राह चलके, छोड़ें प्रमाद सारा।।
शासन मिला.....।। 3।।

कई जन्म की ये करणी, पाया सुयोग सारा।
'गौतम' से कहते प्रभुवर, लो सत्य का सहारा।
पाकर रहोगे मुक्ति, पंचम हो चाहे आरा।। 4।।
शासन मिला.....।। 4।।

प्रासङ्गिक

साधनासुमेरु निरासक्तयोगी उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी *

श्री ज्ञानेन्द्र बाफना, सी.ए.

श्रमण भगवान महावीरस्वामी के इस जिनशासन को ज्योतिर्धर आचार्यों, ज्ञानगरिमायुक्त वाचनाचार्यों एवं तपःपूत साधकों ने जयवन्त रखा है। समय-समय पर इसमें उतार-चढ़ाव आते रहे हैं, पर निर्ग्रंथ-परम्परा के निस्पृह साधकों ने अपने ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आभा से इसे पुनःपुनः उत्थान के पथ पर गतिशील किया है।

बीसवीं सदी के उतरार्द्ध में श्रमण भगवान महावीर की इस यशस्वी निर्ग्रंथ श्रमण परम्परा में एक से बढ़कर एक साधक सन्त रत्न हुए, जिन्होंने अपनी ज्ञानज्योति की प्रभा, दर्शन की विशुद्धि एवं चारित्र की तेजस्वितायुत संयम-आराधना के आलोक में जिनशासन का यश सौरभ फैलाते हुए उसकी गौरव गरिमा बढ़ाने में अपना महनीय योगदान किया। समूचे आर्यावर्त को अपनी पावन चरण रज से पवित्र करते हुए उन्होंने जिनवाणी की पावन गंगा प्रवाहित की तथा लक्षाधिक व्यक्तियों को जिनशासनरसिक बनाते हुए उनमें धर्म-चेतना के प्राण फूंके और उन्हें सच्चे शिवपथ की राह दिखाते हुए स्व-पर का कल्याण किया। उन श्रमणवरेण्यों की स्वर्णिम सूची में युगमनीषी युग प्रभावक यशस्वी मनस्वी ज्ञान-दर्शन-चारित्र के बेजोड़ संगम, श्रद्धा आराधना व प्रभावना के विलक्षण सुमेरु प्रातः स्मरणीय गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का नाम श्रमण-परम्परा के अग्रगण्य महापुरुषों द्वारा भी पूर्ण समादर के साथ लिया जाता है।

उन तपःपूत आत्म आराधक साधनापुञ्ज महापुरुष का यश सौरभ जहाँ एक ओर अपने उपदेशों व प्रेरणाओं के रूप में आज भी स्मरणीय है, वहीं दूसरी ओर वे अपने अन्यतम शिष्य जिनशासन गौरव आगमज्ञ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., शान्त दान्त गम्भीर प्रज्ञा पुरुष पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं विशुद्ध संयम आराधक शिष्य परम्परा के रूप में आज भी मानो सशरीर जीवन्त हैं।

जिनका नाम लेते ही मन में आह्लाद उत्पन्न होता है, श्रद्धा से मस्तक अवनत हो जाता है, जिनके पावन दर्शन मात्र से हृदय में आस्था, आनन्द व प्रसन्नता प्रस्फुटित होने

* वैशाख शुक्ला 13, शुक्रवार, 4 मई, 2012 को उपाध्यायप्रवर के 50 वें दीक्षा-दिवस के अवसर पर प्रकाशित।

लगती है, जिनका सारभूत संक्षिप्त उद्‌बोधन भी आगमों के गहन ज्ञान को सरल शब्दों में अभिव्यक्त कर देता है, जिनके द्वारा दिये गये हित शिक्षा के दो बोल भी जीवन की राह बदल देते हैं, नाम जिनका भले ही ''मानचन्द्र'' है, पर जिन्हें अभिमान छू भी नहीं पाया है, पद परिचय एवं प्रतिष्ठा की जिन्हें कभी भी अभिलाषा ही नहीं रही, सेवा, स्वाध्याय एवं समर्पण ही जिनके जीवनादर्श हैं, ऐसे सरल, विरल एवं भक्त समुदाय की श्रद्धा के केन्द्र का नाम है परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.।

आपका जन्म वि.स.1991 माघ कृष्णा चतुर्थी के दिन सूर्यनगरी जोधपुर में यशस्वी सेठिया परिवार में सरलता एवं श्रद्धा के धनी धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न श्री अचलचन्द जी की धर्मशीला धर्मपत्नी श्रीमती छोटा बाई जी की रत्नकुक्षि से हुआ। बाल्यकाल से ही सन्त समागम, पारिवारिक वातावरण व प्रवचन श्रवण का सुखद संयोग पाकर पूर्व जन्मों के संचित संस्कार जागृत हुए एवं आपके हृदय में असार संसार से विरक्ति के अंकुर प्रस्फुटित हुए। मुझे संसार में नहीं फंसना है, यह भावना आपके अंतर्हृदय में निरन्तर बलवती होती गई, आप अपना अधिकतम समय धर्मध्यान में ही व्यतीत करने लगे। पुण्यात्माओं की अभिलाषा एवं मनोरथ की पूर्ति के सुखद संयोग सहज ही बन जाया करते हैं। आपके पुण्योदय से वि.स. 2018 में परमपूज्य आचार्य भगवन्त (उस समय श्रमण संघ के उपाध्याय) पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. प्रभृति संत भगवंतों का मंगलमय चातुर्मास सिंहपोल, जोधपुर में हुआ। पूज्य श्री का चुम्बकीय आकर्षण, उनका मंगलमय सान्निध्य एवं पण्डित रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचन्द जी म.सा., सेवा एवं संयम के पर्याय श्री छोटे लक्ष्मीचन्द जी म.सा. की व श्री सुगनचन्द जी म.सा. की आत्मीय प्रेरणाएँ मानो आपके लिये अपने लक्ष्य को निश्चय में तथा अंतर अभिलाषा को मनोरथ में परिणत करने का निमित्त बन गई। पूज्य गुरुदेव के अनन्य भक्त धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मोतीमल जी भंड़ारी (रावतों का बास में जिनके पड़ौस में ही आपका मकान था) के माध्यम से आपकी भावना गुरुदेव के ध्यान में आई।

परम पूज्य भगवन्त की हित शिक्षा एवं श्रद्धेय श्री छोटे लक्ष्मीचंद जी म.सा., श्री सुगनचन्द जी म.सा प्रभृति संतों की आत्मीयता मानो आपके शिवपथ पर बढ़ने में पाथेय बन गयी। बस प्रथम कदम आगे बढ़ाने के रूप में आपने इसी चातुर्मास में आबाल ब्रह्मव्रती परम पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से आजीवन शीलव्रत अंगीकार कर लिया। माता-पिता एवं परिजनों को ज्ञात होने पर पूछा- ''कहा ही नहीं।'' आपश्री का संक्षिप्त पर सारगर्भित दृढ़ निश्चयात्मक प्रत्युत्तर था-'' क्या कहना? दीक्षा लेवां जणां पूछां।'' मानो इतिहास जीवन्त हो गया। इतिहास के आलोक में प्रकाशित है- आर्य जम्बू पूज्य सुधर्मा के चरणों में

उपस्थित होते हैं, मंगलमय देशना श्रवण कर उनकी चरण शरण में दीक्षित होने की भावना व्यक्त करते हैं व माता-पिता की अनुज्ञा लेने हेतु पुनः अपने भवन की ओर लौटते हुए नगर द्वार पर लटकते संहारक शस्त्रों को देख मन ही मन सोचते हैं "इन शस्त्रों में से यदि कदाचित् एक भी शस्त्र मेरे रथ पर गिर जाए तो बिना व्रत ग्रहण के ही मेरी मृत्यु सुनिश्चित है, जिससे मैं दुर्गति का अधिकारी हो सकता हूँ।" तुरन्त आर्य जम्बू आर्य सुधर्मा की सेवा में पहुँच कर आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण करते हैं।

सच्चा साधक सच्चा त्यागी कदम आगे बढ़ाने में प्रमाद नहीं करता है। जिनशासन की सेवा में दीक्षा के लिये माता-पिता की आज्ञा का विधान है, पर व्रत ग्रहण के लिये ऐसी कोई बाधा नहीं है, स्वाधीनता से स्वीकार किया गया त्याग ही त्याग है, इसमें व्यक्ति स्वाधीन है। अस्तु मानचन्द्र जी भी निरन्तर आगे बढ़ते रहे।

चातुर्मास समाप्त हुआ, पूज्यपाद का विहार हुआ। गुरुदेव के संकेतानुसार आप श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ में सेवारत हुए। मानो ममता त्याग का अभ्यास करने हेतु गुरुदेव ने मानचन्द्र को पहले असंग (परिजनों से) बनाया जिससे अनासक्ति स्वयं स्फुटित हुई और आगे चल कर जब अकिंचन अवस्था की दहलीज को छूटे हुए देखा तो अपने समान निर्ग्रंथ बना दिया। यही तो जिनशासन एवं पंचपरमेष्ठी की महिमा है जो अपनी शरण में आये को शरणागत से शरणदाता बना देते हैं।

मानचन्द्र जी का अध्ययन अभ्यास प्रारम्भ हुआ। असंगता, अनासक्ति एवं एकान्तशीलता की भावना वृद्धिंगत होती गई। आपके भोपालगढ़ रहते एकदा तेरहपंथी संतों का आगमन हुआ। आपकी वैराग्य भावना जानकर सहज ही पूछा- "आपकी वैराग्य भावना है तो आप यहाँ क्यों बैठे हो?"

यह छोटा सा निमित्त उपादान को जगाने में सहायक बन गया और आप जोधपुर आकर गुरुदेव की सेवा में रहने की भावना से उदयपुर पधारे। उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. के दर्शन करने के उपरांत वहाँ से एक श्रावक परिवार के साथ न्यायमूर्ति श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री सोहननाथ जी मोदी के बंगले आये, जहाँ परम पूज्य गुरुदेव विराज रहे थे। बस यहीं से गुरु शरण में रहने की साधना प्रारम्भ हुई। वैराग्य-साधना प्रारम्भ होते ही मानो आपकी परीक्षा हुई। जोधपुर से समाचार मिले कि श्री मोहनलाल जी मेहता (फूफाजी) का देहावसान हो गया है। बुआ सा से मिलना था, पर मुमुक्षु मान ने यही लिखा- "अभी सेवा में हूँ, वहाँ आऊँगा तब मिल लूंगा।" कैसी उदासीनता, असंगता।

अगला चातुर्मास गुरुदेव का सैलाना में था। आपका अभ्यास निरन्तर बढ़ता रहा। चातुर्मास का कुछ काल बीतने पर गुरुदेव ने फरमाया- अब दीक्षा की तैयारी करें। मानो

एक योग्य कुम्भकार जान चुका था- यह माटी अब एक मंगल घट बनने योग्य बन चुकी है। जोधपुर में सेठिया जी को संकेत किया गया। उन्होंने प्रत्युत्तर दिलाया- मैं स्वयं आने की भावना रखता हूँ। पिताश्री अचलचंद जी सेठिया गुरु दर्शनार्थ पधारे। आपकी वैराग्य की दृढ़ता जानकर धर्मनिष्ठ गुरुभक्त, श्रावकरत्न वीर पिता ने सहज आज्ञा प्रदान की। धर्म दलाली का अपूर्व लाभ लिया, पर इनकी भावना अपने गृहनगर जोधपुर में दीक्षा महोत्सव की थी। पूज्यपाद का जोधपुर पुनः पदार्पण हुआ। वि.स. 2020 वैशाख शुक्ला त्रयोदशी को जोधपुर में आपने पूज्य माता-पिता, छह भाइयों व तीन बहिनों के भरे पूरे परिवार के सांसारिक मोह बन्धन का परित्याग कर परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के मुखारविन्द से भागवती श्रमण दीक्षा अंगीकार की।

महामंदिर में बड़ी दीक्षा के समय महाव्रतों में आरोहण कराते हुए परम पूज्य गुरुदेव ने आपको बाबाजी श्री सुजानमल जी म.सा. का पौत्र शिष्य घोषित किया। अनन्य कृपालु, कृपासिन्धु जिस महापुरुष ने जीवन में किसी का उपकार विस्मृत नहीं किया तथा अपने पर किसी का भी कोई ऋण नहीं रखा। स्वामी जी श्री सुजानमल जी म.सा. जिन्होंने आपश्री के विधिवत् चादर ओढ़ने तक अंतरिम काल में संघ शासन का दायित्व निर्वहन किया; ज्येष्ठ होकर भी जिन्होंने आचार्य पद का सम्मान कर आपको पूर्ण स्नेह, संरक्षण व समादर दिया, उनके उपकार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना एवं अपने सहयोगी ज्येष्ठ संत (एवं स्वामी जी म.सा. के सुशिष्य) पं. रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचंद जी म.सा. को सहयोग व गुरु की सारणा-वारणा धारणा हेतु आपने मुनि मानचन्द्र जी को स्वामीजी का पौत्र शिष्य घोषित किया।

दुर्लभ संयमधन, ज्ञान-दर्शन-चारित्र के साकार स्वरूप गुरु भगवंतों का सान्निध्य पाकर आपने समग्र जीवन ही ज्ञानार्जन, गुरुचरणसमर्पण एवं निरतिचार संयम पालन हेतु समर्पित कर दिया। आगमों के तलस्पर्शी ज्ञान के साथ ही थोकड़ों के गहन ज्ञान से आप शीघ्र ही ज्ञानपिपासु, जिज्ञासुओं की श्रद्धा के केन्द्र बन गये। निर्मल संयम-साधना, सहज, सरलता, निरभिमानता एवं उत्कृष्ट वैराग्य तथा वैय्यावृत्त्य से आप श्रमण वरेण्यों के स्नेह भाजन बन गये। आपके संयम-सौरभ के प्रति अन्यान्य श्रमण वरेण्यों द्वारा भी सहज प्रमोद भावना अभिव्यक्त होती रही है। समताविभूति परमपूज्य आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का ईस्वी सन् 1978 का चातुर्मास घोड़ों का चौक, जोधपुर में था। आपश्री का चातुर्मास भी साथ में ही था। आपके गुणों से आकृष्ट हो आचार्य श्री ने फरमाया- "कौन कहता है आप मानमुनि हो, मैं तो आपको विनयमुनि मानता हूँ।"

पूज्य मरुधर केसरी जी म.सा. ने पद्मश्री मोहनमल जी चोरड़िया को दिशा निर्देश

करते हुए फरमाया कि- ''इस पंचम आरे में चौथे आरे की बानगी के रूप में किसी संत को देखना हो तो घोड़ा का चौक में सेवारत मानमुनि जी को देखना।

दीक्षादाता गुरुदेव पूज्यपाद आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के हृदय में आपका कैसा स्थान था, इसके लिये दो उदाहरण ही पर्याप्त हैं- प्रथम तो आचार्य-उपाध्यायपद मनोनयन के पत्र में भगवन्त द्वारा आपके नाम के पूर्व 'श्रद्धेय' शब्द का उल्लेख। दूसरा- सोजत में आप गुरुदेव की सेवा में साथ में थे, एकान्तप्रिय स्वभाव से आप ऊपर विराजते। गुरुदेव ने ऊपर से बुलाया और आपको फरमाया-''आप सोचते हो, आप पर जिम्मेदारी नहीं है, पर सब जिम्मेदारी आप पर ही है।''

यह था पूज्यपाद का आपके प्रति स्नेह, आप पर भरोसा एवं आपकी शासन समर्पण के प्रति प्रतिबद्धता व क्षमता पर दृढ़ विश्वास। यह इस यशस्विनी रत्न संघ परम्परा की अनूठी विशेषता है कि यहाँ प्रारंभ से ही बड़े वरिष्ठ संतों, जिनकी ज्ञान गरिमा अतुलनीय रही है, जिनका प्रभाव आचार्य भगवंतों के समतुल्य ही रहा है, ने सदा अपने आचार्यों के प्रति स्नेह, संरक्षण, समादर एवं सहयोग प्रदान करते हुए परम्परा का यश सम्वर्द्धन करने में अपना महनीय योगदान दिया है। परम्परा के मूल पुरुष पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी म.सा. जीवनपर्यन्त ज्येष्ठ गुरुभ्राता आचार्य श्री जयमल जी म.सा. के प्रति समर्पित रहे। पूज्य दुर्गादास जी म.सा. सदा अपने शिष्यतुल्य पूज्य आचार्य श्री रतनचन्द्र जी म.सा. को पूज्य संबोधन देते रहे। स्वामीजी श्री दलीचंद जी म.सा., पूज्य श्री नन्दलाल जी म.सा. वादी मर्दन श्री कनीराम जी म.सा., चंदन सम शीतल श्री चंदनमल जी म.सा., विरल अभिग्रहकर्त्ता तपस्वी श्री बालचन्द्र जी म.सा., स्वामीजी श्री सुजानमल जी म.सा. की ही कड़ी में आप वर्तमान संघनायक आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. को अपना पूर्ण स्नेह, सहयोग व समादर प्रदान करते हुए रत्नवंश परम्परा में गौरवाभिवृद्धि कर रहे हैं।

निम्बाज में जब पूज्यपाद का पत्र पढ़ा गया व आपको 'उपाध्याय पद' से विभूषित किया गया, तब मैंने पूज्य गुरुदेव की जय, उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. की जय, आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. की जय का निनाद किया। परम पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के चादर महोत्सव तक यह क्रम चलता रहा। आचार्य श्री की चादर महोत्सव पर आपने स्वयं आगे होकर पहले आचार्यश्री की जय बोलने का निर्देश दिया। यह है आपश्री की निस्पृहता, संघनिष्ठा व आचार्य पद के प्रति सम्मान का उदाहरण।

ज्ञान गरिमा के साथ वैय्यावृत्त्य, सदा प्रसन्नतायुक्त आनन, स्थितप्रज्ञता, गम्भीरता, सहजता, सरलता आपके विशिष्ट गुण हैं। ज्ञान के साथ विनय, विद्वत्ता के साथ वैय्यावृत्त्य, पद व प्रभावकता के साथ सहजता आपके जीवन में मणिकांचन संयोग कहे जा

सकते हैं।

पं. रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचंद जी म.सा., स्वामी जी श्री लाभचंद जी म.सा., पं. रत्न श्री चौथमल जी म.सा., बाबाजी श्री जयन्तमुनि जी म.सा. प्रभृति महापुरुषों की आपने जिस अतिशय उत्साह, अग्लानभाव एवं श्रद्धाभाव से सेवा की है वह रत्नवंश के स्वर्णिम इतिहास का गौरवशाली अध्याय है।

आपश्री के इन गुणों से समूचा जैन जगत प्रभावित है। परम पूज्य गुरुदेव को संथारे के प्रत्याख्यान भी आपके ही श्रीमुख से हुए। प्राज्ञ सम्प्रदाय के आचार्य श्री सोहनलाल जी म.सा. एवं वर्तमान आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. को चादर ओढ़ाने का भी सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ है।

गुणसमुद्र महापुरुषों के गुणों को लिपिबद्ध करना अथवा वाणी से प्रकट करना संभव नहीं है। आप स्वयं का ही कथन स्मरण हो रहा है- ''महापुरुषों के गुणगान करना केवली भगवंतों के लिये भी संभव नहीं, पर उनके गुणों को धारण करना संभव है।''

आपकी प्रतिभा एवं योग्यता को देखकर परमपूज्य गुरुदेव ने अहमदाबाद और दिल्ली जैसे बृहत् क्षेत्रों में आपके स्वतंत्र चातुर्मास स्वीकृत किये, जिनमें ज्ञान-क्रिया का सुन्दर स्वरूप देखकर वहाँ के संघ अत्यंत प्रभावित हुए। दिल्ली के श्रावक तो कहने लगे- जब मानचंद्र जी म.सा. ज्ञान क्रिया में इतने ऊँचे हैं तो इनके गुरुदेव कैसे होंगे। उपाध्याय पद आरोहण के पश्चात् आप जोधपुर (वि.सं. 2048), मदनगंज (वि.सं. 2055), जलगांव (वि.सं. 2057) तथा धुलिया (वि.सं. 2058) में श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के साथ आपके चातुर्मास रत्नवंश की यशस्विनी परम्परा की गौरवगरिमा को आगे बढ़ाने वाले रहे। आपने वि.स. 2049 में भीलवाड़ा, वि.स. 2050 में कोटा, वि.सं. 2051 में कंवलियास, वि.सं. 2052 में पाली, वि.सं. 2053 में कोसाणा, वि.सं. 2054 में जयपुर, वि.सं. 2056 में सवाईमाधोपुर, वि.सं. 2059 में होलनांथा, वि.सं. 2060 में जोधपुर, वि.सं. 2061 में जयपुर, वि.सं. 2062 में बालोतरा, वि.सं. 2063 में पीपाड़, वि.सं. 2064 में भोपालगढ़, वि.सं. 2065 में सिवाना, वि.सं. 2066 में ब्यावर, वि.सं. 2067 में गोटन, वि.सं. 2068 में नागौर के यशस्वी चातुर्मास आपके साधनातिशय, निर्मल निरतिचार संयमनिष्ठा, निरभिमानता प्रभृति आत्मगुणों की छाप जनमानस पर अंकित करने में सफल रहे। इस वर्ष का आपका चातुर्मास मेड़तासिटी घोषित हुआ है। आपके निर्मल संयमजीवन की आभा निरन्तर वृद्धिंगत होती रहे, इसी भावना के साथ दीक्षा स्वर्ण जयन्ती के पावन प्रसंग पर आपका पुनः अभिनन्दन, आपके चरण सरोजों में कोटिशः वंदन।

-सी-55, शास्त्रीनगर, जोधपुर-342003 (राज.)

साक्षात्कार

अनासक्ति एवं वैराग्य की प्रतिमूर्ति उपाध्यायप्रवर*

श्री ज्ञानेन्द्र बाफना, सी.ए.

प्रश्न– आपको वैराग्य कैसे जागृत हुआ?

उत्तर– बचपन से ही यह भावना रही– संसार में नहीं फंसना, इसलिये धर्मध्यान करता रहा।

प्रश्न– परमपूज्य गुरुदेव की सेवा में आने व समर्पित होने का संयोग कैसे बना?

उत्तर– पूज्य गुरुदेव का वि.सं. 2018 में जोधपुर की सिंहपोल में चातुर्मास था। चातुर्मास में सुज्ञ श्रावक श्री मोतीमलजी भंड़ारी के माध्यम से मेरी भावना गुरुदेव को ज्ञात हुई और उनकी सेवा में रहने का सुयोग बना।

प्रश्न– आपका वैराग्य काल कितना?

उत्तर– जब तक वीतराग न बन जायं, तब तक वैरागय काल ही है।

प्रश्न– आपको दीक्षा की आज्ञा में क्या कोई कठिनाई आई?

उत्तर– नहीं! पिताजी की भावना थी कि मेरे सात पुत्र हैं, कोई भी दीक्षा लेना चाहे तो सहज आज्ञा है। मुझे उनकी सहज आज्ञा प्राप्त हुई, कोई कठिनाई नहीं हुई।

प्रश्न– आपने 50 वर्ष की संयम यात्रा में क्या पाया?

उत्तर– महापुरुष तो संयम की एक घड़ी को भी देवोपम सुखों से भी अनुपम और मूल्यवान फरमाते हैं। मैं तो अभी इस पथ का पथिक हूँ जिसमें पाना नहीं खोना होता है। मुझे इस संदर्भ में एक संन्यासी की बात याद आ रही है जिसमें उनसे भी यही प्रश्न किया गया कि आपने क्या पाया? प्रत्युत्तर था–"संन्यास मार्ग पाने का नहीं वरन् खोने का मार्ग है।" पाये हुए तो हैं ही, जीवमात्र में अनन्त चतुष्टय की सत्ता विद्यमान है, बस उसके प्रगटीकरण की जरूरत है जो दोषों को खोने से ही संभव है। जैसे पत्थर के अन्दर प्रतिभा विद्यमान है बस उसके ऊपर, आसपास रहे अनावश्यक तत्त्व को हटाने की जरूरत है। दोषों को खोते जायें, आत्मा को खोजते जायें तो एकदिन परमात्मा को पा जायेंगे (बन जायेंगे)। बाहर में खोजने

* नागौर में 22 अप्रेल, 2012 को संघसेवी श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना द्वारा उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में कृत साक्षात्कार।

वाला स्वयं को खो देता है। भीतर में खोदने वाला स्वयं में खो जाता है, स्वयं में खोते-खोते वह परमात्मस्वरूप हो जाता है।

प्रश्न- श्रद्धावान भक्त जब आपको वंदना अर्ज कर सुखसाता पूछता है तो आप सहज भाव से ''आनन्द है'' यही फरमाते हैं। श्रद्धालुजनों को ''आनन्द है'' यह शब्द बहुत ही आनन्ददायक, शान्तिप्रदायक एवं प्रसन्नतादायक लगता है। क्या यह फरमाने के पीछे आपका कोई अन्य आशय है?

उत्तर- सांसारिक लोगों को सदैव समस्याग्रस्त देखता हूँ तो मुझे संयम में आनन्द स्पष्टतः अनुभव में आता है। सिद्धों का आनन्द ही अक्षय, अव्याबाध एवं अनिर्वचनीय है। प्रत्येक साधक का लक्ष्य 'सिद्धि' ही है जो संयम से ही संभव है। संयम ही समस्त दुःखों का समाधान है। इसलिये मैं सहज भाव से आगन्तुक को समाधानस्वरूप ''आनन्द है'' शब्द का उच्चारण करता हूँ।

प्रश्न- गुरुदेव आपको जब-जब पंडितरत्न की उपाधि से संबोधित करते हैं, आप कैसा अनुभव करते हैं?

उत्तर- आगमकार हर संयमी को पंडित ही कहते हैं। जो पाप से डरता है, वह पंडित होता है। गुरुदेव इस संबोधन के माध्यम से हमें पाप से डरने व शुद्ध संयम पालन करने का उद्बोधन देते हैं। इसे मैं उनकी विशेष कृपा के रूप में ग्रहण करता हूँ।

प्रश्न- आप प्रत्येक उपलब्धि को गुरुदेव की कृपा का प्रसाद मानते हैं, तो उनके इस ऋण से कैसे उऋण होना चाहेंगे?

उत्तर- प्रथम तो मैं अपने आपको इस योग्य नहीं पाता हूँ कि उनके उपकार का आंशिक बदला भी चुका सकूँ तथापि कोशिश करूँगा कि पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त अमूल्य रत्नत्रय को अनन्तता की दिशा में बढ़ाकर उनके समान ही अनन्त बना सकूँ। गुरु के गुण व उपकारों का वर्णन करना केवली भगवंतों द्वारा भी संभव नहीं, पर उनके गुणों को धारण करना संभव है।

प्रश्न- आप समाज सुधार और जागृति अभियान जैसे क्रियात्मक प्रवृत्ति में भाग लेते दृष्टिगत नहीं होते हैं, इसके पीछे कोई विशेष प्रयोजन या कारण?

उत्तर- प्रारम्भ से ही मेरी इसमें कोई रुचि नहीं रही है। मुझे तो गुरुदेव की यही पंक्ति सदा स्मरण में रहती है-''निज सुधार से देश जाति सुधरी हो जावेला'' (करलो सामायिक को साधन, जीवन उज्ज्वल होवेला......भजन)

प्रश्न- आप अपना आदर्श किसे मानते हैं?

उत्तर- परमभाव में स्थित परमेष्ठी भगवंतों को मैं अपना आदर्श मानता हूँ। अरिहंत की

आज्ञा, सिद्धों की साक्षी, आचार्यों का आचार, उपाध्यायों के उपदेश व श्रमण निर्ग्रंथों की साधना को मैं अपना आदर्श मानता हूँ। पंचपरमेष्ठी स्वरूप परमपूज्य गुरुदेव आचार्यश्री हस्ती जिन्होंने इस जीवन में आचार्य, उपाध्याय व साधु इन तीन पदों को धारण किया तथा भक्तजन जिनमें अरिहंत व सिद्ध की झलक देखते हैं, को मैं अपना आदर्श मानता हूँ।

प्रश्न– आपके जीवन में किन–किन का विशेष उपकार रहा है?

उत्तर– प्रकृति के प्रत्येक द्रव्य का एक दूसरे पर उपकार रहता ही है। इस जीवन में जीवन–निर्माण को लेकर, आज्ञा प्रदाता माता–पिता जिन्होंने गुरुदेव की अंगुली थमा दी, प्रथम उपकार है। दीक्षादाता गुरुदेव आचार्य हस्ती जिन्होंने दीक्षा देते ही यह कह कर कि–" प्रमाद तो जीवन में आने वाला ही है, अप्रमत्त रह कर बताओ" अप्रमत्तता की राह दिखाई उनका दूसरा विशेष उपकार है। शिक्षा गुरु श्री छोटे लक्ष्मीचन्द जी म.सा. जिन्होंने ग्रहणा, आसेवना आदि शिक्षाओं के माध्यम से संयमचर्या सिखाई एवं परम उपकारी गुरुदेव पं. रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचंद जी म.सा. जिन्होंने इस जीव का माली की भांति संवर्द्धन व संरक्षण किया, बुझे हुए दीपक में अपने वात्सल्य का स्नेह भरकर जिन ज्योति से ज्योतित किया जिसको लेकर मैं आज भी संयम–जीवन में आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा हूँ, का विशेष उपकार है।

–सी–55, शास्त्रीनगर, जोधपुर–342003 (राज.)

आचार्य हस्ती के अनमोल वचन

संकलन–सौ. कमला सिंघवी

1. समभाव की प्राप्ति हो जाना शान्ति–प्राप्ति का मूल मंत्र है।
2. मानसिक शक्ति के सदुपयोग से अलौकिक शांति प्राप्त होती है।
3. सत्संग से श्रवण, ज्ञान, विज्ञान, प्रत्याख्यान, संयम, अनास्रव, तप, कर्म का अबंध, अक्रिया व सिद्धि का लाभ प्राप्त होता है।
4. सच्चा साधक अपने दोष के लिये दूसरे को उत्तरदायी नहीं ठहराता।
5. ज्ञान–दर्शन आदि निजगुण ही आत्म–धन है।
6. भजन करने से अनेक भवों के संचित दुष्कर्म नष्ट हो जाते हैं।
7. वीतराग की प्रार्थना क्षीरसागर का मधुर अमृत है।
8. सामायिक एवं स्वाध्याय साधन है और समाधि साध्य है।
9. शास्त्र ही मनुष्य का वास्तविक नयन है।

–जैन पाठशाला ज्ञान मंदिर, भड़गांव (महा.)

गीत

जिनवाणी को उर में धारो, करो धर्म से प्रीत रे

श्री मोहन कोठारी "विनर"

जिनवाणी को उर में धारो, करो धर्म से प्रीत रे,
जीवन अपना जग जायेगा, पा करके नवनीत रे।
जिनवाणी को.....।।टेर।।

दुनिया में एक धर्म ही है जो, सबका सच्चा साथी है,
इस भव में और पर भव में भी जलती जिसकी बाती है।
अच्छा करो और अच्छा पाओ, यही धर्म की नीति रे,
जिनवाणी को.....।।1।।

रागद्वेष मत रखना मन में, मन बोझिल हो जाता है,
बात-बात में रोष है आता, नहीं धैर्य रह पाता है।
प्रेम भाव रखो सबसे तुम, रहे सभी मनमीत रे,
जिनवाणी को.....।।2।।

गुरु चरणों में आने से ही, सच्ची राह मिल जाती है,
गुरु की वाणी ही अंतर में धर्म की लौ जगाती है।
अन्तर अपना निर्मल करलो, गूंजे धर्म संगीत रे,
जिनवाणी को.....।।3।।

मानव का चोला पाया है, इसको सफल बनाना है,
जिनवाणी का सम्बल लेकर, भव-भव से तिर जाना है।
पाप कर्म से डरो सदा तुम, रहो सदा भयभीत रे,
जिनवाणी को.....।।4।।

सद्कर्मों से इस जीवन में, पुण्य का पुष्प खिलाना है,
नेकी की राहों पर चलकर, मोक्षपुरी को जाना है।
पोट बांधलो पुण्यवानी की, बन जाओ जगजीत रे,
जिनवाणी को.....।।5।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)

English-Section

Fight Corruption by Technological and Educational Innovation and not by Jan Lokpal Alone

Sh. Pankaj Chordia

Amazingly absurd, amazingly simple and almost impossible to achieve but at the same time let's give it a thought.

Alok, my friend and I got talking again. He asked me quite flatly, is there any way the planet can be saved from un-accounted money, terrorism, political atrocities, prostitution, corruption and many other blatant ills etc. Yes, I said. If humanity can curb the following four sins "Greed, Anger, Lust and Pride".

It seems impossible Alok said, and was quick to add that with Rajaratnam who gave a new meaning to insider trading and Nick Leeson a former derivative broker whose unauthorized speculative trading caused the collapse of the Barings Bank, Enron and WorldCom had become popular for willful corporate fraud and corruption in 2001 and 2003, Jerome Kerviel the Frenchman in his 30's brought the Societe Generale to its knees as the bank uncovered a fraud of $7.14 billion one of history's biggest by a future trader. According to a Swiss banking Association report 2006 India has more black money than rest of the world combined. India has stashed away $1.456 billion in black money in Swiss bank accounts.

The September 11'2001 bombing of the world trade centre led to the death of 3000 people. The terrorist attack on the Air India Flight 182 over the Atlantic left 329 dead in 1985. The 26/11 attack on Mumbai in 2008 killed 164 people and left at least 300 injured.

The Tinanmen square uprising of students to get rid of the communist has led to death of 3000 protestors. The Cambodian civil war saw the death of two million Cambodians through political execution, starvation and forced labour.The libyan civil unrest in 2011 to oust the regime of Mummar Gaddafi resulted in the death of thousands of innocent citizens.

The departure from power of Silvio Berlusconi had been met

with jubilations in Italy. Italian newspapers had carried transcripts of phone calls in which the P.M. Silvilo Berlusconi allegedly boasts that 11 women were queuing up outside his room to have sex with him.

The embarrassing Abhu Gharib abuse was not enough; on 12th January 2012 footage was shot showing American soldiers urinating over dead Afghan bodies.

I agreed with Alok that sins such as greed, anger, lust and pride as above cannot be controlled by humans. The world does not have financial and moral maturity.

What has financial maturity got to do with fighting corruption, unaccounted money?, Aolk asked.

It is the mother of all sins. Unaccounted money goes into prostitution, drug trafficking, mafia, terrorism, corruption etc.

Alok was all bewildered and said he had never thought of it that way.

I finally said- There is a way out Alok.

Corruption can be fought by technological and educational innovation and not by Jan Lokpal alone.

1. **Plastic Card-** Financial maturity would come by financial integration that is all central banks must insist that banks should be on one platform i.e software. There should be economics of large scale and the central banks should look positively at mergers of banks. All transactions should be done by a plastic card/internet. These accounts can be watched closely by a body which can be commissioned by a group of eminent citizens of a country such as the CCI i.e. Confederation of Commerce and Industries. We should not go after people but try and build a system which shall not leave any scope of unaccounted money. Thus a debit card i.e. a plastic card would remove unaccounted money from the system. All that humanity has to do is to transact with a plastic card/internet. The printing of currencies would become redundant. We will have to educate the populace to use debit cards. To start with it can be introduced in corporate sectors and big deals.
2. **Education System-** The education system should include basic and fundamental values for character building which are enshrined in all religions. As ex-Infosys chief Narayan Murthy said-"Today corrupt

people have become role models for the young generation because they have both money and power and the law of the land and its enforcement is so weak and dilatory that most of the culprits are not brought to book".

3. **Political Will-** To bring about all these changes including a strong lokpal and an efficient and non partisan enforcement agency we need a political will which is unfortunately lacking.

It is a tall order but not unachievable. If there is a will there is a way, we again need the will to fight out this abominable corrupt system which has gone to th roots of our great country.

-C-4, Krishan Marg, Shyam Nagar, Jaipur (Raj.)

जूठा न डालने पर आपका अभिनन्दन

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

हम सन्तों के दर्शन करने जाते हैं, सामायिक साधना करते हैं, प्रवचन सुनते हैं, प्रवचन के पश्चात् सन्त सतियांजी महाराज एक संकल्प कराते हैं कि भोजन से पहले 3 या 5 नवकार मंत्र का स्मरण करना और भोजन में जूठा नहीं डालना। हम भी हाथ जोड़कर नमन करते हुए उस बात को स्वीकार कर लेते हैं। इसके बाद श्री संघ द्वारा आयोजित सहधर्मी-वात्सल्य के भोजन हेतु पांडाल में पहुँचते हैं। प्लेट उठाते हैं और अपनी मन-पसन्द भोजन सामग्री लेते हैं। समय पर क्षुधा शान्त करने के लिए उनका आभार मानते हैं और धन्यवाद देते हैं।

हम लोग उस दिन लिये गये पच्चक्खाण, नवकार मंत्र का स्मरण व जूठा नहीं डालने का भी ध्यान रखते हैं। संकल्प का पालन करते हैं।

वे सच्चे धर्म आराधक हैं, गुरु भक्त हैं, श्रावक हैं जो अपने गुरु के वचनों का आदर करते हैं, दिए हुए संकल्प का पालन करते हैं।

आप भी ऐसे ही श्रावक हैं, जो भोजन से पूर्व 3 या 5 नवकार मंत्र का स्मरण करते हैं, भोजन में एक चावल का कण भी जूठा नहीं डालते हैं, हम आपका भी अभिनन्दन करते हैं। आप जैसे सज्जन पुरुष को तो देवता भी नमन करते हैं।

सज्जनों! हम अपने परिवार के सदस्यों में भी, मित्रों में भी जूठा न डालने का अभियान चलायें। तभी हम मानव जाति के प्राणरक्षक अन्न को, जो लापरवाही व गैर जिम्मेदारी से नष्ट होता है, बचाकर रख सकते हैं। किसी को नया जीवन देने में सहयोगी बन सकते हैं। तो आइये, आप अपने शुभ भावों से इस छोटे से अभियान का श्री गणेश करने का सौभाग्य प्राप्त करायें। *-2, कालाथीपिल्ले स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)*

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (14)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि जी

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-**सम्पादक**

यश,

बड़े भैया के साथ तुम्हारे संबंधों में आज मधुरता पैदा हो गई है ना?
भाभी के साथ
तुम्हारी पत्नी की बहुत अच्छी पटती है ना?
तुम दोनों के बच्चों को लेकर घर में कोई तकरार नहीं है ना?
यदि संबंधों की इस मधुरता और
प्रसन्नतायुक्त इस वातावरण को तुम चिरस्थायी बनाना
चाहते हो तो उसका एक मात्र उपाय यही है कि
तुम किसी को एक भी ऐसा निमित्त (मौका) मत देना कि
जिसके कारण सबके मन दुःखी हो जाएँ।
और इनमें भी विशेषरूप से तुम अपनी वाणी को
अत्यन्त संयमित रखना।
आक्रोशयुक्त वचन, व्यंग्यात्मक वचन और
उपेक्षायुक्त वचन, इन तीनों प्रकार के वचनों ने
रुई की गठान के लिए चिनगारी जो काम करती है,
तंदुरूस्ती के लिए प्रदूषणयुक्त वातावरण जो काम करता है,
पवित्रता के लिए वेश्या के हाव-भाव जो काम करते हैं,
दूध के लिए फिटकरी जो काम करती है,
दीपक के लिए तूफान की हवा जो काम करती है,

वही काम संबंधों के लिए किया है।

कई वर्षों पहले की बात है।

उस वक्त हम बम्बई के एक क्षेत्र में विचरण कर रहे थे।

दोपहर का करीब चार बजे का समय था।

और एक भाई मिलने के लिए आया।

उसकी आँखों पर गॉगल्स थे।

वे वन्दन करके बैठे और उन्होंने जो बात कही वह उनके ही शब्दों में-

''महाराज साहब,

पिछले बारह महीनों से मैं आँख के एक ऐसे रोग का शिकार

बन गया हूँ जिसका इलाज मुझे तत्काल ही कराना पड़े ऐसी स्थिति थी,

उस इलाज का खर्च केवल एक हजार रुपये ही था।

परंतु उतना खर्च भी कर सकूँ ऐसी मेरी आर्थिक स्थिति नहीं थी।

अलग-अलग जगहों से रकम एकत्रित की, फिर भी 250 रुपये कम पड़ गये।

मेरे बड़े भैया आर्थिक रूप से सक्षम होने के कारण

मुझे दो-चार हितैषियों ने उनके पास जाने की सलाह दी।

किन्हीं कारणों से मेरे और उनके संबंध टूट चुके थे।

इसलिए मेरा मन उनके पास जाने से इनकार कर रहा था। परंतु

प्रश्न आँख को बचाने का था।

इसलिए मन को मनाकर भी उनके पास गया।

मेरी परिस्थिति के बारे में मैंने उनको बताया।

''मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता।'' यह उनका जवाब था।

'मुझे केवल 250 रुपये दे दीजिए।'

'यह संभव नहीं है।'

'उधार दे दीजिए।'

'यह भी संभव नहीं है।'

'मेरी आँख का सवाल है।'

'उसमें मैं क्या करुँ?'

'आप मुझे केवल 250 रुपये की सहायता करें तो मेरी आँख बच जायेगी।'

'मैं तुम्हें रुपये देना नहीं चाहता।'

'मेरी आँख.........।'

'हमेशा के लिए तुम्हारी आँख चली जाए तो भी मैं तुम्हें रुपये नहीं देना चाहता। अब तुम यहाँ से विदा होते हो या फिर मैं यहाँ से खड़ा हो जाऊँ?'

महाराज साहब,

सगे बड़े भैया के मुख से ये शब्द सुनने के बाद

अब जीवन जीने का मन नहीं होता।

वैसे ही अंधेपन की पीड़ा को झेलकर जीवन जीने से

जीवन समाप्त कर देना कम कष्टदायक होगा ऐसा मुझे

लगता है। आप क्या कहते हैं?

यश, एक सगा भाई अपने भाई के साथ ऐसा भी व्यवहार

कर सकता है यह जानकर मैं व्यथित हो गया।

यश,

यह सत्य घटना मैंने तुम्हारे समक्ष इसलिए प्रस्तुत की है कि

तुम्हें पता चल जाए कि

पदार्थ की आसक्ति इन्सान को किस हद तक नराधम और निष्ठुर बना देती है।

खून के रिश्ते भी किस हद तक टूट सकते हैं।

किसी के जीवन की सुरक्षा की भी किस हद तक उपेक्षा की जा सकती है।

वैसे, बड़ा भाई अत्यन्त धनवान था।

प्रश्न केवल 250 रुपए का ही था।

इतनी रकम भी अपने छोटे भाई को ही देनी थी

और वह भी उस आँख को बचाने के लिए-

जिसका स्थान देह में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है।

परंतु आवेश और आसक्ति किसका नाम?

बिना किसी झिझक के बड़े भाई ने उतनी छोटी-सी रकम देने से भी इनकार कर दिया।

'तुम्हारी आँख चली जाए, फिर भी मैं तुम्हें 250 रुपये नहीं देना चाहता।'

निर्लज्जता से उसने अपने सगे छोटे भाई को टका-सा जवाब दे दिया।

यश,

स्वार्थपुष्टि और वैर भावना,

ये दो मनोवृत्तियाँ ऐसी हैं कि जो इन्सान को इन्सान के चोले में शैतान बनाये बिना नहीं रहती।

मैंने सैंकड़ों नहीं हजारों परिवार ऐसे देखे हैं कि
जहाँ इन दो मनोवृत्तियों के शिकार बने परिवार के एकाध
सदस्य ने समस्त परिवार की शांति को छिन्न-भिन्न कर दिया है,
और प्रसन्नता को तितर-बितर कर दिया है।
परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे से विमुख कर दिया है
और संबंधों की मधुरता में चिनगारी रख दी है।
तुम्हें इतना ही कहूँगा कि
संबंधों को बनाना यह शायद पल मात्र का ही खेल है, परंतु
बंधे हुए उन संबंधों को सम्हालना, टिकाना एवं मधुर बनाये रखना
यह तो पल-पल का खेल है।
एकाध पल की असावधानी,
उपेक्षायुक्त व्यवहार,
आक्रोशयुक्त वचन,
शंकाशील मनोवृत्ति,
रुक्ष बर्ताव, धूर्तता
और संबंधों की वह मजबूत इमारत भी
पलभर में धराशायी!
इस संभावित दुष्परिणाम से वही बच सकता है
जिसकी दृष्टि निरंतर पारमार्थिक सत्य पर ही स्थिर हो।
'मुझे सुख नहीं, हित को सम्हालना है।'
यह है पारमार्थिक सत्य!
'मुझे विजेता नहीं, विनम्र बनना है।'
यह है पारमार्थिक सत्य!
'मुझे दुःख नहीं, राग-द्वेष को कम करना है।'
यह है पारमार्थिक सत्य!
'मुझे इस भव को नहीं, परभव को भी समृद्ध बनाना है।'

यह है पारमार्थिक सत्य!

भोजन में नमक डालना भूल जाएं, केवल इससे कोई जीवन बर्बाद नहीं हो जाता।

मिठाई में शक्कर डालना रह जाए, केवल इससे कोई संबंधों में कडुवाहट पैदा नहीं हो जाती।

घर से बाहर निकलते समय पैसा लेना भूल जाएं, केवल इससे कोई मरण के समय की समाधि खंड़ित नहीं हो जाती।

बाहर निकलते समय घर का दरवाजा बंद करना भूल जाएं, केवल इससे कोई परलोक डरावना नहीं बन जाता।

परंतु पारमार्थिक सत्य की विस्मृति अथवा उपेक्षा के साथ जीए जाने वाले जीवन में तो कौनसी दुर्घटना नहीं घटती यह प्रश्न है।

जीवन अशांत, मौत दुखांत और परलोक करुणांत।

सावधान!

विज्ञापन

जैन छात्रों के लिए चेन्नई में आवास-व्यवस्था

जो प्रतिभाशाली जैन छात्र चेन्नई में रहकर अपना अध्ययन करना चाहते हैं, उनके लिए चेन्नई महानगर में आवास-व्यवस्था की गई है। कमजोर वित्तीय स्थिति वाले उन धर्मनिष्ठ मेधावी छात्रों को आमंत्रित किया जाता है जो अपने जीवन में पढ़-लिखकर संघ-समाज, देश व जिनशासन की सेवा के साथ अपने जीवन को संवारना चाहते हैं। चयन में सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल तथा अन्य धार्मिक जानकारी एवं योग्यता रखने वालों को प्राथमिकता दी जाएगी। पारिवारिक, शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक और अन्य आवश्यक तथ्यों के साथ पूर्ण विवरण सहित निम्नांकित पते पर आवेदन करें। आधे-अधूरे आवेदन-पत्र पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

Dr. Dileep Dhing

Surana & Surana International Attorneys

61-63, Dr. Radhakrishnan Salai, Mylapore, Chennai-600004

Phone: 044-28120000/28120002

युवा-स्तम्भ

बनें महावीर के सच्चे अनुयायी

श्री आर.के.जैन (आई.ए.एस.)

धर्मनिष्ठ एवं प्रबुद्ध प्रशासनिक अधिकारी श्री रमेशकुमार जैन इस वर्ष संयोग से महावीर जयन्ती पर 5 अप्रेल को चेन्नई में उपस्थित थे। वहाँ पर जैन महासंघ द्वारा राज्यपाल की सन्निधि में आयोजित समारोह में जो विचार उन्होंने अभिव्यक्त किए, वे जिनवाणी पाठकों को भी सुलभ हो रहे हैं।**-सम्पादक**

भगवान महावीर की जयंती मनाने का उद्देश्य यही है कि हम उनके गुणों को याद करें एवं उनके बताए हुए रास्ते पर चलें।

मेरी अल्प बुद्धि से, जो मैंने समझा है, ''महावीर मेरी दृष्टि में'' - उसे मैं संक्षिप्त में आपको बताना चाहता हूँ।

एक बार भगवान महावीर मेरे सपने में आए-

मैंने कहा, भगवन् कुछ ज्ञान दो। कल्याण का, मोक्ष का मार्ग बताओ।

भगवान महावीर ने, एक शब्द में कहा- ''.........'' और कहा इसे 'मंत्र' समझ कर इसका 'जाप' करो।

मैंने आश्चर्य से पूछा कि, भगवन् यह क्या है? हमारे यहाँ तो अनेकानेक ग्रंथ हैं, पंथ हैं, सिद्धान्त हैं, व्रत-महाव्रत हैं। हमारे यहाँ अनेकानेक मंदिर हैं। आपके मंदिर हैं, 24 तीर्थंकरों के मंदिर हैं, 72 जिनालय हैं, 108 पद्मावती के मंदिर हैं, पूजा-पाठ हैं, सामयिक-प्रतिक्रमण हैं और आपने सिर्फ एक शब्द का मंत्र दिया है, सिर्फ एक शब्द का।

भगवान ने कहा- मित्र! सुनो, I am a simple man. 'मैंने भी यही एक काम किया है, और कुछ नहीं किया। और तुम भी कल्याण चाहते हो, मेरे जैसा बनना चाहते हो, तो बस यही एक काम करो।

अब वह एक शब्द का मंत्र क्या था? अंदाज लगाएँ।

मैंने भगवान से कहा- भगवान हम तो धर्म का अर्थ, और आपके उपदेश इसमें समझते हैं-

1. जीओ और जीने दो

2. सत्य, अहिंसा, अचौर्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य

3. राग, द्वेष का त्याग करो।

4. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र।

"क्या ये सब महत्त्वपूर्ण नहीं हैं?"

भगवान ने कहा- "ये सब महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें से हर एक तत्त्व अपने आप में पूर्ण हैं, और बाकी सब स्वतः उसमें समाए हुए हैं। तुम किसी भी एक को मंत्र मानकर, उसका जाप कर सकते हो। बाकी सारे अपने आप सिद्ध हो जाएंगे। धर्म सरल और सहज है और यदि वह सरल नहीं है, सहज नहीं है तो वह धर्म नहीं हैं।"

"भगवन् 'मंत्र' और 'जाप' से क्या तात्पर्य है।"

"'मंत्र' का मतलब है 'मन के अन्तर में', अर्थात् अंतर-मन से,

सच्चे मन से-विचार करना, विश्वास करना, श्रद्धा करना।

और 'जाप' का मतलब है, 'निरन्तर-विचार करना, विश्वास करना, श्रद्धा करना, आचरण करना।'

उन्होंने आगे कहा- "उदाहरण के लिए 'अहिंसा' का मंत्र। मन, वचन, काया से किसी का दिल भी दुखाया है, तो हिंसा की है। अब आप चोरी करोगे, बेईमानी करोगे तो किसी का दिल दुःखेगा। यदि झूठ बोलोगे, छल कपट करोगे, तो भी हिंसा करोगे। यदि ब्रह्मचर्य, अर्थात् अनुशासन से नहीं रहोगे तब भी भाव-हिंसा कहलाएगी। अनावश्यक परिग्रह तो निश्चित रूप से, दूसरों का हक छीनने के बराबर है। किसी दूर कोने में जरूरतमंद व्यक्ति के दुःख के हम परोक्ष में कारण बनते हैं। यह भी हिंसा की ही श्रेणी में है।"

इतने में मेरी नींद खुली। मुझे वह 'शब्द' वह 'मंत्र' याद आया जो भगवान महावीर ने मुझे सपने में कहा था।

वह था- "अकर्तृत्व भाव" अर्थात् मैं कर्त्ता नहीं हूँ।

मैंने इस पर विचार किया तो पाया कि, 'मैं कर्त्ता नहीं हूँ, "का मतलब है, मैं 'ज्ञाता-द्रष्टा हूँ'। मैं 'कर नहीं रहा हूँ' बल्कि हो रहा है'। 'कर्तृत्वभाव' समाप्त होते ही 'मैं' समाप्त होता है, 'अहम्' समाप्त होता है। मैंने पाया कि गीता का भी सार यही है। कहते हैं कि भगवान महावीर ने राज-पाट छोड़ा नहीं, छूट गया। उन्होंने वस्त्र त्यागे नहीं, उतर गए। उन्होंने तपस्या की नहीं, हो गई। यदि हम आत्मा को आत्मा व पुद्गल को पुद्गल समझेंगे, पुद्गल में आत्मा के कर्त्ता-भाव का त्याग करेंगे, तो स्वतः शनैः शनैः स्वाभाविक रूप से आत्म-कल्याण की ओर बढ़ेंगे।

मैं एक छोटी सी कहानी के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ।

एक बार एक मंदिर व एक मदिरालय पास-पास थे। एक व्यक्ति नियम से मंदिर में आरती करने जाता था, वहीं एक दूसरा व्यक्ति नियम से, उसी समय मदिरालय में जाता था। दोनों एक-दूसरे को देखते थे। मंदिर जाने वाला सोचता था कि क्या रोज-रोज इस पत्थर की मूर्ति की आरती करना। वह मदिरालय में जाने वाला आदमी कितने मज़े कर रहा है। काश, मैं जैन नहीं होता, तो मैं भी मज़े करता।

दूसरा व्यक्ति यह सोचता है कि अरे यार, मैं कैसा निकृष्ट व्यक्ति हूँ। यह दारू छूटती ही नहीं है। कितना गलत काम कर रहा हूँ। पापी हूँ। धन्य है वह व्यक्ति जो रोज शाम को मंदिर जाता है। प्रभु की भक्ति करता है। आरती का आनन्द उठाता है।

मेरा मानना है कि जो व्यक्ति मंदिर जा रहा है, वह निश्चित रूप से एक दिन मदिरालय पहुँच जाएगा, और जो व्यक्ति मदिरालय जा रहा है, वह निश्चित रूप से एक दिन भगवान की शरण में पहुँच जाएगा।

यदि हम गलत काम कर रहे हैं, तो उसे जानें, मानें, गलती मानें, ग्लानि तो अनुभव करें। यदि 'विचार' शुद्ध रखेंगे, तो निश्चित रूप से, 'आचार' में शुद्धता आएगी, और हम भगवान महावीर के सच्चे अनुयायी बनकर, महावीर जयंती मनाने को सार्थक करेंगे।

जय महावीर!

-संभागीय आयुक्त, जोधपुर (राज.)

अमृत-वचन

संघ-एकता

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

आज संघ में बात-बात पर मन-मुटाव होता है। कई तो धर्मस्थान को लेकर झगड़ जाते हैं। ये स्थान सुविधा के लिए बने हैं, झगड़ा करने के लिए नहीं। आप जब तक एक-दूसरे की भावना नहीं समझेंगे तब तक न एकता रहेगी और न ही आनन्द मिलेगा। यदि आपने एक-दूसरे को समझने की चेष्टा की तो एकता-एकरूपता-एकरसता बनेगी और उसी से संघ फलेगा, फूलेगा।

इसलिए आप मनमुटाव-वैर-विरोध भुलाकर एकता का परिचय दें। एकता में शक्ति होती है। आप सब एक होकर चलें, उसमें लाभ है। फूट में लूट है। रत्नसंघ एकरूपता में रहता आया है। यह एकरूपता आगे भी बनी रहनी चाहिये।

-जिनवाणी, जनवरी 2005 से संकलित

एकांकी

सदुपयोग

डॉ. रमेश 'मंयक'

प्रस्तुत एकांकी गृहस्थ जीवन में आसक्त व्यक्तियों के लिए, अपने कर्त्तव्य-निर्वहन के साथ-साथ, आध्यात्मिक गुरु के निर्देशन में, अनुरक्ति से धर्माराधन द्वारा विरक्ति के भावलोक की यात्रा का पथ प्रशस्त करती है। साथ ही यह भी दर्शाती है कि धर्म-साधना केवल वृद्धों के लिए नहीं है। युवाओं को संग्रह के औचित्यपूर्ण, संतुलित व नियंत्रित मूल्य पर सदुपयोग के लिए वितरण की व्यवस्था हेतु आगे आना चाहिए।-**सम्पादक**

पात्र परिचय

सन्तप्रवर–वय से वृद्ध

सूत्रधार– तेजस्वी युवा प्रखर बुद्धिमान् व्यक्ति

युवक व युवती– युवावस्था युक्त

मंच पर धीरे-धीरे प्रकाश होता है। पीठिका श्वेत है। मध्य भाग में एक तख्त पर विराजमान दिव्य व्यक्तित्व सन्तप्रवर जो वय से वृद्ध हैं, श्वेत वस्त्र धारण किए हुए हैं। शान्त चित्त, आभा तेजस्वी है। पार्श्व से धीरे-धीरे संगीत का स्वर तीव्र होने लगता है-

नमन उनको कोटि-कोटि, अध्यात्म पथ के उपासक।
संत सरल सच्चे ऊँचे, दिव्य चेतना के आराधक।।
जगो, उठो, आगे बढ़ो, हमें उपदेश यही पावन दिया।
आत्म-दोष निवारण का, पथ जिसने प्रशस्त किया।।
विद्वत्ता और साधना के, उच्च शिखर की जो शान हैं।
संतोष शांति अभय मैत्री, गुरु सकल गुण निधान हैं।।
नमन उनको कोटि-कोटि.......।।

सूत्रधार का प्रवेश एवं सम्बोधन–

हमारी संस्कृति में गुरुदेव केन्द्र बिन्दु हैं।
देव और धर्म के बीच विराजमान।
आप बताते हैं- देव, धर्म का स्वरूप।
आप निर्देशित करते हैं-साधना का पथ।

जिससे देव प्राप्ति का होता है- पथ प्रशस्त।

तो आइए- ऐसे प्रतिभा सम्पन्न, दिव्य प्रतिमूर्ति गुरुदेव का सान्निध्य लाभ पाएं। अनुरक्ति से धर्माराधन द्वारा विरक्ति के भावलोक की यात्रा को सफल बनाएं।

(युवक व युवती का प्रवेश होता है)

युवक- विनय और भक्ति से शक्ति, ज्ञान ज्योति जगाने वाले।
बने गुरुदेव जन-जन के, मुक्ति पथ बताने वाले।।

युवती- जीवन धन आज समर्पित, गुरुदेव आपके चरणों में।
श्रद्धा, विश्वास, अटूट आस्था, गुरुदेव आपके चरणों में।।

समवेत स्वर- सन्तप्रवर 'गुरु' शब्द का अर्थ समझाइए।

(एक पल का अन्तराल)

सन्तप्रवर- 'गुरु' शब्द में गु-प्रतीक है- अंधकार का।
'रु' प्रतीक है- प्रकाश का। सच्चा गुरु साधक को अंधकार से प्रकाश की तरफ ले जाता है।

सूत्रधार- सन्तप्रवर! आप धर्म के उपदेशक हैं। अज्ञानरूपी तम के विनाशक हैं। ज्ञान रूपी ज्योति का प्रकाश फैलाएँ। साक्षात् गुरु के दर्शनों से हम धन्य हो जाएं।

(एक पल का अन्तराल)

यह भी समझाएँ कि सांसारिक जीवन-यापन करते हुए कैसे मुक्ति भाव को अपनाएँ?

युवक- सन्तप्रवर! आप सूत्र और अर्थ दोनों के ज्ञाता हैं। शिष्यों को आगमों के गूढ़ वचन सरलता से समझाने वाले हैं। आचार्य पद के छत्तीस गुणों का पालन कर सच्चे अर्थों में आचार्य कहलाने वाले हैं।

युवती- हम हैं सांसारिक प्राणी। दुःखी रहने वाले। राग अंहकार, ममत्व के बन्धनों से जकड़े हुए। मन सांसारिक रिश्तों, सुखों की प्रीत से बंधा हुआ है। कैसे होगी हमारी मुक्ति?

सूत्रधार- गुरुदेव! हम शरण आपकी आए। अब आप ही मुक्ति का मार्ग बताएं। प्रत्येक व्यक्ति को आगे बढ़ाने के लिए। हम सबका बेड़ा पार लगाने के लिए।

समवेत स्वर- हम सबका बेड़ा पार लगाएं।

सन्तप्रवर– मुक्ति का पथ लम्बा है। आपको सांसारिक जीवन निभाना है, परन्तु मुक्ति के लक्ष्य को भूल नहीं जाना है।

मुक्ति के पथ पर भी बढ़ते जाना है तो– इन्द्रियों पर संयम को अपनाना होगा। क्रोध, मद, लोभ को दूर भगाना होगा। ज्ञानाचार से अहंकार मिटता जाएगा। उत्तम चारित्रवान मुक्ति पथ को अपनाएगा।

युवक– परन्तु यह संसार में आसक्ति, हमें बार–बार फँसाती। कर्मों के मोह बन्धनों से चिपकाती है। हम लगातार फंसते ही जा रहे हैं। बार–बार अटक जाते हैं, निकल नहीं पा रहे हैं।

युवती– यही आसक्ति हमें दुःखित और दूषित करती है। सांसारिक प्राणी के रूप में हमारे अस्तित्व को बनाए रखती है।

सन्तप्रवर– सांसारिक प्राणियों को, संसार में रहते हुए भी, गृहस्थ जीवन में सभी कर्मों को निभाना है। प्रत्येक प्राणी को कर्मों का फल भुगतना पड़ेगा, लेकिन आसक्ति में विरक्ति को खोजो।

युवक–युवती– कैसे?

सन्तप्रवर– क्या प्राणिमात्र–सुखों की आसक्ति का याचक है? क्या इससे वह दुःखरहित हो रहा है? नहीं। आसक्ति दुःख का कारण है। सबके प्रति मैत्रीभाव रखें। मैत्री में भी हित भाव को अपनाएँ। वैरभाव का तो त्याग कर ही दें। हम दूसरों को दुःख नहीं पहुँचायेंगे, तो हम भी दुःख नहीं पायेंगे।

युवती– बड़ा कठिन है– सांसारिक वस्तुओं व व्यक्तियों से आसक्ति को छोड़ पाना। मोह–पाश के बन्धनों को तोड़ पाना।

सन्तप्रवर– हम व्यक्तियों व वस्तुओं का सहयोग लें। उनके भोग का रोग नहीं पालें। व्यक्तियों व वस्तुओं के उपयोग को, उपभोग को– हमारे ऊपर हावी न होने दें। संयमपूर्ण आचरण को अपनाएं। धीरे–धीरे महत्वाकांक्षाओं, इच्छाओं और जरूरतों को सीमित बनाते हुए नियंत्रण करें।

युवक– हम संग्रह से बचें।

युवती– हम अपरिग्रह को अपनाएँ।

सन्तप्रवर– वस्तुओं का उत्पादन होता है– उपयोग के लिए। संग्रह करें सदुपयोग के

लिए। आवश्यक जनों तक उपयोगार्थ उसे पहुँचाने के लिए। रोकें संगृहीत वस्तुओं का दुरुपयोग।

नियंत्रित मूल्य-व्यवस्था सही-सही चल पाएगी। भोज्य को संतुलित बनाएं। भोग के आधिक्य में चित्त को अधिक न रमाएं। राग की तरफ नहीं विराग की तरफ आकर्षित होते जाएं।

(एक पल का अन्तराल)

दूसरों के दुःखों से दुःखित और द्रवित होवें, पर कष्ट निवारण के उपायों, कृत्यों व साधनों के बनें भागीदार तो निश्चित ही होगा बेड़ा पार।

युवक- करुणा-मैत्री का भाव अपनायेंगे।

युवती- चेतन पदार्थों में सुरक्षा भाव विकसित करेंगे।

युवक- चित्त को लोभ से दूर रखेंगे।

युवती- मन को भ्रमित नहीं करेंगे।

सूत्रधार- विचार तो नेक हैं। उचित मूल्य की नियंत्रित व्यवस्था के साथ-साथ सदुपयोग का आग्रह रहेगा। अपार सामग्री की उपलब्धता और अभावग्रस्तता का संघर्ष, संग्रहण को सम्यक ज्ञान से जोड़ेगा।

युवक- निःशक्त भी अवलम्ब पाएगा।

युवती- तभी तो आसक्ति से विरक्ति का मर्म समझने वाला साधक, अध्यात्म पथ की तरफ बढ़ता जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति का आत्मिक विकास हो पाएगा।

सन्तप्रवर- आज आवश्यकता युवा वर्ग के आगे आने की है। एक जुट होकर जुट जाना होगा।

भोजन की पूर्ति के बाद साधना की युक्ति पर सोचा जाना चाहिए। हम मात्र भोजन के लिए नहीं ललचाएं। भोजन के दास बनकर ही न रह जाएं।

युवक- कृपया आहार पर प्रकाश डालिए।

सन्तप्रवर- जो आहार सात्त्विक हो, मन को उत्तेजित करने वाला न हो, वह लेने योग्य है। आचरण शुद्धि के लिए आहार शद्धि आवश्यक है। जब आहार सुधरेगा तभी विचार सुधरेंगे। विचारों के सुधार से आत्म-कल्याण एवं

समाज-कल्याण का पथ प्रशस्त होगा।

(एक पल का अन्तराल)

मानव जीवन का लक्ष्य आचार शुद्धि से आत्मा को ऊपर उठाना है। जैन दर्शन में अनित्य, अशरण, एकत्व, अन्यत्व की भावनाएँ मनुष्य को संसार में सत्य का ज्ञान कराती हैं।

इन भावनाओं का चित्त पर जितना अधिक प्रकाश पड़ेगा, उतना ही मनुष्य सत्य को जानने में सक्षम हो सकेगा तथा आसक्ति को तोड़ने में समर्थ बनेगा।

युवती- धन-सम्पदा-वैभव का क्या होगा?

सन्तप्रवर- धन, सम्पदा, वैभव कलह के कारक हैं। इनसे दूर रहने के लिए वैराग्य भाव जगाएं। आशा, तृष्णा, इच्छाओं पर करते हुए नियंत्रण, त्याग के बिन्दु तक आएं।

(मन ही मन, मेरे अन्तर भया प्रकाश-गुनगुनाने का मंद स्वर सुनाई देता है।)

युवक- न तो दुःख को पालें, न मोह को, न ही मिलन को दें महत्ता। न त्रासद समझें बिछोह को।

सूत्रधार- भावकरण योग के बनें सच्चे साधक। मन, वचन, कर्म को न बनाएं बाधक। तप, संयम-साधना भाव को जगाएं। आसक्ति को नहीं, अनासक्ति को अपनाएं।

सन्तप्रवर- अपना कर्तव्य निभाएं। दुःखी, दीन, दलितों का करें सहयोग। दूर होगा सांसारिक आसक्ति का रोग।

सन्तप्रवर- आज समाज में धन या जन की कमी नहीं, कमी है तो सेवाभावी कार्यकर्त्ता की। लगनपूर्वक कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता दुर्लभ हैं। कार्यकर्त्ता की कुशलता के सामने अर्थाभाव का कोई प्रश्न नहीं रहता।

सूत्रधार- गुरुदेव, हमारा पथ प्रशस्त करते जायेंगे। युवा कार्यकर्त्ता आएंगे और समाज, देश, विश्व के कल्याण हेतु गुरु गरिमा को सार्थक बनायेंगे।

युवक-युवती- युवा वर्ग के लिए क्या सन्देश है?

सूत्रधार- युवा पीढ़ी देश की आकांक्षा है। समाज की सक्रिय इकाई है। देश के विकास में उनकी विशेष हिस्सेदारी है।

युवक ही बनेंगे ज्ञानपुंज के प्रवक्ता, शान्ति के आगार। साहस, उमंग,

संकल्प को जगाने वाले। प्रत्येक व्यक्ति को आगे बढ़ाने वाले।

सन्तप्रवर- युवावर्ग यह नहीं सोचे कि धर्म केवल वृद्धों का क्षेत्र है। धर्माचरण कर्त्तव्य-निर्वहन सिखाता है। युवावर्ग को आसक्ति से विरक्ति तक के भाव लोक की यात्रा में संग्रहण से वितरण तक नियंत्रण बनाए रखने के लिए उठना, जागना, और आगे बढ़ना होगा।

युवक- आध्यात्मिक गुरु का मिलेगा आश्रय।

युवती- और होगा बेड़ा पार।

समवेत स्वर- आचार्य श्री का जय-जयकार।

सभी मिलकर मंच पर एक साथ गाते हैं श्री मोहन कोठारी का गीत-

कहे जिनवाणी है हमको, जगालो आत्मा अपनी।
मिले भव से छुटकारा, करेंगे हम जो शुभ करनी।।
कर्मों को काट लेने का, बड़ा सुन्दर यह मौका है।
मुसाफिर जागते रहना।

(स्वर धीरे-धीरे मंद होते हुए थम जाता है।)

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)

बाल-स्तम्भ [फरवरी-2012] का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2012 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'मैं फूलों का हूँ व्यापारी' कविता के प्रश्नों के उत्तर 37 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 35 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	प्रिंस सिंह राजोरा-भदेसर	35
द्वितीय पुरस्कार-200/-	कु. मानसी महेन्द्र-नासिक	33
तृतीय पुरस्कार- 150/-	सौरभ भण्डारी-पीपाड़शहर	33
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	विनोद जैन-जोधपुर	33
	गजेन्द्र कुमार जैन-जयपुर	32
	मोनिका जैन-सवाईमाधोपुर	32
	हर्षिता सिंघवी-पाली	32
	नमन जैन-इन्दौर	31

प्रेरक-प्रसंग

नैतिकता का आनन्द

श्री नितेश नागौता जैन

कुछ माह पूर्व मेरे साथ घटित एक प्रेरक घटना जिसने मेरे अन्तर में नैतिकता और सजगता के दीपक को और अधिक प्रकाशित कर दिया है, आप सभी की सेवा में निवेदन है। मैं भवानीमंडी से दिल्ली की ओर रेल मार्ग से यात्रा कर रहा था। कोटा रेलवे स्टेशन से दो महानुभाव मेरे कोच में चढ़े एवं मेरे सामने वाली सीट पर बैठ गये। उनके साथ के लगेज और खरीददारी से लगा मानो वे किसी विवाह संबंधी खरीददारी करने कोटा आये थे। वे अपनी सीट पर बैठे रहे। मैं अपनी सीट पर कुछ पढ़ने में तो कुछ लिखने में व्यस्त था। कुछ ही घंटों के बाद भरतपुर रेलवे स्टेशन आया। वे दोनों महानुभाव अपनी सीट से उठे, सामान लिया और नीचे उतर गये। ट्रेन चल दी, सहज ही मेरी नज़र उनकी सीट पर गई, सीट के कोने में एक बेग रखा हुआ मिला, किस्मत की बात थी कि मैं जिस कम्पार्टमेण्ट में बैठा था वहाँ मैं और एक मुस्लिम महिला तथा उनका बच्चा मात्र हम तीन ही यात्री थे। मैंने वहाँ बैठी उस मुस्लिम महिला से पूछा- "बहनजी क्या यह बेग आपका है?" वह बोली-"नहीं, हमारा लगेज तो सीट के नीचे है। यह बेग वे दो महानुभाव जो कोटा से आकर बैठे थे, उनका होगा।" मेरे अन्तर में जल रहे नैतिकता के दीपक ने मुझे विवेक का प्रकाश दिया और मैंने अपने कर्तव्य को निभाने के लिए उस बेग को अपने पास लिया तथा उन महानुभावों के नाम-पते एवं सम्पर्क नंबर के लिए जैसे ही उस बेग की चेन को खोलकर तलाशी ली तो उसमें पांच-पांच सौ रुपये के कुछ लिफाफे एवं सौ-सौ रुपये के कुछ कड़क नोट तथा अन्य नगदी पड़ी हुई थी। अनुमानित पांच सात हजार रुपये उसमें होने चाहिए। दिल ने दिमाग से कहा, वे कौन थे, कहाँ रहते थे, तुम कुछ भी नहीं जानते, चलो ऐसा करो, इस राशि को किसी पुण्यार्थ कार्य में लगा देना। किन्तु अन्तर से आवाज आई। नहीं, यह गलत होगा....... तुम्हें प्रयास करना चाहिए, हो सकता है यह जिसकी अमानत है उसे मिल जाये......।

मैंने अन्तर की आवाज को मानकर उन दोनों महानुभावों के नाम-पते की तलाश हेतु उस बेग के लिफाफे एवं कागजों की पड़ताल प्रारम्भ कर दी......। किन्तु कहीं कुछ नहीं मिल पाया, सिर्फ लिफाफों पर लिखा था माहेश्वरी परिवार द्वारा आपका आत्मीय अभिनंदन.......। मेरे इस तलाशी व पड़ताल अभियान में ट्रेन भरतपुर से लगभग पचास साठ किलोमीटर आगे निकल गई होगी। सम्पर्क नंबर के रूप में मुझे उस बेग पर पोस्ट

आफिस के बचत अभिकर्ता के मोबाइल नंबर मिल गये। मैंने उन्हें फोन लगाया और सारे घटनाक्रम के बारे में उन्हें जानकारी दी तथा ट्रेन से उतरे दोनों महानुभावों का हुलिया उन्हें बताया तो सहज ही वह अभिकर्ता उन्हें पहचान गया और उन्होंने श्रीमान् माहेश्वरी जी के रूप में मुझे उनकी पहचान बताई तथा उन्हें सूचित करके मेरे मोबाइल नंबर उन्हें दे दिए। ट्रेन लगभग मथुरा पहुँची होगी, श्रीमान् माहेश्वरी जी का फोन मेरे पास आया। मैंने उन्हें उनके बेग की प्राप्ति के समाचार दिये तथा पुनः दिल्ली से लौटते समय उनका बेग उन्हें देने का निवेदन किया। उन्होंने भरे कंठ से मोबाइल पर मेरा आभार व्यक्त किया.......।

दिल्ली का कार्य निपटाकर मैं पुनः भवानीमंडी के लिए रवाना हुआ तब मोबाइल द्वारा श्रीमान माहेश्वरी जी को अपना कोच नंबर व अपनी पहचान के कपड़े उन्हें बता दिये। ट्रेन ज्यों-ज्यों भरतपुर स्टेशन के नजदीक पहुँच रही थी, मेरे मन का प्रमोद त्यों-त्यों कई गुना बढ़ता ही जा रहा था। निर्धारित समय पर ट्रेन भरतपुर स्टेशन पर पहुँची, मैं गेट से बाहर आया, तो सामने देखा आदरणीय माहेश्वरी जी हाथ में माला लिये अपने आठ-दस साथियों एवं पूरे परिवार के साथ नाश्ता व मिठाई के पैकेट के साथ उपस्थित हैं। कुछ कदम उनकी ओर बढ़ाते ही उन्होंने असीम आत्मीय भावों से मुझे गले से लगा लिया और उनकी आंखों में खुशी के आंसू छलक पड़े। सभी परिवारजन एवं उपस्थित महानुभाव मेरी ईमानदारी और कर्तव्यपरायणता की तारीफों के पुल बांधने लगे। कुछ पलों के लिए मुझे लगने लगा मानों मैंने बहुत बड़ा काम कर दिया..... फिर मैंने अति सहजता से उन सभी को निवेदन किया..... यह तो मेरा कर्तव्य था। हमें बचपन से जन्म घूंटी के साथ इसी तरह की ईमानदारी और नैतिकता के संस्कार दिये जाते हैं, जिसका मैंने आचरण रूप में आज प्रयोग किया है।

उस दिन अपने कर्तव्य के निर्वहन एवं नैतिकता के आचरण से जो खुशी, अपार संतोष एवं प्रमोद भाव मुझे मिला था, वह सुकून मैंने बड़े-बड़े हिल स्टेशन एवं आयोजनों में भी प्राप्त नहीं किया था।

-कर सलाहकार, 175, जैन बोर्डिंग एरिया, भवानीमंडी-326502 (राज.)

आचार्यप्रवर का चातुर्मास

जयपुर के महावीर नगर में

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का वि. सं. 2069 का चातुर्मास जयपुर के महावीर नगर स्थानक में एवं व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 व व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा-9 का चातुर्मास जयपुर में होने की स्वीकृति हुई है।

नारी-स्तम्भ

कैसे बचाएँ टूटते परिवार?

श्रीमती अंकिता मांडोत

संयुक्त परिवार-व्यवस्था भारतीय संस्कृति की विशिष्टता रही है। भारतीय सामाजिक संरचनाओं का मूलाधार ही संयुक्त परिवार माना जाता है। संयुक्त परिवार उन व्यक्तियों का एक समूह है, जो साधारणतया एक मकान में रहते हैं, जो एक रसोई में बना भोजन करते हैं, जो सामान्य सम्पत्ति के स्वामी होते हैं और जो किसी न किसी प्रकार एक दूसरे के रक्त संबंधी हैं। इनमें तीन या अधिक पीढ़ियों के सदस्य सम्मिलित होते हैं। संयुक्त परिवार में बड़ों का दुलार जहाँ मन में उत्साह भर देता है, वहीं छोटे-छोटे बच्चों की नटखट अदाएँ मन को रोमांचित कर देती हैं। हजारों वर्षों से विद्यमान भारतीय संयुक्त परिवार आज भी विदेशियों को प्रभावित करता है।

संयुक्त परिवार का स्वरूप हमारे हाथ जैसा है जिसकी पाँचों अंगुलियाँ भिन्न-भिन्न विशेषताओं के साथ एक ही हाथ से जुड़ी हैं। यदि ये अलग-अलग हैं तो इनका कोई महत्त्व नहीं, परन्तु एक हाथ से जुड़कर जब ये मुट्ठी का रूप बन जाती हैं तो फिर **'बंधी मुट्ठी लाख की खुल गई तो खाक की'** को चारितार्थ करती है। संयुक्त परिवार के सभी सदस्य स्वाभिमानपूर्वक अपना जीवन यापन करके परिवार के कार्यों में यथाशक्ति सहयोग देते हैं। **''बड़ों को अधिकार और छोटों को दुलार''** संयुक्त परिवार की विशेषता है। कवि के शब्दों में-

सबके दिलों में जहाँ बसा है प्यार, जहाँ बालक को मिलते हैं संस्कार।
कभी नहीं होता औपचारिक व्यवहार, अतिथियों का जहाँ होता है सत्कार।
तकरार के साथ प्यार, मनुहार के साथ आहार
संघर्ष नहीं हर्ष ही होता जीने का आधार।
नैतिकता की शिक्षा मिलती धार्मिकता का होता ज्ञान।
संस्कारों की नींव कहाता इसीलिए संयुक्त परिवार।।

कालान्तर में संयुक्त परिवार प्रथा को ग्रहण लगना प्रारंभ हुआ। औद्योगीकरण एवं भौतिकवादी प्रवृत्ति, उच्च नौकरियों के प्रति ललक, 'हम दो हमारे दो' की भावना का विकास, 'ये तेरा ये मेरा' के पनपते भाव, उच्च रहन-सहन के साथ जीवन-यापन करने की

चाह, उच्च सोसायटी में स्वयं को स्थापित करने की लालसा, धार्मिक क्रियाओं को पाखंड स्वीकारना, बुजुर्गों की बातों को रुढ़िवाद मानना, नैतिक शिक्षा के स्थान पर पाश्चात्त्य शिक्षा व संस्कृति की चाह, मर्यादाओं को बंधन की संज्ञा देना आदि अनेक कारणों ने परिवार के मूल स्वरूप संयुक्त परिवार में विघटन पैदा किया और यहीं से प्रारम्भ होती है संस्कारों के पतन की कहानी-

आज नैतिकता की ज्वाला धधक रही है चारों ओर।
भस्मसात् कर रही विश्व को अंधियारा है चारों ओर
एकाकी परिवार पनप रहे, संस्कारों का हुआ पतन।
व्यक्ति, परिवार समाज क्या, डूब रहा है अपना वतन।।

समय परिवर्तनशील है। प्रगतिशीलता की ओर बढ़ते कदम ने अर्थ के साथ स्वार्थ की भावनाओं को बढाया है, **'सादा जीवन उच्च विचार'** का आदर्श रसातल में जा रहा है, बुजुर्गों के प्रति आस्था दिन प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है। यही कारण है कि आज संयुक्त परिवार टूट रहे हैं और एकाकी परिवार पनप रहे हैं। परिवार को टूटने से बचाने के प्रमुख उपाय इस प्रकार हैं-

1. **अपनी बात मनवाने की जिद्द का त्याग-** युवा पीढ़ी अपनी कुछ अलग पहचान बनाने की होड़ के कारण अपनी बात मनवाने का आग्रह करती है। अतः अपने से बड़ों की हर बात का गलत अर्थ ही ग्रहण करना उसके व्यक्तित्व का अंश बन गया है। हमें आवश्यकता है मैत्री भाव की, सूझबूझ से ओतप्रोत अहंरहित विचारों की। अपनी ही बात मनवाने की जिद्द मानवीय रिश्तों को तो जर्जर कर ही देगी, साथ ही टकराव के अनेक और नए मुद्दे पैदा करती रहेगी।
2. **स्वार्थ की भावना का सीमाकरण-** ऐसा स्वार्थ नहीं होना चाहिए जो दूसरे के स्वार्थ में बाधा पहुँचाए, कठिनाई पैदा करे। केवल अपना ही स्वार्थ नहीं, दूसरे का भी हित सधना चाहिए। जहाँ इस तरह का व्यवहार होता है, हमारे व्यवहार की अनेक समस्याएँ सुलझ जाती हैं। परिवारों में कलह इसीलिए होता है कि जब देवरानियाँ-जेठानियाँ अपने-अपने को प्राथमिकता देना शुरु करती हैं। दूसरों पर इसकी तीव्र प्रतिक्रिया शुरु हो जाती है। जहाँ सामुदायिक जीवन है वहाँ स्वार्थ का सीमाकरण जरूरी है। स्वार्थ एक सीमा से आगे नहीं बढ़े तो कोई समस्या पैदा नहीं होगी।
3. **दृष्टिकोण की उदारता-** हमारा दृष्टिकोण उदार-विशाल होना चाहिये। संकीर्ण दृष्टि से देखने वाला अपने आस-पास तक ही देख पाता है। जबकि व्यक्ति को दूर तक की और आगे-पीछे की बात जरूर देखनी चाहिये। केवल आगे पीछे की ही

नहीं, अपितु चारों तरफ की सोच नहीं होने के कारण ही आज परिवार टूटते नजर आ रहे हैं। पारिवारिक संघर्ष का कारण ही संकुचित दृष्टिकोण है। दृष्टिकोण व्यापक और उदार होगा तो व्यापक हितों की ओर ध्यान जाएगा, इससे विपरीत अगर बहुत सीमित दृष्टि से सोचा गया तो अनेक समस्याओं में व्यक्ति उलझ जाएगा।

4. **हीनभावना और अहंभावना का त्याग–** पुरुष को अहंभाव अधिक सताता है तो महिलाओं को हीन भाव ज्यादा सताता है। हीनता और अहं की ग्रंथियों से बचे रहने पर ही संतुलित जीवन जीया जा सकता है, अन्यथा स्त्री-पुरुष के झगड़े चलते रहेंगे और परिवार टूटने की समस्या उत्पन्न हो जायेगी।

5. **संगठन और अनुशासन–** वर्तमान में संगठन और अनुशासन की कमी परिवार टूटने का प्रमुख घटक है। परिवार में संगठन और अनुशासन की अनिवार्यता है। परिवार में शक्ति आती है संगठन से। जिस प्रकार शरीर में एक टिश्यू या सेल शक्ति नहीं ला पाता है अनेक सेल्स मिलते हैं तब कहीं कोशिकाओं का संगठन बनता है और शक्ति आती है उसी प्रकार परिवार के सभी सदस्य मिलजुल कर रहते हैं तो शक्ति बनती है। अनुशासन सामुदायिकता को चिरंजीवी बनाने वाला है। वही परिवार चिरजीवी रह सकता है जहाँ अनुशासन है यानी वही परिवार शक्तिशाली बनता है जो अनुशासन के साथ चलता है।

6. **जागरूकता आवश्यक–** एक सुखी परिवार का ताना-बाना बुनने में परिवार के प्रत्येक सदस्य की जागरूकता अपेक्षित रहती है। दो चार व्यक्तियों का प्रमाद उस ताने-बाने को इतना उलझा देता है कि परिवार में बिखराव की परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है।

7. **पारस्परिक विश्वास की भूमि–** जैसे एक पक्षी का श्रम से बनाया हुआ सुन्दर नीड़ आंधी के एक झोंके से बिखर जाता है उसी प्रकार संदेह और असहष्णुता की आंधी पीढ़ियों से संगठित परिवार को छिन्न-भिन्न कर देती है। विश्वास की ठोस धरती पर जीने वाला व्यक्ति संदेह की छिपकली को अपने पास फटकने ही नहीं देता। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने वाला व्यक्ति बहुत जल्दी संदिग्ध हो जाता है। बच्चों को खाद्य पदार्थों का वितरण, उनकी किसी गलती पर डांट, उनकी इच्छाओं की पूर्ति आदि छोटे-छोटे प्रसंग संदेह की कांटेदार नागफनी उगा देते हैं। फिर नजरिया बदल जाता है और प्रत्येक प्रवृत्ति पर पक्षपात का प्रश्न चिह्न टांग दिया जाता है। ऐसी घटनाओं की जितनी पुनरावृत्ति होगी, परिवार उतना ही दूषित हो जाएगा।

जिस व्यक्ति को यह आकांक्षा हो कि वह किसी भी मूल्य पर अपने परिवार को बिखरने नहीं देगा, उसे पारस्परिक विश्वास को सुरक्षित रखने के लिए निरन्तर जागरूक रहने की आवश्यकता है। विश्वास पर आघात करने वाले घटना-प्रसंगों में रूबरू बातचीत की परंपरा स्थापित की जाए तो समस्या का समाधान बहुत अच्छे ढंग से हो सकता है। किसी में स्पष्ट रूप से बात करने का साहस न हो, उसे सहिष्णु बन कर स्थिति को उलझने से रोकना चाहिए। जहाँ न तो सौहार्दपूर्ण वातावरण में बातचीत हो, न सहिष्णुता हो वहाँ व्यक्ति-व्यक्ति के मन में नफरत की बारूद एकत्रित होती जाती है, जो कभी भी भयंकर विस्फोट कर सकती है।

8. **सहिष्णु मनोवृत्ति–** व्यक्ति और कुछ जाने या नहीं, किन्तु सहन करना सीख ले तो एक परिवार में सैंकड़ों व्यक्ति शांति से रह सकते हैं। सहन करने की मनोवृत्ति न हो तो दो व्यक्ति भी साथ नहीं रह पाते। बिखरते हुए परिवार और आए दिन बढ़ते जा रहे तलाक असहिष्णु मनोवृत्ति की देन हैं। सहिष्णुता एक ऐसा दुर्लभ गुण है जो मनुष्य के मन को मजबूत बना देता है। जिस मन पर सामान्य-सी घटना दरार ला सकती है वही मन पैरों तले रौंदने पर भी अक्षुण्ण बना रहे, कितनी बड़ी उपलब्धि है, पर कठिन है प्रतिकूल परिस्थितियों में सहन करने का मनोभाव।

परिवार का स्वास्थ्य सहिष्णुता के कारण ही सुरक्षित रह सकता है। स्वस्थ परिवार की संरचना के लिए एक दूसरे के विचारों, व्यवहारों, तौर तरीकों को सहन करना बहुत जरूरी है। सहना केवल छोटों के लिए ही जरूरी नहीं है बड़े लोगों के लिए तो वह कर्त्तव्य की कसौटी है। जो जिस परिवेश में जितना बड़ा होता है उसे उतना ही अधिक सहना पड़ता है।

जहाँ क्रोध है, लोभ है, असहिष्णुता है वहाँ व्यक्ति की शांति नष्ट हो जाती है। जहाँ परिवार में कलह होता है, व्यक्ति में असहिष्णुता होती है, वहाँ अशांति का वातावरण बन जाता है। सहिष्णु व्यक्ति ही शांत वातावरण का निर्माण कर सकता है।

9. **पारस्परिक संवाद–** परिवार में अधिकतर विवाद, संवाद के अभाव के कारण होते हैं। जहाँ संवाद होता है वहाँ बड़े से बड़ा विवाद समाप्त हो जाता है। जहाँ संवाद नहीं होता वहाँ नये-नये विवाद खड़े हो जाते हैं। घर में बढ़ते विवाद, परिवार टूटने में अहं भूमिका रखते हैं।

10. **परस्पर समझौते की भावना–** परिवार शांति, सर्जना और विश्रांति का केन्द्र है। परिवार से आदमी को प्रेम और सुरक्षा मिलती है। अपनों के बीच आदमी अपने तन-

मन की विश्रांति के लिए प्रेम और शांति के आगोश में अपने को ऊर्जान्वित अनुभव करता है। यह सब परिवार में ही संभव होता है। परिवार में जहाँ बच्चे को कोमल सार संभाल मिलती है वहीं युवा को जीवन के लिए सही निर्देशन और नसीहत तथा बड़ों को श्रद्धा एवं मान मिलता है। वर्तमान युग में परिवर्तन आया है। आवश्यकताओं ने हार्दिक निकटता में दूरियाँ पैदा कर दी हैं। यही कारण है कि संयुक्त परिवार बिखरने लगे हैं और एकल परिवार में बँटने लगे हैं। जहाँ परस्पर समझौता हो, एक दूसरे का सम्मान हो, उस परिवार में टूट नहीं होती और वही परिवार उन्नति के शिखर पर चढ़ता है।

11. **परिवार के लिए समय**– परिवार में रहते हुए कभी-कभी इच्छाओं का बलिदान भी करना चाहिये, अन्यथा इच्छाओं का टकराव आत्मीयता में ज़हर घोल देता है।
समस्याएँ इसलिए खड़ी होती हैं कि हम अपने परिवार के लिए समय नहीं निकालते हैं। वास्तव में हमारे पास दोस्तों के लिए समय है, खाने के लिए समय है, गप्पें मारने के लिए समय है, टी.वी. देखने के लिए समय है, व्यापार व्यवसाय के लिए समय है, परन्तु दुःख और पीड़ा की बात यह है कि अपने परिवार के लिए हमारे पास समय नहीं है। यदि अपने जीवन में पारस्परिक आनंद और उमंग का अनुभव करना चाहते हैं तो कम से कम 15 मिनिट अपने परिवार के लिए निकालें। पूरा परिवार एक साथ मिलकर बैठे, परस्पर संवाद करे और आपसी समस्याओं का अपने व्यक्तिगत हित में नहीं, अपितु परिवारहित में समाधान करे।

12. **प्रेम, आदर और त्याग की भावना**– वर्तमान में आपसी सामंजस्य तथा प्रेम के अभाव में घर-परिवार में बिखराव की स्थिति पैदा होती जा रही है, जो सोचनीय विषय है। घर को स्वर्ग समान बनाए रखने के लिए सभी के प्रति प्रेम व्यवहार व आदर होना चाहिए तथा एक दूसरे के अच्छे विचारों को जानने का प्रयास करना चाहिए ताकि आपस में सामञ्जस्य बना रहे। कहा भी है-

परम्पराएँ और पीढ़ियाँ अपनापन पा हंसती हैं।
प्रेम, समन्वय खानदान में छलका देती मस्ती हैं।।

13. **रिश्ते मजबूत बनाएँ**– रिश्तों का धागा बहुत पतला होता है, लेकिन अच्छे ढंग से रिश्ता निभाने पर यह धागा जीवन भर के लिए मजबूत व अटूट हो सकता है। सभी को रिश्तेदारों के प्रति मन में सद्भाव एवं सम्मान रखना चाहिए।

14. **संस्कारों की भूमिका**– व्यक्ति के उच्च जीवन-निर्माण में संस्कारों की अहंभूमिका

होती है। अगर परिवार में सभी लोग एक दूसरे के प्रति सम्मान-सद्भाव की भावना रखते हैं तो नई पीढ़ी में बाल्यकाल से ही अच्छे संस्कार पैदा होंगे। इन्हीं संस्कारों के आधार पर नई पीढ़ी का भविष्य निर्भर करता है।

बेटी देखे मम्मी और दादी के मधुरिम रिश्ते को।
अनजाने महकाती रहती वो भावी गुलदस्ते को।।

माता-पिता ही बालक की पहली पाठशाला होते हैं। परिवार में माहौल बिगड़ने एवं वातावरण दूषित होने के लिए परिवार के लोग ही जिम्मेदार होते हैं, अतः सकारात्मक सोच रखना जरूरी है।

उपसंहार- आज के भौतिक सुखों के वातावरणयुक्त मकान, भव्य इमारतों की तरह हैं, जिनमें सभी सुविधाएँ है। रहने के लिए प्रचुर स्थान है, सभी साधन सुव्यवस्थित हैं, फिर भी उनमें हंसी के ठहाके, बच्चों की किलकारियाँ, ननद भाभी और देवरानी, जेठानी की गपशप, बुजुर्गों की पंचायत नजर नहीं आती है। अब तो पोप म्यूजिक, टी.वी. चैनल एवं पालतू कुत्तों की भौं-भौं नजर आती है। पति को परमेश्वर मानने वाली पत्नी भी पति को बहिष्कृत कर तलाक की राह पर चल पड़ती है। पति भी पत्नी की परवाह न कर तलाक तक पहुँच जाता है। क्यों? क्योंकि प्रेम और समन्वय नहीं रहा। टूटते परिवार को आपसी प्रेम, समन्वय, तालमेल और सहनशीलता से ही बचाया जा सकता है। कवि के शब्दों में-

परिवार व समाज में सहनशील बनो,
जीवन के संग्राम में कर्मशील बनो।
सत्य और प्रेम की महक हो जीवन में।
मृदुभाषी, शालीन और विवेकशील बनो।।

-धर्मपत्नी श्री भरत जी मांडोत,
द्वारा- महेन्द्र जी जैन, न.19, न्यू भूपालपुरा,
भूपालपुरा ग्राउन्ड के पास, उदयपुर-313001 (राज.)

'हीरा प्रवचन-पीयूष' (भाग-1,2,3,4) पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल शाखा जयपुर द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता का शुभारम्भ 15 मार्च, 2012 को हो चुका है। प्रथम खण्ड की उत्तर पुस्तिका 30 जून, 2012 तक जमा कराई जा सकती है। प्रश्नों के उत्तर देते समय आप यह उल्लेख अवश्य करें कि हीरा प्रवचन-पीयूष के किस वर्ष के संस्करण का आपने उपयोग किया है।

- उर्मिला बोथरा, अध्यक्ष, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर मो. : 09314501856

प्रतिक्रिया

विवाह और जैन एकता*

डॉ. दिलीप धींग

जैन धर्म सिद्धान्ततः जातिवाद का पक्षधर नहीं है, किन्तु विवाह में मुख्य बाते हैं, संस्कार, खान-पान, जीवन-शैली और जीवन-स्तर की समानताएँ। जब इस प्रकार की समानताओं को नज़र अंदाज करके और माता-पिता आदि उपकारियों की बिना अनुमति/सहमति विवाह किये जाते हैं तो उनके सफल और फलीभूत होने की संभावनाएँ क्षीण हो जाती हैं।

जैन समाज में अन्तर्जातीय विवाह का एक कारण जैन समाज की आपसी फूट भी है। जातिगत और सम्प्रदायगत, दोनों स्तरों की फूट का फायदा तीसरा उठाता है। उदाहरण के तौर पर जैन समाज की ओसवाल जाति छोटे साजन और बड़े साजन में बँटी हुई है। जिनके बीच वैवाहिक सम्बन्ध को बड़े-बुजुर्ग निषिद्ध मानते हैं। आजकल की युवा पीढ़ी उनके अहंकार को तोड़ने का काम कर रही है। यह तो जैन समाज की एक जाति का ही उदाहरण है। दूसरी जातियों में भी अनेक प्रकार की उपजातियाँ हैं, जिनमें तरह-तरह के प्रतिबंध हैं। यदि कहीं उन वैवाहिक प्रतिबंध वाली जातियों व उपजातियों के लड़के-लड़की के बीच विवाह हो जाता है तो अनावश्यक चर्चा और निन्दा-विकथा का विषय बन जाता है। जिस प्रकार स्वच्छन्दता अन्तर्जातीय विवाह का कारण बनती है, उसी प्रकार इस प्रकार के कठोर सामाजिक प्रतिबंध भी अन्तर्जातीय विवाह के कारण बनते हैं। जैन समाज के प्रबुद्ध वर्ग को इस अतिवाद पर गंभीरता से विचार-विमर्श करना चाहिये।

धार्मिक समानता के साथ संस्कार व संस्कृति की समानता भी जुड़ी है। यदि जैन समाज की आपसी जातियों और सम्प्रदायों में वैवाहिक सम्बन्ध होते हैं तो जैन एकता की दृष्टि से यह अच्छा है। जैन एकता के लिए समर्पित जैन संगठनों को ऐसी शादियों को प्रोत्साहन करना चाहिये। ऐसे युगल और युगल-परिवारों का सम्मान किया जाना चाहिये। इस प्रकार के विवाह होने से वर्तमान में युवक-युवतियों के शैक्षणिक स्तर की दृष्टि से भी चयन में अधिक विकल्प उपलब्ध हो जाते हैं।

कोई योग्य कुलीन अजैन लड़का यदि किसी जैन लड़की से विवाह करने से पूर्व विधिवत् संकल्पपूर्वक जैन धर्म को स्वीकार कर लेता है तो ऐसे विवाह को सामाजिक मान्यता देनी चाहिये। योग्य अजैन लड़के के साथ विवाह की इच्छा होने पर प्रबुद्ध जैन लड़की या उसके परिजन ऐसी शर्त रख सकते हैं और उस शर्त को बड़ों व गुरुजनों की साक्षी में नियमपूर्वक आजीवन संकल्प में परिवर्तित करवाया जा सकता है। कहने की

* जिनवाणी, फरवरी 2012 के सम्पादकीय 'भटकती युवापीढी' पर प्रतिक्रिया

आवश्यकता नहीं है कि जैन धर्म स्वीकार करने के लिए शुद्ध खान-पान, व्यसन-मुक्त जीवन और पंच परमेष्ठी के प्रति आस्था जैसी बातें अनिवार्य शर्तें हैं। ये अनिवार्यताएँ किसी भी व्यक्ति को श्रेष्ठ व्यक्ति बनाने में सहायक हैं।

इसी प्रकार योग्य कुलीन अजैन लड़की को भी अपनाया जा सकता है। मेरे इस विचार में कर्मणा जैन को वैवाहिक, पारिवारिक और सामाजिक मान्यता देने की भावना है। जैन श्रावकाचार की दीक्षा (सम्यक्त्व) लेने पर ऐसी मान्यता विवाहोपरान्त भी दी जा सकती है। जब अनगार धर्म के अन्तर्गत अन्य जाति के योग्य मुमुक्षु स्वीकार्य हो सकते हैं, पूजनीय हो सकते हैं तो आगार (गृहस्थ) धर्म में अन्य जाति में जन्मे योग्य सदस्य स्वीकार क्यों नहीं हो सकते हैं? मेरी इस बात में कहीं भी मर्यादाओं की खिलाफत या विद्रोह नहीं है। समय के साथ हमने अनेक परिवर्तनों को स्वीकार किया है। इस प्रकार के परिवर्तनों को भी विवेकसम्मत ढंग से अपनाने और उन्हें सामाजिक मान्यता देने की दिशा में विचार किया जाना चाहिये। किसी का बहिष्कार और तिरस्कार करने की बजाय उसकी संभावनाओं को धर्म और समाज के व्यापक हित में नियोजित किया जाना चाहिये। प्रेम, आदर और समानता की अनुभूति के साथ ही किसी को अपना बनाया जा सकता है।

जो लोग जैन धर्म के प्रचार-प्रसार और विस्तार की बात करते हैं, उन्हें इस बिन्दु पर गंभीरता से विचार करना चाहिये। कई बार लोगों के धार्मिक जीवन में तथा समाज की सभाओं और संस्थाओं में भी जातीय-उपजातीय अहंकार और साम्प्रदायिक कदाग्रह जैसी स्थितियाँ देखने को मिलती हैं। इन स्थितियों में एक तत्त्व और जुड़ जाता है, वह है- पैसे और पैसेवालों को अनावश्यक व अत्यधिक महत्त्व दिया जाना। जो समाज आदर्श की बड़ी-बड़ी बातें करे और अपनी छोटी-छोटी जीर्ण दीवारों को भी नहीं तोड़ सके तो उस समाज के धर्म का प्रचार जन-जन में कैसे होगा? याद रखा जाना चाहिये कि गुरु-परिवर्तन या सम्प्रदाय-परिवर्तन को जिनशासन की प्रभावना कहना ठीक नहीं है। सम्पूर्ण जिनशासन में पंच परमेष्ठी, चौबीस तीर्थंकर और अन्य सभी प्रमुख बातें समान हैं। प्रभावना तो तब है जब कोई जैनेतर व्यक्ति जैन धर्म को समझकर स्वीकार करे और अपने जीवन को रूपान्तरित करे। इसलिए हमें आपसी होड़ाहोड़ी और अस्वस्थ स्पर्धा को छोड़कर असली काम की ओर ध्यान देना चाहिये।

जैन समाज के वैवाहिक मापदण्ड तथा सामाजिक संरचना से जैन एकता का बिन्दु भी जुड़ा है, इसलिए विषय को थोड़ा-सा मोड़ते हुए मैंने मेरी बात रखी है। जैन समाज के प्रबुद्ध वर्ग को समाज के पुनर्निर्माण और जैन धर्म के दिग्दिगन्त प्रचार-प्रसार के लिए मिल बैठकर वर्तमान की परिवर्तित परिस्थितियों में विचार-विमर्श करना चाहिए।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-3130002 (राज.)

बाल-स्तम्भ

भीख और भिक्षा में भेद

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित आलेख को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 जून 2012 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

प्रत्येक प्राणी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने आस-पास के वातावरण से पूर्ण करता है। चींटी से लेकर हाथी तक सभी प्रकृति से अपना पोषण कर जीवन-यापन करते हैं। मानव भी प्रकृति से प्राप्त अन्न, फल आदि द्वारा शरीर का भरण-पोषण करता है। चूंकि मानव समाज में रहता है, वह एक शिष्ट और विकसित प्राणी है तो वह प्रकृति से प्राप्त अन्न, सब्जी आदि को विभिन्न व्यञ्जनों के रूप में रूपान्तरित कर भोजन करता है। शिक्षा, आवास, व्यवसाय आदि व्यवस्थाओं से व्यवस्थित समाज में रहने वाले मानव विभिन्न परिस्थितियों में जीते हैं। कुछ अधिक पैसे वाले होने से अधिक सुख-सुविधा के साथ, कुछ मध्यम आर्थिक स्थिति में तो कुछ निम्न आर्थिक स्थिति में जीते हैं। कुछ लोग इतने गरीब और लाचार होते हैं कि वे अपने भोजन तक की व्यवस्था नहीं कर पाते, परिणामस्वरूप दूसरों से भीख मांगकर खाने के लिए मजबूर हो जाते हैं। वे भिखारी कहे जाते हैं। वहीं दूसरी तरफ समाज में कुछ ऐसे चिन्तनशील व्रती, त्यागी महापुरुष होते हैं जो जन्म-मृत्यु के रहस्यमय सत्य की खोज में, अपनी इन्द्रियों और मन को वश में करने हेतु इस संसार से विरक्त होकर अपना धन, घर-गृहस्थी छोड़कर संत हो जाते हैं। वे अपनी आवश्यकताओं को अत्यधिक सीमित कर लेते हैं, अपने जीवन-यापन के लिए धनार्जन नहीं करते, मात्र शरीर चलता रहे इतने पोषण के लिए वांछित भोजन लेने हेतु गृहस्थ के घर पर जाते हैं। वे अपने त्याग से, एवं साधक-जीवन के अनुभवों से उपदेश देकर समाज को एक नई दिशा प्रदान करते

हैं। वे भिक्षुक, अनगार, श्रमण या सन्त कहलाते हैं।

समाज में भीख मांगकर उदर पोषण करने वाले भिखारी और भिक्षा लेकर अपने पवित्र उद्देश्य में प्रवृत्त रहने वाले संतों की बाह्य क्रिया समान दिखाई देती है। यही कारण है कि कुछ लोग भिक्षा और भीख में अन्तर नहीं कर पाते। यद्यपि वे स्वयं देखते हैं कि भीख मांगने वाले घरों के बाहर से दीन-हीन आवाज में भीख की मांग करते हैं। ऐसे भिखारी कभी रूखा-सूखा, कभी जूठा तो कभी बासी भोजन प्राप्त करते हैं और कभी दुत्कारे जाते हैं। गृहस्थ इच्छा हो तो भिखारी को कुछ दे देता है, अन्यथा अप्रिय शब्दों की वर्षा कर देता है। कोई कहता है- "चल, चल, आगे चल। यहाँ क्या तूं कमा के रख गया है?" तो कोई कहता है-"अरे हट्टा-कट्टा है, हाथ-पैर सलामत है, फिर भी भीख मांगता है। ले यह झाडू, बाहर का कचरा निकाल दे फिर रोटी ले जाना।"

एक सेठजी के मकान के सम्मुख एक दिन एक भिखारी भीख मांगने आया। द्वार पर खड़ा होकर वह याचना करने लगा- "भगवान आपका भला करेगा सेठ। ठंडी-बासी रोटी दे दे।" सेठ उस समय भीख देने के मूड में नहीं था। बोला-"जाओ बाबा, जाओ यहाँ से। यहाँ रोटी-वोटी नहीं है।" भिखारी थोड़ा ढीठ था, बोला- "सेठ! रोटी नहीं सही, एक रुपया दे दे, बडे जोर से भूख लगी है। कुछ लेकर खा लूँगा।" सेठ ने आँखें तरेरी और बोला- "रुपया चाहिए। कहाँ से लाऊँ रुपया! तूं कमाके यहाँ रख गया था क्या? शर्म भी नहीं आती मांगते हुए। भाग यहाँ से।" भिखारी फिर भी गया नहीं, गिड़गिड़ाते हुए बोला-"सेठ! रुपया न सही, कोई फटा-पुराना तन का उतरा-पुतरा कपड़ा ही दे दो। बड़ी सर्दी है, तन कांप रहा है। तुम्हारी दया से सर्दी कम हो जायेगी।" सेठ बिफर गया-"अरे, क्यों मेरा सिर खाए जा रहा है। कह दिया न कि यहाँ कुछ नहीं है।" इस पर भिखारी ने बड़े व्यंग्यात्मक स्वर में सेठ की हंसी उड़ाते हुए कहा- "सेठ! तेरे पास रोटी नहीं, रुपया नहीं, कपड़ा नहीं, फिर तो तुम भी मेरे बराबर ही हो। चल, यहाँ बैठा क्या कर रहा है, मेरे साथ चल, कुछ तो तुझे मिल ही जाएगा।" स्वर में व्यंग्य है पर वेदना की टीस भी तो है। करुणाभाव से उसे कुछ मिलना चाहिए, पर उसमें भी आना-कानी होती है।

संत-भिक्षा का आलम कुछ अलग, कुछ निराला है। वह घर के बाहर खड़ा होकर नहीं मांगता, बल्कि चोर की तरह चुपचाप बिना किसी की स्वीकृति के घर के भीतर जाता है और साहूकार की तरह उस घर से बाहर निकलता है। यहाँ चोर की तरह कहने का मेरा तात्पर्य यह है कि वह मालूम नहीं पड़ने देता अपने आगमन

का। सात्त्विक और निर्दोष आहार मिले तो लेता है, अन्यथा शांत मन और समभाव से लौट आता है। जितना आवश्यक हो, उतना ही आहार अनेक घरों से थोड़ा-थोड़ा करके लेता है। आहार मिले तो संयम-वृद्धि और नहीं मिले तो यही चिन्तन कि चलो, सहज तप हो गया। संत तप की नव कोटि गवेषणा करते हैं, बयालीस दोष टालते हैं, अगले समय के लिए संग्रह नहीं करते। अपने लिए बनवाते नहीं, अपने लिए बनाने का अनुमोदन भी नहीं करते। ज्ञात हो जाए कि संतों के निमित्त बना है तो ग्रहण नहीं करते। वे अपने लिए कोई वस्तु खरीदते नहीं, किसी से कहकर खरीदवाते नहीं, अपने लिए खरीदी हुई वस्तु को ग्रहण नहीं करते। कोई भी संत ऐसी स्थिति में वस्तु ग्रहण करे तो वह उसके लिए अकल्पनीय है।

साधु सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के पश्चात् कोई भी वस्तु मांगकर लाए तो वह कालातिक्रांत है। दो कोस से बाहर जाकर गोचरी लाए तो क्षेत्रातिक्रान्त है। दिन में लाया आहार-पानी रात्रि में रखना वर्जित है। भूल से रह जाए तो परठना आवश्यक है। भूल का प्रायश्चित्त करे। रात्रि में अपने पास औषधि, धातु की ऐनक या अन्य वस्तु सूखा मेवा आदि भी नहीं रखे। साधु द्वारा लाया गया आहार किसी अन्य को देना भी नहीं कल्पता, जिसके निमित्त वस्तु आदि लाई गई उसी को काम में लेना चाहिए। दूसरे साधु-सती के काम में लेनी है तो पुनः आज्ञा प्राप्त करे। बच जाने पर रोटी, साग आदि उन्हें गाय, कुत्ते को देना भी नहीं कल्पता, क्योंकि एक बार देने पर प्रतिदिन अधिक लाने का क्रम बन जाएगा एवं गृहस्थ पर भार बढ़ता जाएगा। चिड़िया, कौए को भी नहीं डाले। ऐसा भाव भी नहीं लावे कि आगे गांव नहीं है, जैनों के घर नहीं है, गोचरी मिलेगी भी या नहीं, क्यों न यहीं से भिक्षा-पात्र भर कर साथ ले लूँ।

भीख मांगना समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है वहाँ साधु-साध्वियों को भिक्षा प्रायः सम्मानपूर्वक एवं भावनापूर्वक दी जाती है। भिखारी में संग्रहवृत्ति होती है वह धीरे-धीरे धन एवं वस्तुओं का अपार संग्रह कर लेता है और वह संगृहीत वस्तु पर ममत्व रखता है। साधु-संग्रह नहीं करता, अतः ममत्व भी नहीं करता। साधु लोगों को सही राह दिखाता है, जबकि भिखारी बनावटी मंगल कामना करता है। मांगी गई वस्तु न मिलने पर वह क्रोधित अथवा रुष्ट होता है, जबकि साधु भिक्षा मिलने या न मिलने पर समत्वभाव में रहता है। भिखारी का लक्ष्य संसार है, जबकि भिक्षुक का लक्ष्य मोक्ष है।

प्रश्न-

1. प्रत्येक प्राणी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कहाँ से करते हैं?

2. क्या भीख मांगना ठीक है?
3. भीख और भिक्षा में कोई चार अन्तर बताइये।
4. कालातिक्रान्त का क्या आशय है?
5. साधु की भिक्षा कठिन क्यों है?
6. साधु गाय, कुत्ते आदि को रोटी, साग आदि क्यों नहीं देता?
7. भिक्षुक एवं भिखारी के लक्ष्य में आप क्या भेद करेंगे?

बाल-स्तम्भ [मार्च-2012] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2012 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'जीओ और जीने दो' आलेख के प्रश्नों के उत्तर 41 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 30 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	श्रेया मेहता-जोधपुर	29
द्वितीय पुरस्कार-200/-	नवीन बैद-बीकानेर	29
तृतीय पुरस्कार- 150/-	श्रेया मेहता-किशनगढ़	29
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	तनिष्का जैन-जोधपुर	29
	वन्दना गेलड़ा-भदेसर	28
	कोमल जैन-सवाईमाधोपुर	28
	गौरव जैन-जोधपुर	28
	आदित्य अब्बाणी-जोधपुर	27

(बाल-स्तम्भ फरवरी, 2012 का परिणाम पृ. 69 पर देखें)

पृष्ठ 91 का शेषांश-

1. धोवन के लिए अनुपयुक्त पदार्थों का विस्तार से विश्लेषण
2. सचित्त-अचित्त पानी के विभिन्न वैज्ञानिक पहलू
3. जैनदर्शन व आधुनिक विज्ञान की दृष्टि में जल
4. Living water cells and working Principle of Homeopathy
5. Dynamisation of water
6. Properties of water (physical, Chemical and Subtle)

कुछ आलेख दोनों भाषाओं में समान हैं तथा कुछ अलग-अलग विषयवस्तु से सम्बद्ध हैं।

आशा है यह पुस्तक धोवन पानी की महत्ता के सम्बन्ध में बुद्धिजीवियों एवं युवापीढ़ी की शंकाओं का निराकरण कर सकेगी।

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (28)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा "फरवरी-मार्च-अप्रेल-2012" के अंकों पर आधारित है। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर नमन मेहता सुपुत्र श्री सुमतिचन्द मेहता, निदेशक-अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्, गजराज नेमीचंद जैन किराणा मर्चेन्ट, सदर बाजार, पीपाड़ शहर-342601 (राज.), फोनः 94141-16766 के पते पर 25 जून 2012 तक मिल जाने चाहिए।

(अ) शब्द–वाक्य की शुद्धि कीजिए– आत्म–धर्म विशुद्धि कीजिए।

1. विपरीत दृष्टि सबसे बड़ा अमृत है।
2. संयमित मन, वचन, काया की प्रवृत्तियाँ ही रोग का मूल कारण है।
3. जं सुणेत्तु सुपुण्णाणं, अधम्मे उप्पज्जइ मई।
4. सभी प्राणी सत्ता, पद आदि की प्राप्ति के लिए रातदिन आलस्य करते हैं।
5. खाने में ज्यादा खाइये, पेटियाँ ज्यादा भरिये, यह भी तप है।
6. जो भीतर की ही घटना को जानता है उसे आध्यात्मिकता आत्म–अशुद्धि देती है।
7. ऋत अथवा सदाचार का जो व्यवहार करते हैं, वे अनार्य हैं।
8. सबकी सोच, रुचि, संस्कार अलग हैं।
9. जिसमें सब्र होता है वह क्षमता से सब सहन कर लेता है।
10. वीतराग–ध्यान अध्यात्म की ऊँची साधना है।
11. नवतत्त्वों के स्वरूप की पुस्तक घर–घर में वितरित नहीं की जाए।
12. कंजूसों का मजा यही, धन जोड़–जोड़ जी जाने में।
13. अच्छाई की बाजार में बेशकीमत है।
14. यह जो शिक्षा है भगवान महावीर की, बाबा पर गीता से पहले उसी का असर है।
15. उनका जीवन अप्रमत्तता से युक्त था।

(ब) "किस ग्रन्थ से ली गई है पंक्ति– किस गहराई तक डूबी भक्ति– जानो पहचानो –पान करो यह उक्ति"

16. कायसा वेगे पच्चक्खाति।

17. जो न जीव को जानता है और न अजीव को, वह संयम को कैसे जान पायेगा?
18. बहुत से प्राणी पृथक्-पृथक् इस जगत् में निवास करते हैं।
19. ज्ञान रूपी धागों से बंधी हुई आत्मा संसार में नहीं भटकती है।
20. प्राणो वै ब्रह्मेति।
21. जो केवलीभाषित है और मेरे द्वारा सुनी गई है।
22. तुम देखने वालों की बात पर विश्वास करके तो चलो।
23. धर्म ध्रुव है, नित्य है, शाश्वत है।
24. धर्म पुण्य का और पुण्य धर्म का पर्याय है।
25. नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा।
26. दंड का भय राज्य के नियंत्रण हेतु अत्यावश्यक है।
27. कुदर्शन के अभिमान का मर्दक, जिनेन्द्र भगवान महावीर का शासन सदा जयवन्त हो।
28. वह शक्र हमें पापों से दूर रखें।
29. धम्मं पादुरकासि कासवं।
30. पाँच वर्ष की दीक्षा पर्याय वाला श्रमण यदि कुशल और अक्षत चारित्र वाला हो तो उसे आचार्य पद देना कल्पता है।

(स) "मुझे पहिचानो- मैं हूँ कौन- जैन धर्म फैले चहुँ ओर।"

31. समाज और सम्प्रदाय में होने वाले झगड़ों का मैं मूल कारण हूँ।
32. मेरी वजह से हवा में दम घुटता है, प्रकृति विकृति की ओर बढ़ रही है।
33. जहाँ जीवन है वहाँ निश्चित रूप से मेरा अस्तित्व भी है।
34. मैं स्वयं का बोध कराता हूँ।
35. मैं पोषक तत्त्वों को निकाल मस्तिष्क व गुर्दे को क्षति पहुँचाता हूँ।
36. मुझे मनुस्मृति में 'वैडालव्रतिक' कहा है।
37. मैं माता-पिता और सभ्यता को बर्बाद करने वाला व्यसनयुक्त प्राणी हूँ।
38. मैं 12 वें गुणस्थानवर्ती क्षीण कषाय छद्मस्थ वीतरागी निर्ग्रंथों की जघन्य स्थिति हूँ।
39. परिस्थितियों को बदलने के लिए मुझको बढ़ाना होगा।
40. मैं मानव जीवन को सफल बनाने का राजमार्ग हूँ।
41. मेरी बात केवल मनुष्य के संदर्भ में ही सार्थक है।
42. मेरे जन्म पर मेरी माता ने सिंह का स्वप्न देखा।

43. सहज ही वर्ष में 6 माह की तपस्या के लाभ के लिए मेरा त्याग आवश्यक है।

44. मैं व्यक्ति के विकास और पतन दोनों में सहायक हूँ।

45. मैं हानि से बचने का श्रेष्ठ उपाय हूँ।

(द) ''दीजिए प्रश्नों के उत्तर-तोड़कर कर्मों के प्रस्तर (शब्द सीमा 30 से 50 शब्द)''

46. गणाधीश पूज्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु' के जीवन में 'उत्सव' नाम में ही नहीं काम में भी रहता था? उल्लेखित कीजिए।

47. ''रत्नसंघीया महासती श्री समता जी का देवलोकगमन'' में उनकी वेदना पर समता के संबंध में आई हुई पंक्तियाँ लिखिए।

48. 'जलगांव' शहर की विशेषता बताइए- स्वजीवन में भी प्रकटाइए।

(य) ''पहेली प्रश्न को आप बुझाओ, शीर्षकों से उत्तर दे जाओ।''

विशेष:- पहेली प्रश्न का उत्तर जिनवाणी में आए विभिन्न शीर्षकों में से दीजिए-

49. जिनकी आशीष स्नेह छाँव से हमने, सब कुछ पाया व किया है हमने।
दे उसे धन्यवाद सदैव जिससे, कठिन विषयों को भी सुलझाया हमने।।

50. जिसने मुझको बर्बाद किया, सुखी नहीं वह रह पाया।
जिसने मेरा उपयोग किया, विकास मार्ग है दिखलाया।।

जिनवाणी पर अभिमत

सदाचार का सबक

श्री लक्ष्मीचन्द जैन

अपने विभिन्न अंकों में भ्रष्टाचार पर चिंतन प्रस्तुत कर जिनवाणी पत्रिका सदाचार की वर्णमाला में सद्विचार का प्रवर्तन कर रही है तथा विश्व को भ्रष्ट आचरण के स्थान पर सम्यक् सदाचरण का मार्ग प्रशस्त कर रही है। सभी लेख प्रशंसनीय एवं स्वाध्याययोग्य हैं। पाठक को मन में अपने भीतर झांकने का विचार तो आ ही जाता है कि मेरा आचरण कितना शुद्ध है। तीन अंगुलियाँ मुझे कह रही हैं कि अपने दोषों से अपने आप को बचाओ।

जिनवाणी महिमामयी है। शाश्वत सुखदा कल्याणी है। सप्तकुव्यसन के त्याग की संदेशवाहिनी है। भ्रष्ट आचरण से बचाकर सदाचरण का पाठ पढ़ाने वाली है। 70 वर्षों से सबकी मार्गदर्शिका है। विशेषांक की परम्परा में अनूठी आभामयी है।

-प्राचार्य, आदर्श ओपन हायर सैकण्डरी स्कूल, छोटी कसरावद, खरगोन (म.प्र.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (26)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह चौदहवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 जून 2012 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-2)

(पृष्ठ 681 से 735 तक से प्रश्न)

प्रश्न संख्या 1 से 24 के उत्तर आगे दी गई वर्ग पहेली की फोटो कापी में भरकर भिजवाने हैं। दाएं-बाएं और ऊपर-नीचे के प्रश्नों के उत्तर में मध्य का अक्षर समान ही रहेगा।

(दाएं से बाएं)

1. यही प्रमाणित होता है कि........क्षमाश्रमण ही देववाचक है, भिन्न नहीं।
2. 14 गाथाओं से कतिपय आचार्यों का .... किया गया है।
3. ऋषिभासित का नाम जो कि नंदी सूत्र की ....में है।
4. नागार्जुन की परम्परा में आगे चलकर आर्य......... हुए।
5. भारतीय इतिहास में स्कन्दगुप्त का नाम .... रहेगा।
6. श्यामाचार्य को ....वंश का तेईसवां पुरुष कहा है।
7. अंतिम वाचनाचार्य आर्य देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण का ही .... है।

8. श्री कृष्ण मां .... की सेवा में उपस्थित हुए।
9. जीवों के अल्पबहुत्व पर .... किया गया है।
10. सम्राट् .... गुप्त के निधनानन्तर पुरुगुप्त राज्य सिंहासन पर बैठा।
11. भद्रबाहु के स्वर्ग गमनानन्तर ..... क्षेत्र से श्रुतज्ञान रूपी चन्द्र पूर्णावस्था में नहीं रहा।
12. एक अज्ञात........ निम्नलिखित प्राचीन श्लोक उद्धृत किया है।

(ऊपर से नीचे)

1. आपका..... यही परिचय उपलब्ध होता है।
2. छद्मस्थ द्वारा भूल संभव है, इस ...... में तथ्यातथ्य की गहराई में उतरे।
3. नन्दी और अनुयोगद्वार को .... सूत्र के रूप में मान्य करती है।
4. ...... मसी, मसीपात्र आदि लाने, सम्हालने में आरम्भ एवं प्रमाद की वृद्धि होगी।
5. स्कन्दगुप्त के ..... चरित्र का भीतरी के स्तम्भलेख में उल्लेख किया गया है।
6. इन दोनों की .... रूप में है।
7. .... के निर्वाण के समय ही जम्बू को केवलज्ञान हुआ।
8. राजा ने शोक का परित्याग कर उपाश्रय में आकर कल्पसूत्र का ...... किया।
9. अनिश्चित काल पश्चात् धरसेन नामक महान् तपस्वी .... हुए।
10. वस्तुतः इस प्रकार के प्रबल ..... विद्यमान है।
11. दृष्टिवाद के एक देश के .... आचार्य नक्षत्र हुआ।
12. शास्त्र ..... के पीछे बहुत सी खटपटें करनी होगीं।

(पच्चीसवां प्रश्न)

25. नन्दीसूत्रानुसार कालिक एवं उत्कालिक सूत्रों की संख्या कितनी है?

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (24) का परिणाम

जिनवाणी मार्च, 2012 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 201 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- राजकुमारी जैन-दिल्ली

द्वितीय पुरस्कार- सुनन्दा अशोक जी छलाणी-यवतमाल (महा.)

तृतीय पुरस्कार- उगमादेवी दुग्गड-बैंगलोर (कर्नाटक)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. मीनू मेहता-साहूकारपेठ (चेन्नई)
2. किरण जैन-होशियारपुर (पंजाब)

3. बलवन्त सिंह चोरडिया-झालरापाटन (राज.)

4. सुरेखा ए. भण्डारी-पिंपलगांव (महा.)

5. अपना अजय जैन-जलगांव (महा.)

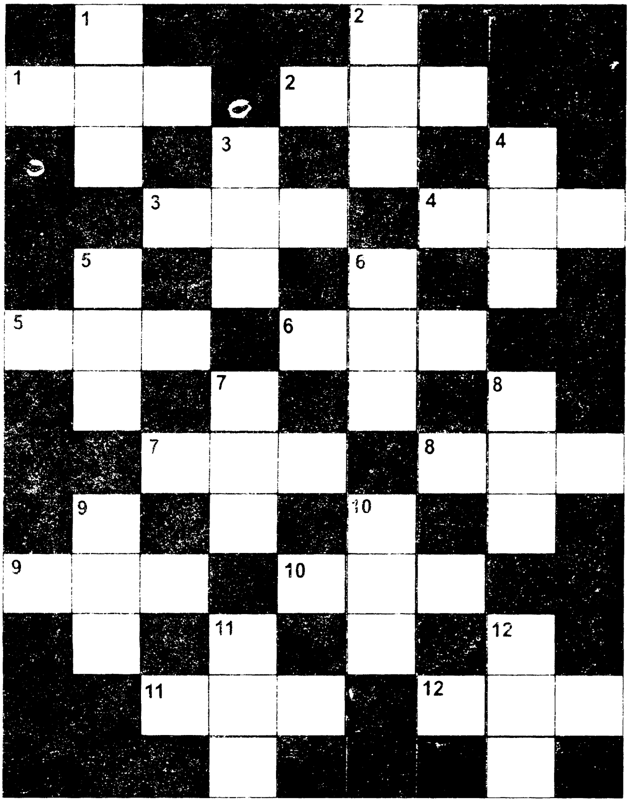

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता–Aarti Rajendrakumarji Mutha-Amravati, Abhilasha Hirawat-Mumbai, Anil Kumar Jain-Kota, Anu Jain-Hoshiarpur Anurag Surana-Ajmer, Aruna jain-Hoshiarpur, Asha Doshi-Jaipur, Babu Lal Jain-Jaipur, Babulal k Katariya-Hyderabad, Bhagywanti Tater-Jodhpur, BhopalChandsa Sethiya-Jodhpur, Chandanmal Gugaliya-Pali, Chandra Mohnot-Mumbai, Chandrakala Mehta-Bangalore, Chetana B Bothra-Mumbai, Deepmala Singhvi-Pali, Dharm Chandsa Dhammani-Ahemdabad, Dharmesh Punamiya-Pali, Dharmi Chand Choudhary-Bhilwara, Divya Daga-Jaipur, Gyan Chand Kothari-Ajmer, Hansraj Mohnoth-Jaipur, Hem Raj Surana-Jaipur, Hema Rameshji Karnawat-Ahmadnagar, Indu Kamleshji Jain-Mumbai, Jaanvi Sagar Gandhi-Ichalkaranji, Jagdish Prasad Jain-Kota, Jaya Bhandari, Johari Mal Chajjer-Jodhpur, Jyoti Bhansali-Bangalore, Kalpana Dhakad-Gurgaon, Kamla Devi Satia-Ajmer, Kamla Singhvi-Jaipur, Kamla Surana-Jodhpur, Kamlesh Gelada-Ajmer, Kanchan Parasmalji Lodha-Nasik, Kanhaiya Lal Jain-Bhilwara, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Khimji R Shah-Mumbai, Kuntal Kumari Jain-Jaipur, Lalita Gadiya-Hyderabad, Lalita Ganeshchandji Surana-Solapur, Madhubala Ostwal-Nasik, Mangala Prakash Gadiya-Jalgaon, Manju Bhandari-Beawar, Manju Dilip Jain-Mumbai, Manju

Kanstiya-Kolkata, Manjula Vasantkumar Jain-Mumbai, Meena Chordia-Chennai, Meena Vijay Bora-Mumbai, Milap Lunawat-Ahemdabad, Monali Mishrimalji Pipada-Ichalkaranji, Mukesh Kumar Jain-Sawai Madhopur, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Narendra Gopichand Bamb-Bhayandar, Nathmal Kothari-Durg, Navratanmal Mehta-Ajmer, Neelam Chipad-Jaipur, Neelam Jain-Gurgaon, Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Nutan Ajit Bhandari-Ichalkaranji, Padam Chand Agrawal-Jaipur, Padam Chand Munot-Jaipur, Padma R Bohra-Raichur, Patram Jain-Haryana, pinky Jain, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Prabha Gulecha-Bangalore, Prakash Bai Bhurawat-Bhandara, Pramila Kothari-Jodhpur, Pramila Mehta-Jaipur, Pramila Sajjan Raj Mehta-Bangalore, Prasan Gang-Mumbai, Prasan Kothari-Jodhpur, Prathibha Jain-Chittorgarh, Preeti Khincha-Jaipur, Prem Jain-Alwar, Premlata Lodha-Jaipur, Priyadarshna Jain-Jaipur, Priyanka Nagraj Sancheti-Jalgaon, Pushpa Devi Bardia-Jaipur, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, Pushpa Jain-Jaipur, Pushpa Kankariya-Raichur, Pushpa Navlakha, R.Chandra Bothra-Chennai, Raj Kumar Banthiya-Pali, Rajkumari Lodha-Jaipur, Rakhi Jain-Dooni Tonk, Ratan Chand Mehta-Jodhpur, Rekha Kothari-Ajmer, Rishabh Jain-Bundi, Rohit Oswal-Jaipur, Sagar Malji Nahar-Chittorgarh, Sangeeta Nensukhani-Jalgaon, Sangita A singavi-Nasik, Sangita Ravindra Chajjed-Jalgaon, Sanjay Jain-Haryana, Sarla Kankariya-Jalgaon, Saroj jain-Nagpur, Saroj Nahar-Delhi, Seema Jain-Aligarh, Shanta Chamanji Pitaliya-Amravati, Shashikala P Lunawat-Nasik, Shilpa Surana-Ajmer, Shobha Nandlalji Gugale-Ichalkaranji, Shweta Jain-Dooni Tonk, Siddhi Bafna-Jodhpur, Snehlata Jain-Ratlam, Soniya Jain-Sawai Madhopur, Subhash Mohanlalji Dhadiwal-Mumbai, Sudha Bhansali-Jodhpur, Sudha Daga-Bikaner, Sugan Chand Chajjer-Jodhpur, Sunita Doshi-Beawar, Sunita Dulaj-Jaipur, Sunita Tater-Jodhpur, Sunitha Y Singhvi-Chennai, Suresh Chand Jain-Alwar, Suresh Kumar Sand-Pali, Sushila Begani-Bikaner, Sushila Tated-Bhilwara, Sushilaji Kuntilalji Runwal-Pune (MH), Suvarna Nitin Bora-Ichalkaranji, Trishla Tatita-Nagpur, Trupti Pritamji Bora-Ichalkaranji, Ugam Doshi-Secundrabad, Upma Choudhary-Ajmer, Urmila Mehta-Jaipur, Usha Lunawat-Ajmer, Usha Surana-Jaipur, Vandana Anil Khincha-Surat, Vandana Punamiya-Pali, Varsha Dosi-Merta City, Vidya Sanghvi-Badnawar, Vijay Laxmi Jain-Ajmer, Vikas Bamb-Mumbai, Vimala Bohra-Jaipur, Vimla Mehta-Jodhpur, Vimla Mehta-Jodhpur, Vimla Ranulal Kocchar-Nasik, Vimlabai Khinvasra-Dhulia, Yashoda Manakchand Gundecha-Amravati, Yugal Nemichand Ranka-Ahmedabad.

24 एवं उससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Anit Atul Munot-Ichalkaranji, Anjana Rajendra Katkani-Dewas, Basanti Champalal Bhatewar-Dhulia, Bhagwan Raj-pali, Bharti Sunilji Surpure-Ichalkaranji, Devendra Nath Modi-Jodhpur, Javer Narendra Shah-Belgaum, Kamala Modi-Jodhpur, Kiran Pramod Tated-Dewas, Kusum Singhvi-Jodhpur, Madhubala Pramodkumar Bora-Ichalkaranji, Mamta Jain-Sawai Madhopur, Manju Jain-Karauli, Maya Alijar-Secundrabad, Meenabai Rajkumar Nahar-Ichalkaranji, Neetu Gulecha-Hyderabad, Nilima Yogesh Chopada-Ichalkaranji, Nirmala H Surana-Bikaner, Nirmala Rajendra Bora-Ichalkaranji, Pramila Mehta-Ajmer, Preeeti Gugalia-Bhilwara, Prem Singh Choudhary-Bhilwara, Rajesh Jain-Sawai Madhopur, Sadhana Dilipji Gugale-Ichalkaranji, Sangeetha P Baid-Chennai, Sarita Manoj Babel-Ichalkaranji, Seema Dhing-Udaipur, Shakuntala Bohra-Secundrabad, Shobha Nahar-Secundrabad, Smita Nileshji Muthiyan-Ichalkaranji, Sunita Navlakha-Kota, Sushila Bhandari-Bangalore, Sushila Hirawat-Jaipur, Sushila I Ranka-Jalgaon, Chandanmal Parlecha-Jodhpur, Monika Jain-Hoshiarpur, Poonam Jain- Faridkot, Priyanka Mukesh Chopada-Ichalkaranji, Rajni Bhandari-Gurgaon, Reema Jain-Ludhiana, Suresh Chand Jain-Karauli, Sushma Dhariwal-Jaipur, Vijay Laxmi Mohnot-Jaipur, Vijaya Devi Bagmar-Karanataka, Vina Tarunji Kimtee-Rampura, Shobha Sagarmalji Kothari-Dhule, Kamla Singhvi-Jalgaon, Bhavika M Shah-Belgaum, Pratima Jain-Jodhpur.

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

धोवन पानी का विज्ञान* *(Science of Dhovan water)- डॉ.जीवराज जैन, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोनः 0141-2575997, 2571163,फैक्स-0141-2570753,**पृष्ठ**- 243, ***मूल्य***-50 रुपये, ***सन्***- 2012

जल है तो जीवन है। जल का संरक्षण तभी सम्भव है जब उसे किफायत से काम लिया जाए। जल को किफायत से काम लेने पर सम्पूर्ण जीवन शैली संयम की ओर अग्रसर होती है। जैन दर्शन में जल को अप्कायिक जीव की श्रेणी में रखा गया है तथा उसे सचित्त जल कहा गया है। जैन साधु-साध्वी सचित्त जल का कतई उपयोग नहीं करते, क्योंकि उसका उपयोग करने से अप्कायिक एवं अन्य त्रस जीवों का हनन हो जाता है तथा उपयोगकर्ता साधु-साध्वियों को हिंसा का दोष लगता है। कुछ श्रावक भी सचित्त जल-त्यागी होते हैं। जल का उपयोग किए बिना जीवन नहीं चलता, इसलिए त्रस एवं अप्कायिक जीवों से रहित अचित्त (निर्जीव) जल का उपयोग ही आत्महित एवं जगद्हित में श्रेयस्कर है। जल में अचित्तता कई कारणों या विधियों से आती है। जल जब गरम किया जाता है तो वह अचित्त हो जाता है अथवा जल से जब राख आदि के साथ बर्तन धोये जाते हैं तो वह जल अचित्त हो जाता है। इस अचित्त जल को 'धोवन पानी' के नाम से जाना जाता है। आचारांगसूत्र में 21 प्रकार का अचित्त जल कहा गया है। धोवन पानी वैज्ञानिक दृष्टि से स्वास्थ्य के लिए कितना उपयोगी है तथा अन्य सचित्त जल से वह किस प्रकार भिन्न है, इस पर डॉ. जीवराज जैन ने प्रस्तुत पुस्तक में विशद प्रकाश डाला है।

पुस्तक में हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों खण्ड हैं, अतः यह दोनों प्रकार के पाठकों के लिए उपयोगी है। अधिकतर आलेख जल पर किए शोध पर आधारित है। पुस्तक में प्रदत्त विभिन्न चित्र इसके साक्षी हैं। डॉ. जीवराज जैन के धोवन पानी सम्बन्धी कुछ आलेख जिनवाणी पत्रिका में भी प्रकाशित हुए हैं, जिनसे पाठक लाभान्वित हुए हैं। वैज्ञानिक आधार पर धोवन पानी की श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयत्न जैन धर्म को डॉ. जीवराज जैन का योगदान है। वैज्ञानिक यन्त्रों के आधार पर सचित्त एवं अचित्त जल की सरंचना में भेद दिखाया गया है।

पुस्तक में वैज्ञानिक प्रयोगों एवं तर्कों से तथ्यों को सुग्राह्य बनाया गया है। पुस्तक में 9 हिन्दी लेख एवं 14 अंग्रेजी आलेख हैं जिनमें कतिपय शीर्षक इस प्रकार हैं-

(शेषांश पृष्ठ 83 पर देखें)

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(02 मई, 2012)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 11	: अजमेर से विहार कर मदनगंज पधारे। अक्षय तृतीया के पश्चात् विहार कर किशनगढ़ शहर पधारे हैं। कुछ दिन यहाँ विराज कर दूदू की ओर विहार संभावित है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5	: सामायिक-स्वाध्याय भवन, नागौर में सुखसाता पूर्वक विराजमान हैं। अग्रविहार गोटन की ओर संभावित है।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 7	: सामायिक स्वाध्याय भवन, पावटा विराज रहे हैं। जोधपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	: वैशाली नगर, अजमेर विराज रहे हैं। अजमेर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9	: स्नेहलतागंज, इन्दौर विराज रहे हैं। इन्दौर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
विदुषी महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	: किशनगढ़ विराज रहे हैं। कुछ दिन मदनगंज विराजने की सम्भावना है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	: किशनगढ़ विराज रहे हैं। कुछ दिन मदनगंज विराजने की सम्भावना है।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	: जयपुर से विहार कर मालपुरा होते हुए सावर पधारे। अग्र विहार देवली की ओर संभावित है। आपका चातुर्मास रामपुरा बाजार, कोटा घोषित हुआ है।

व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7	: किशनगढ़ विराज रहे हैं। कुछ दिन मदनगंज विराजने की सम्भावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	: किशनगढ़ विराज रहे हैं। कुछ दिन मदनगंज विराजने की सम्भावना है।
सेवाभावी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 9	: किशनगढ़ विराज रहे हैं। कुछ दिन मदनगंज विराजने की सम्भावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	: सेलम (तमिलनाडू) विराज रहे हैं। अग्र विहार कोयम्बटूर की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4	: चिंगलपेठ विराज रहे हैं। अग्र विहार तिरुवन्नामल्लै की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	: जैन भवन, एम.आई.डी.सी., जलगांव विराज रहे हैं। जलगांव के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	: भरतपुर से विहार कर पहरसर की ओर विहार चल रहा है।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	: सरवाड़ विराज रहे हैं। अग्र विहार मदनगंज की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3	: किशनगढ़ विराज रहे हैं। कुछ दिन मदनगंज विराजने की सम्भावना है।

मदनगंज-किशनगढ़ एवं नागौर में तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षयतृतीया पर व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति उत्साह

आगमज्ञ प्रवचन प्रभाकर शीलव्रत के प्रेरक रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि सन्तवृन्द एवं तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में मदनगंज-किशनगढ़ में तथा उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि के सान्निध्य में नागौर में तप एवं दान के विशिष्ट पर्व पर व्रत-प्रत्याख्यानों की प्रेरणा की गई तथा तप एवं दान का महत्त्व प्रतिपादित किया गया। मदनगंज में 46 तपस्वियों ने तथा नागौर में 3 तपस्वियों ने पारणक का लाभ लिया।

मदनगंज-किशनगढ़ स्थित सुमेर क्लब के विशाल प्रांगण में मदनगंज श्री संघ द्वारा आयोजित तपपूर्णाहुति समारोह में विशाल उपस्थिति एवं पधारे हुए तपस्वी भाई-बहिनों का तप के प्रति रुझान प्रेरणादायी रहा। अक्षयतृतीया के तीन दिन पूर्व से ही तपस्वी भाई-बहिनों एवं उनके परिवारजनों का तप की अनुमोदनार्थ मदनगंज पधारना प्रारम्भ हो गया था। पधारने वाले भाई-बहिन प्रतिदिन संत-सतीवृंद के दर्शन, वंदन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ ले रहे थे। अक्षयतृतीया के पावन अवसर पर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 11 एवं तत्वचिंतिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., परमविदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., मधुरव्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 31 के पावन सान्निध्य में मदनगंज स्थित **श्री के.डी.जैन सीनियर सैकण्डरी स्कूल** के प्रवचन सभागार में प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। पूरा प्रवचन हाल श्रोताओं की उपस्थिति से खचाखच भरा हुआ था। सर्वप्रथम मंत्री श्री भागचन्द जी कोचेटा ने तपस्वी भाई-बहिनों के साथ आगन्तुक महानुभावों का शब्दों से स्वागत-सत्कार किया। आचार्यप्रवर के परमभक्त श्री मदनचन्द जी सिंघवी की पुत्रवधू श्रीमती नीलम जी सिंघवी धर्मपत्नी श्री गजेन्द्र जी सिंघवी संचालिका-प्रेसीडेन्सी स्कूल गेगल ने आचार्य भगवन्त के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. ने अक्षयतृतीया एवं भगवान आदिनाथ के पारणे को लेकर तप और दान का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए बताया कि आज का यह पावन पर्व काया को तपाने की, कर्म को खपाने की, जीवों को अभयदान देने की, मुमुक्षुओं को ज्ञानदान देने की प्रेरणा लेकर उपस्थित हुआ है। शास्त्रकारों ने तपों में ब्रह्मचर्य को एवं दानों में अभयदान को श्रेष्ठ बताया है। धर्म की आदि करने वाले प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ने वर्षीतप की साधना की आज असंख्यात वर्ष बीत जाने पर भी उनके तपाराधन को याद किया जाता है। तपस्वी भाई-बहनों! तप करने के साथ मन को भी साधना पड़ेगा, तन के तप के साथ मन का तप होना चाहिए। जैनों का तप तन के साथ मन को साधने का तप है।

महासती सुयशप्रभा जी म.सा. ने तप और दान का महत्व बताते हुए भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। जिसके बोल थे-

अक्षय तृतीया आयी, समय है सुहाना।
प्रभु आदिनाथजी का, आज हुआ पारना।।

तप और दान का यह पर्व आप हम सब को कर्म-निर्जरा का संदेश दे रहा है।

तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने प्रवचन सभा को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि भारत में क्षय रोग ठीक करने का अस्पताल घटप्रभा शहर में स्थित है जो महाराष्ट्र का प्रमुख शहर है। विनाशी के पीछे पागल बना जीव निरन्तर अपनी प्रभा को घटा रहा है। क्षय के पीछे भागने वाला क्षय को प्राप्त करता है। अष्ट कर्म एवं मिथ्यात्व की भूमिका में हमारी प्रभा घट रही हैं। तप के पहले त्याग करना आवश्यक है। तप की आराधना में नाम का पोषण स्वार्थ का पोषण अहम् कृति का पोषण है और अक्षयतृतीया मना रहे हैं तो तप का सार्थक फल प्राप्त नहीं होगा। कामनापूर्ति के सुख में आसक्ति नहीं होना त्याग है। शरीर का सुख स्थायी नहीं है, आत्म सुख स्थायी है। हम आप तप और दान दिवस के इस मंगल पर्व पर अपने आपको टटोलें हम क्या कर रहे हैं। हम महापुरुषों के गुणगान जीभ से नहीं जीवन से करें। आचार से प्रचार होता है। सेठ सुदर्शन का जीवन आज भी हमको प्रेरणा देता है। मेरा जीवन कहाँ है, मैं कहाँ खड़ा हूँ। इस चिन्तन के साथ अक्षयतृतीया मनाना सार्थक होगा।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने सारगर्भित प्रवचन में फरमाया कि तीर्थंकर भगवान महावीर की अन्तिम आदेय अनमोल वाणी में कर्मक्षय का सरलतम उपाय तप और दान को बताया है। संसार के हर कार्य की निष्पत्ति में भावों का अजस्र स्रोत प्रमुख होता है। मदनगंज में आने के साथ इन भावों की निर्मलता के लिए, विशुद्धि के लिए कुछ बातें रखने की कोशिश की जा रही है। जीव को जब प्रत्यक्ष लाभ नज़र आता है तो वह उत्साह व उमंग के साथ उस कार्य से जुड़ जाता है। इसका सरलतम उदाहरण माँ है। माँ के मन में जब बच्चे के प्रति स्नेह की धारा बहती है तो वह अपने सुख-दुःख की परवाह किये बिना अर्थात् अपना दुःख भूल कर शिशु की सेवा में लग जाती है। हम आप सब बचपन से गुजर कर आयें हैं। बचपन में हम सबकी माँ ने अपने को चलना एवं बोलना सिखाने में कितनी बार प्रयास किया। माँ ने बिना हैरान, परेशान हुए उदासी के बिना, क्रोध किए बिना हमको आगे बढ़ाने में कितनी मेहनत की है, उस माँ का जीव जानता है। जब हमारी एक बार कोई बात नहीं मानें तो हमें कितना बुरा लगता है। पर माँ की क्षमता देखो हजार बार समझानें पर हम नहीं समझे तो भी माँ ने हमारे लिए कितनी बार कोशिश की, माँ की भावना का यह सुन्दरतम रूप हम सब के लिए प्रेरणादायी है। माँ की अच्छी भावना का सुफल है कि आज हम तैयार हो गये।

शारीरिक बल नहीं होते हुए भी कई तपस्वी भाई-बहिन तपराधन में संलग्न हैं। कई तपस्वी चालीस साल से तपस्या कर रहे हैं एवं निरन्तरता के साथ कर रहे हैं। हम 70-80 साल के हो गये, तब भी खाने की आसक्ति छूटी नहीं। रात्रिभोजन का त्याग कराने पर बाबजी

दूध खुला रखना, नहीं तो शरीर कमजोर हो जायेगा ऐसा कहने वाले मिल जायेंगे, परन्तु इन तपस्वियों को देखो जिनके शरीर का वजन 35-40 किलो भी नहीं है, परन्तु तपस्या करने में आगे हैं। उत्कृष्ट भावना के साथ कर्मक्षय करने के लिए तपस्वी तप की आराधना कर रहे हैं। मन में उत्साह, उमंग और भावना हो तो कोई काम कठिन नहीं हैं। वर्तमान युग में भगवान से बढ़कर भगवान की वाणी है। आज वीतराग नहीं पर उनकी वाणी आगे है। भगवान की वाणी आज भी हमको दिशा प्रदान कर रही है। तप आराधना के साथ दान का महत्त्व भी शास्त्रकारों ने बताया है। शुद्ध भावों से दिया गया दान तीर्थंकर गोत्र का बंध कराता है। कहा भी है- ''हाथ रो दियो, कभी एलो न जावे'' अर्थात् हाथ से दिया हुआ कभी बेकार नहीं जाता। नीतिकारों ने भी कहा है-ब्याज में धन दुगुना होता है, व्यापार में धन चौगुना होता है, क्षेत्र में धन सौ गुना होता है और देने से धन हजार गुना होता है। तप के साथ देना सीखें अपनी इच्छा का निरोध करना तप है और पुण्य से प्राप्त का सदुपयोग करना दान है। तप और दान का महत्त्व समझकर आगे बढ़ेंगे तो अक्षयतृतीया मनाना सार्थक होगा।

आचार्यप्रवर के प्रवचन पश्चात् कार्यक्रम संचालक श्री भागचन्द जी कोचेटा ने तप साधकों के नाम उच्चारण करने के अनन्तर आवश्यक सूचनाएँ दी। आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से वर्षीतप साधकों में से कइयों ने एक वर्ष और एकान्तर तप बढ़ाया तो कइयों ने एकान्तर तप की साधना हेतु नया नियम ग्रहण किया। अक्षयतृतीया के पावन अवसर पर उपवास, बेले, तेले आदि तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। वहीं नित्य की भांति आयम्बिल, एकाशन के नियम भी हुए।

श्रीमान् राजेन्द्र कुमार जी डांगी परिवार की ओर से घोषणा करवाई गई कि जो भी जिनवाणी पत्रिका का अर्द्ध शुल्क में सदस्य बनना चाहता है उसके लिए डांगी परिवार के पास अपना नाम लिखवा दे। डांगी परिवार ने श्रुत सेवा का लाभ लिया। आचार्यप्रवर के मंगलपाठ के पश्चात् सिटी रोड़ स्थित सुमेर क्लब प्रांगण में तप पूर्णाहुति समारोह का आयोजन हुआ। तप-साधकों के पारिवारिक परिजनों एवं इष्ट मित्रों ने तपस्वियों को इक्षुरस पान करवाने के साथ तप की अनुमोदना की। स्थानीय संघ पदाधिकारीयों ने स्वागत सत्कार और बहुमान में अपूर्व उत्साह दिखाया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक मंडल के चेयर पर्सन श्री मोफतराज जी मुणोत-मुम्बई, पूर्व संघाध्यक्ष श्री कैलाश चन्द जी हीरावत-जयपुर, संघाध्यक्ष श्री सुमेर सिंह जी बोथरा-जयपुर, संघ महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी-जोधपुर ने सभी तपस्वी भाई-बहिनों की सुखसाता पृच्छा कर इक्षु रस से पारणा करवाने के साथ तपस्वियों का बहुमान किया। तपस्वी भाई बहिनों के नामों की सूची इस प्रकार है-1. श्रीमती उषादेवीजी धर्मपत्नी श्री श्रेणिकराज जी चोरड़िया-चेन्नई, 2. श्रीमती शर्मिलादेवी जी

धर्मपत्नी श्री मांगीलाल जी चोरिड़या-चेन्नई, 3. श्रीमती उषाजी धर्मपत्नी श्री महेन्द्रकुमार जी सिंघवी-जोधपुर, 4. श्रीमती सुशीला जी गुलेच्छा-जोधपुर, 5. श्रीमती कमलादेवी जी धर्मपत्नी श्री पारसमल जी मुणोत-जोधपुर, 6. श्रीमती मैनादेवी जी धर्मपत्नी श्री मूलचन्द जी लुणावत-जोधपुर, 7.श्रीमती उगमादेवी जी धर्मपत्नी श्री प्रेमचन्द जी लुणावत-पाँचलासिद्धा, 8.श्रीमती शान्ति जी मेहता-जोधपुर, 9.श्रीमती पुष्पा जी भण्डारी-जोधपुर, 10.श्रीमती अकलकंवरजी धर्मपत्नी श्री इन्दरचन्द जी सिंघवी-जोधपुर, 11.श्रीमती धनवन्तीदेवी जी धर्मपत्नी श्री बस्तीमल जी श्रीश्रीमाल-शिमोगा, 12.श्रीमती लीलादेवी जी धर्मपत्नी श्री शांतिलाल जी श्रीश्रीमाल-जोधपुर, 13.श्रीमती ललिता जी धर्मपत्नी श्री महेन्द्रकुमार जी रेड-जोधपुर, 14.श्री मूलचन्द जी बाफना-जोधपुर, 15.श्रीमती प्रेमबाई जी भण्डारी-जोधपुर, 16.श्रीमती चंचलदेवी जी धर्मपत्नी श्री पूनमचन्द जी बाफना-किशनगढ़शहर, 17.श्रीमती मुक्ता जी धर्मपत्नी श्री सागरमल जी दुधेड़िया-मेड़ता, 18.श्रीमती अकल जी धर्मपत्नी श्री जगदीशमल जी कोठारी-जोधपुर, 19.श्रीमती सुशीला जी धर्मपत्नी श्री कल्याणमल जी बोहरा-इचलकरंजी, 20.श्रीमती शांतिदेवी जी धर्मपत्नी श्री पुखराज जी बोहरा-बडू, 21.श्रीमती मंजूजी धर्मपत्नी श्री योगेश जी पालावत-अलवर, 22.श्रीमती पदमकलाजी धर्मपत्नी श्री पारसमल जी कांकरिया-जोधपुर, 23.श्रीमती रूपादेवी जी धर्मपत्नी श्री गणपतलाल जी जैन-बजरिया-सवाईमाधोपुर, 24.श्रीमती राजीबाई जी धर्मपत्नी श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर, 25.श्रीमती प्रियदर्शनाजी धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर, 26.श्रीमती चन्दादेवी जी धर्मपत्नी श्री भागचन्द जी लोढ़ा-भीलवाड़ा, 27.श्रीमती उर्मिला जी धर्मपत्नी श्री प्रकाशचन्द जी रांका-अजमेर, 28.श्री प्रकाशचन्द जी रांका-अजमेर, 29.श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना-जोधपुर, 30.श्रीमती चन्द्रकान्ता जी धर्मपत्नी श्री किशोर जी डाकलिया-चेन्नई, 31.श्रीमती चंचलकंवर जी धर्मपत्नी श्री मांगीलाल जी कुम्भट-जोधपुर, 32.श्रीमती लीलादेवी जी धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, 33.श्रीमती रेखा जी धर्मपत्नी श्री श्रीपाल जी छाजेड़-जोधपुर, 34.श्रीमती इचरजबाईजी डूंगरवाल-छोटी खाटू, 35.श्रीमती कैलाशदेवी जी धर्मपत्नी श्री पन्नालाल जी-अजमेर, 36.श्रीमती तारादेवी जी धर्मपत्नी श्री अमृतलाल जी बाफना-जोधपुर, 37.श्रीमती चंचलदेवीजी धर्मपत्नी श्री मांगीलाल जी मूथा-पीपाड़शहर, 38.श्रीमती कमला बाई जी धर्मपत्नी श्री सुकनराज जी गुगलिया-हैदराबाद, 39.श्री दीपचन्द जी बोथरा-पांचोरा, 40.श्रीमती ताराबाई धर्मपत्नी श्री दीपचन्द जी बोथरा-पांचोरा, 41.श्रीमती कंचनदेवी जी धर्मपत्नी श्री जवरीलाल जी लोढ़ा-ब्यावर, 42.श्रीमती सज्जनकंवर धर्मपत्नी श्री भीकमचन्द जी मेहता-जोधपुर, 43.श्रीमती गुलाबदेवी धर्मपत्नी श्री हनुमान जी जागीरदार-बालोतरा,

44.श्रीमती विमलादेवी सुराणा-जयपुर, 45.श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी श्री धनराज जं लोढ़ा-कानपुर, 46.श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर।

अक्षय तृतीया पर पधारने वाले सभी महानुभावों की एवं मदनगंज-किशनगढ़ सकल ओसवाल समाज के भाई-बहिनों की स्वधर्मी वात्सल्य सेवा का लाभ श्रीमती रतनदेवी बिरदीचंद कोठारी चेरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री पारसमलजी, नेमीचन्दजी, नरेन्द्रकुमा जी, सूर्यप्रकाशजी कोठारी परिवार ने लिया। उसी दिन आपके ट्रस्ट द्वारा किशनगढ़ अस्पताल को नव-निर्मित विश्रान्तिगृह समर्पित किया गया।

अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ स्थानीय युवक मण्डल, श्राविका मण्डल, जैन सोशियल ग्रुप, नाकोड़ा ग्रुप एवं समस्त श्री संघ के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं ने उत्साह के साथ तपस्वी भाई-बहिनों एवं आगन्तुक महानुभावों के आवास-निवास, भोजन, पारणक आदि की सुन्दर-व्यवस्था में दिन रात श्रम कर पारणक महोत्सव के कार्यक्रम को सफल बनाया। श्री संघ की सभी सेवाएँ अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रहीं। संघाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार जी संकलेचा ने सभी तपस्वी भाई-बहिनों के साथ आगन्तुक महानुभावों एवं संघ के सभी पदाधिकारी कार्यकर्ताओं का हार्दिक आभा व्यक्त किया।

नागौर- मदनगंज की भांति ही नागौर में शान्त-दांत, गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी उपाध्यायप्रव पण्डितरत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. आि ठाणा 5 के पावन सान्निध्य में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर तपस्वी भाई-बहिनों ने नागौ उपस्थित होकर उपाध्यायप्रवर एवं संतमुनिराजों के मुखारविन्द से तप एवं दान का महत्त्व श्रवण किया। प्रवचन सभा में श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. ने तप के साथ दान देने की प्रभावी प्रेरणा की वहीं उपाध्यायप्रवर ने भगवान आदिनाथ के पारणे को लेकर अक्षयतृतीय की ऐतिहासिक जानकारी प्रस्तुत करते हुए तप और दान के महत्त्व को प्रतिपादित किया तपस्वी भाई-बहिन एवं उनके पारिवारिक जनों ने नागौर पधार कर गुरुभगवन्तों के दर्शन वंदन, प्रवचन-श्रवण का लाभ तो प्राप्त किया ही संतचरण सन्निधि का लाभ भी प्राप्त किय नागौर श्री संघ द्वारा आयोजित तप पूर्णाहुति समारोह में इष्ट मित्रों व परिजनों के साथ नागौ श्री संघ ने तपस्वियों को इक्षु रस का पारणा कराते हुए स्वागत सत्कार एवं बहुमान किय अनेक भाई-बहिनों ने भी तपस्वियों की सुखसाता पृच्छा करने के साथ तपस्वियों को इक्षु र से पारणा करवाया। तप महोत्सव में निम्नांकित तपस्वी उपस्थित रहे- 1. श्रीमती शांति दे धर्मपत्नी श्री दौलतराज जी सुराणा-नागौर, 2. श्रीमती बसन्तीदेवी धर्मपत्नी श्री हस्तीमल ज सुराणा-नागौर हाल मुकाम कोलकाता, 3. श्रीमती कमलादेवी सुराणा धर्मपत्नी श्री नेमीच

जी सुराणा-नागौर हाल मुकाम ब्यावर। उपाध्यायप्रवर के पावन सान्निध्य में तप एवं दान के विशिष्ट पर्व अक्षयतृतीया पर उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से तपस्वी भाई-बहिनों ने न वर्षीतप शुरु करने के साथ उपस्थित जनसमुदाय ने भी नवीन त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण किये कार्यक्रम संचालक ने तपस्वी भाई-बहिनों के साथ उनके परिजनों का एवं आगन्तुक महानुभावों का शब्दों से स्वागत सत्कार किया।

अक्षयतृतीया के पावन अवसर पर नागौर श्री संघ, युवक परिषद् एवं श्राविका मंडल ने तपस्वी भाई-बहिनों उनके परिजनों तथा आगन्तुक दर्शनार्थी भाई-बहिनों को आवास ए आतिथ्य सत्कार की सुन्दर व्यवस्था प्रदान की।

उपाध्यायप्रवर के पावन सान्निध्य में 28 अप्रेल 2012 से 04 मई 2012 त आराधना सप्ताह का आयोजन रखा गया है, जिसमें स्थानीय भाई-बहिन उत्साह के सा धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप की आराधना का लाभ ले रहें हैं। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्र हस्तीमल जी म.सा. की 21वीं पुण्य-स्मृति दिवस, 29 अप्रेल 2012 को नागौर में 25 एकाशन तप हुए। रत्नसंघ के उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का अर्द्धशताब दीक्षा-दिवस वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 4 मई, 2012 को उपस्थित हो रहा है। इसे त्याग त और आराधना के साथ मनाने हेतु नागौर श्री संघ तत्पर है। इस अवसर पर नागौर में 21 ते की तपस्या होने जा रही है तथा अनेक स्थानों से संघ सदस्य पधार कर उपाध्यायप्रवर मुखारविन्द से त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करेंगे।

आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में करें आत्मोन्नयन

-मदनगंज-किशनगढ़ में अक्षय तृतीया दिनाँक 24 अप्रेल, 2012 को अखि भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्यकारिणी सदस्यों की बैठक आयोजित क गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि इस वर्ष आचार्य प्रवर एवं उपाध्यायप्रवर की दीक्ष अर्द्धशती का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। अतः इसे तप-त्याग एवं व्रत-प्रत्याख्यानों के सा मनाना चाहिए। प्रमोद का विषय है कि परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र ज म.सा. का 50 वां दीक्षा-दिवस वैशाख शुक्ला त्रयोदशी, शुक्रवार, दिनांक 4 मई, 201 को एवं परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का 50 वाँ दीक्षा-दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी, सोमवा 19 नवम्बर, 2012 को प्रारम्भ हो रहा है। दोनों महापुरुषों की दीक्षा अर्द्ध-शती-वर्ष में ह स्व-प्रेरित भावना से त्याग-तप, साधना-आराधना व जीवन-निर्माण हेतु सक्रियता सजगता प्रदर्शित कर दोनों महापुरुषों के अनेकानेक विशिष्ट सद्गुणों में से कोई न कोई गु अपने जीवन-व्यवहार में अपनाने का पुरुषार्थ करें। आप अपने ग्राम-नगर में त्याग-तप

कार्यक्रम सुनिश्चित करें। सामायिक, स्वाध्याय, साधना, सेवा, ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि के साथ हर गाँव, नगर और महानगरों में साप्ताहिक सामूहिक सामायिक, बालक-बालिकाओं में साप्ताहिक संस्कार केन्द्र के माध्यम से संस्कारित करने के अभियान को गति देने, समय-समय पर प्रश्नोत्तर कार्यक्रम के माध्यम से आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर के गुणगान कर हम दोनों महापुरुषों की हितशिक्षाओं पर चलने का अभ्यास स्व-प्रेरित भावना से करें। हर गाँव-नगर में अगले वर्ष कार्तिक शुक्ला षष्ठी तक एक आयंबिल, एक उपवास, एक एकाशन की लड़ी न्यूनतम कार्यक्रम के रूप में चलायें। दोनों महापुरुषों की अर्द्धशताब्दी वर्षपर्यन्त पूरे उत्साह से मनाकर अपने ग्राम-नगर की मासिक, त्रैमासिक और वार्षिक रिपोर्ट संघ के प्रधान कार्यालय को प्रेषित करें, यह निवेदन है।

आप स्थानीय संघ सदस्यों के साथ श्राविका मण्डल, युवक परिषद् एवं हमारे अन्यान्य सहयोगियों से सहयोग प्राप्त कर स्थानीय स्तर पर अच्छे-से-अच्छा कार्यक्रम बनाएँ और उसकी सफल क्रियान्विति करने का उत्साह आबाल-वृद्ध सबमें जगायें।

-पूरणराज अबानी, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

कोलकाता में आचार्य श्री हस्ती की पुण्य स्मृतिदिवस पर व्याख्यान

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कोलकाता के तत्त्वावधान में गुरुवर आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 21 वीं पुण्यतिथि पर वैशाख शुक्ला 8 दिनाँक 29 अप्रेल, 2012 को सभा का आयोजन किया गया, जिसमें बैंगलूरु सिटी संघ के अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए कहा कि सच्चा मार्ग गुरु ही दिखाते हैं, अतः उनकी शरण में ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। उन्होंने कहा कि अन्न-जल शुद्ध ग्रहण करना चाहिए। चौके (रसोई) का अर्थ ही है भोजन बनाते वक्त द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव की पवित्रता पर ध्यान देना चाहिए। जिस भाव से खाना तैयार किया जाता है उसी का प्रभाव खाने वाले पर पड़ता है।

श्री सरदारमल जी कांकरिया, श्री पदमचन्द जी नाहटा ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने विचार सभा में रखे। सभा की अध्यक्षता श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा कोलकाता के ट्रस्टी श्री रिखबदास जी भंसाली ने की। संघ उपाध्यक्ष श्री चंचलमल जी बच्छावत ने बच्चों द्वारा कृत भावात्मक प्रस्तुति की सराहना की। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल कोलकाता की अध्यक्ष श्रीमती विमला जी भण्डारी ने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड में उत्तीर्ण श्राविकाओं को संघ द्वारा पुरस्कृत किया गया। श्राविका मण्डल की मंत्री श्रीमती रश्मिजी सिंघवी ने महिला मंडल की वर्ष भर की

गतिविधियों से अवगत कराया।

मध्यप्रदेश सरकार की ओर से 'नारी रत्न' से सम्मानित होने पर संघ द्वारा श्रीमती मंजू प्रेम भण्डारी का सम्मान किया गया। महामंत्री डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा ने आमंत्रित विद्वानों का स्वागत किया तथा संघ अध्यक्ष श्रीमान् सुमेरचन्द जी मेहता ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

-गुमानसिंह पीपाड़ा, महामंत्री

पल्लीवाल क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 30 मार्च से 01अप्रेल 2012 तक पल्लीवाल क्षेत्र के नसियां गंगापुर, गंगापुरसिटी, करौली, बरगमा, हिण्डौनसिटी, वर्धमाननगर, भरतपुर, गोपालगढ़-भरतपुर, पहरसर, नदबई, खेरली, खोह, मौजपुर, हरसाना, मण्डावर, अलवर आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रचार कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं परामर्शदाता शाखा पोरवाल श्री लल्लूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, पोरवाल शाखा के संयोजक श्रीमान हरकचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर, पल्लीवाल शाखा के संयोजक श्री कृष्णमोहन जी जैन-हिण्डौनसिटी, स्वाध्याय संघ कार्यालय सहायक श्री धीरज जी डोसी-जोधपुर, प्रचारक पल्लीवाल शाखा श्री मुरारीलाल जी जैन-हिण्डौन की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्रों की स्थापना की गई, आगामी परीक्षा हेतु 36 आवेदन-पत्र भरवाये गये, पुराने स्वाध्यायियों की इस वर्ष सेवा देने हेतु स्वीकृति प्राप्त की गई। विभिन्न स्थानों पर रविवारीय संस्कार केन्द्र भी प्रारम्भ किए गए। पर्युषण में स्वाध्यायी आमंत्रित करने हेतु प्रेरणा की गयी। आगामी पर्युषण हेतु पल्लीवाल क्षेत्र से 14 मांगें प्राप्त की गई। सभी क्षेत्रों पर स्थानक में आकर सामूहिक स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा की गई।

मेवाड़ क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 06 से 09 अप्रेल 2012 तक मेवाड़ क्षेत्र के पहुना, सहाड़ा, जूणदा, सुरपूर, मावली जंक्शन, नवानियाँ, उदयपुर, प्रतापगढ़, नीमचसिटी, नीमच केन्ट, आदिपुरम शंभुपुरा, सिंगोली, बेगूं, पारसोली, छोटा भटवाड़ा, आजाद नगर-भीलवाड़ा आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रचार कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ

के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं परामर्शदाता शाखा मेवाड़ श्री फूलचन्द जी जैन-उदयपुर, अ.भा. आध्यात्मिक शिक्षणबोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, मेवाड़ शाखा के संयोजक श्रीमान् कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाड़ा, स्वाध्याय संघ कार्यालय सहायक श्री धीरज जी डोसी-जोधपुर की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्रों की स्थापना की गई, आगामी परीक्षा हेतु 38 आवेदन पत्र भरवाये गये, पुराने स्वाध्यायियों की इस वर्ष सेवा देने हेतु स्वीकृति प्राप्त की गई एवं बोर्ड के पूर्व संचालित केन्द्रों की समीक्षा की गई। पर्युषण में स्वाध्यायी आमंत्रित करने हेतु प्रेरणा की गयी। आगामी पर्युषण हेतु मेवाड़ क्षेत्र से 8 मांगें प्राप्त हुई।

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर में उच्च शिक्षण हेतु प्रवेश का स्वर्णिम अवसर

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की प्रबल प्रेरणा से सन् 1973 में संस्थापित एवं गजेन्द्र चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर में नैतिक संस्कारों के साथ यहाँ रहकर आध्यात्मिक शिक्षण करते हुए विद्यालय, महाविद्यालय, प्रोफेशनल एवं प्रशासनिक स्तर का उच्च शिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन विद्यार्थियों से संस्थान में प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित हैं। विगत 38 वर्षों में यहाँ से अध्ययन कर लगभग 110 विद्यार्थी वर्तमान में प्रशासनिक, राजकीय एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं।

संस्थान में प्रवेश हेतु प्रक्रिया-

1. संस्थान में प्रवेश का मुख्य आधार बालकों का प्रतिभाशाली होना रहेगा।
2. कक्षा दसवीं उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यालय, महाविद्यालय के सभी संकाय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रवेश दिये जायेंगे।
3. संस्थान में मेधावी छात्रों को प्रवेश दिया जाएगा।
4. बालकों का नैतिक आचरण स्वच्छ पाये जाने पर ही उन्हें प्रवेश दिया जाना संभव है।
5. प्राप्त आवेदनों में से शैक्षणिक व आध्यात्मिक योग्यतानुसार चयनित छात्र ही प्रवेश हेतु लगाये जाने वाले शिविर में आमंत्रित किये जायेंगे।
6. संस्थान में चयन के लिए शिविर आयोजित किया जायेगा, जिसकी सूचना दूरभाष से दी जायेगी।

नियम एवं सुविधाएँ-

1. संस्थान में अध्ययनानुकूल उचित आवास एवं भोजन की व्यवस्था।
2. संस्थान अधिष्ठाता का योग्य मार्गदर्शन।
3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अंग्रेजी एवं विविध विषयों पर विशेष आमंत्रित महानुभावों द्वारा अभिप्रेरणा एवं कार्यशाला का आयोजन।
4. सुसज्जित पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर शिक्षण की उत्तम व्यवस्था।
5. विद्यार्थियों को स्कूल एवं महाविद्यालय के अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन अनिवार्य।
6. संस्थान द्वारा निर्धारित अन्य नियमों एवं उपनियमों का पालन अनिवार्य।

जो भी विद्यार्थी नैतिक एवं आध्यात्मिक संस्कारों के शिक्षण के साथ विद्यालय, महाविद्यालय, प्रोफेशनल एवं प्रशासनिक स्तर के उच्च शिक्षण हेतु संस्थान में प्रवेश लेना चाहते हैं, वे दिनांक 25 मई, 2012 तक प्रवेश आवेदन पत्र भरकर निम्न पते पर प्रेषित करावें। आवेदन पत्र का प्रारूप आगे दिया गया है।- **दिलीप जैन, *संयोजक/ अधिष्ठाता, आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन: 0141-2710946, 094614-56489,*** Email:ahassansthan@gmail.com

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 22 जुलाई को होगी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 22 जुलाई 2012, रविवार को दोपहर 12 से 3 बजे तक आयोजित की जायेगी। परीक्षा में भाग लेने के इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि आवेदन-पत्र एवं पाठ्यपुस्तकों की प्राप्ति हेतु शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें। आवेदन पत्र का प्रारूप आगे प्रकाशित है। **सम्पर्क सूत्र-** सुशीला बोहरा-संयोजक-94141-33879, धर्मचन्द जैन-रजिस्ट्रार- 93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय-0291-2630490, Email-info@jainratnaboard.com, Website- www.jainratnaboard.com

जोधपुर में रविवारीय संस्कार शिविर निरन्तर गतिमान

परमपूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा विगत 6 माह से निरन्तर रविवारीय संस्कार शिविर का आयोजन जोधपुर के 10 केन्द्रों पर चल रहा है। शिविर में प्रत्येक रविवार को लगभग 800-850 बालक-बालिकाएँ भाग लेकर सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, थोकड़े इत्यादि का ज्ञानार्जन कर रहे हैं। इस शिविर में लगभग 80-90 अध्यापक अपनी अमूल्य सेवाएँ दे रहे

हैं। सभी कार्यकर्ता पूरे जोर-शोर से इस शिविर को चलाने तथा बालक-बालिकाओं को लाने एवं उनके पुरस्कार की सुन्दर व्यवस्था कर रहे हैं। अभी तक इस शिविर के माध्यम से लगभग 150 बालक-बालिकाओं ने प्रतिक्रमण सूत्र तथा लगभग 300 ने सामायिक सूत्र याद कर लिए हैं। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के पुण्य स्मृति-दिवस पर सभी शिविरार्थियों को आचार्य भगवन्त के बारे में जानकारी दी गई तथा उनका गुणगान किया गया। शिविर के संचालन के प्रति संघ का उत्साह है एवं निरन्तर अर्थ सहयोग भी प्राप्त हो रहा है।

-राजेश भण्डारी, शिविर प्रभारी

'पयुर्षण पर्व' पर बूचड़खाने बन्द करवाने हेतु करें संकल्प

देश के उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री एच.के.सेमा एवं श्री मार्कण्डेय काटजू ने 14 मार्च, 2008 को "हिंसा विरोधक संघ विरुद्ध मिर्जापुर मोती कुरैश जमात एवं अन्य" (सिविल अपील नं. 5469, 5470, 5472, 5474, 5476, 5478, 5479-80-81/2005) के संबंध में 36 पृष्ठीय ऐतिहासिक फैसला सुनाया था। यह फैसला उच्चतम न्यायालय की बेवसाइट-www.supremecourtofindia.nic.in तथा www.judis.nic.in पर एवं All India Reporter (AIR)- July, 2008- Supreme Court, 1892 S.C.-S.C. 1903 पर भी उपलब्ध है।

सुप्रीम कोर्ट के द्वारा प्रदत्त उपर्युक्त फैसले की अनुपालना में बिहार राज्य शासन, राजस्थान राज्य शासन एवं छत्तीसगढ़ राज्य शासन के द्वारा निर्गमित विभिन्न शासनादेशों के समान ही इस वर्ष के पयुर्षण पर्व के प्रथम एवं द्वितीय भाद्रपद के 11 दिनों को 'अहिंसा दिवस' घोषित कर उन दिवसों में राज्य के सभी बूचड़खाने, मांस विक्रय केन्द्रों को बंद रखने हेतु सभी का प्रयास अपेक्षित है।

सैकेण्डरी स्कूल तक शिक्षार्थ सहायता योजना

ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी, नई दिल्ली जैन बच्चों के लिये सैकेण्डरी स्कूल तक शिक्षा जारी रखने हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान करती है। श्री संघों के कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि अपने नगर के योग्य जैन विद्यार्थियों की सहायता हेतु निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें। सभी जानकारी व सहायता कार्य गुप्त रखे जाते हैं। सहायता के लिए अपना आवेदन पूरे विवरण से निम्न पते पर भेजें:- GP. CAPT. V.K. Jain (Retd.), Gyanoday Charitable Society, 572, Asiad Village, New Delhi-110049, Ph. 011-26493538/26492386

वैशाली में आचार्य कुन्दकुन्द व्याख्यानमाला सम्पन्न

प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली में 02 मार्च, 2012 को

आचार्य कुन्दकुन्द व्याख्यानमाला सम्पन्न हुई। व्याख्यान माला की अध्यक्षता प्रो. जयदेव मिश्र-सह निदेशक, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग, केन्द्रीय पुस्तकालय, पटना विश्वविद्यालय, पटना ने की। इस कार्यक्रम में तीन वक्ता थे- 1. डॉ. सुदीप जैन, अध्यक्ष, साहित्य-संस्कृति संकाय एवं प्राकृत भाषा विभाग, लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली, 2. डॉ. पी.सी जैन, पूर्व निदेशक, जैन अनुशीलन केन्द्र. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 3. डॉ. जयकुमार जैन, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर एवं अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद्। डॉ. सुदीप जैन ने "आचार्य कुन्दकुन्द के योगदान की वर्तमान में प्रासंगिकता एवं महत्त्व" विषय पर अपना वक्तव्य दिया एवं डॉ. पी.सी. जैन ने 'भगवान महावीर और प्रजातंत्र' विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. जयकुमार ने वैदिक एवं श्रमण संस्कृति के बीच की समानताओं एवं असमानताओं पर अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया। इस अवसर पर संस्थान से प्रकाशित एवं डॉ. गोकुल चन्द्र जैन द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखित पुस्तक 'प्राकृत एण्ड जैनिज्म इन इन्टर डिसिप्लिनरी पर्सपैक्टिव' का लोकार्पण किया गया। अन्त में संस्थान के निदेशक डॉ. ऋषभचन्द जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

द्वादशारनयचक्र पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

जयपुर- प्राकृत भारती अकादमी एवं राजस्थान संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'द्वादशारनयक्र में प्राचीन दार्शनिक परम्पराएँ' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी प्राकृत भारती अकादमी के सभागार में 28-29 अप्रेल, 2012 को सम्पन्न हुई। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर के कुलपति प्रो. रामानुज देवनाथन के मुख्य आतिथ्य में प्रारम्भ इस संगोष्ठी में अतिथियों का स्वागत पद्मभूषण श्री डी.आर. मेहता ने किया। उद्घाटन सत्र में प्रो. दयानन्द भार्गव, प्रो. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, प्रो. कुसुम जैन-जयपुर, प्रो. कमलनयन शर्मा-जयपुर ने सम्बोधित किया। संचालन राजस्थान संस्कृत अकादमी की अध्यक्ष डॉ. सुषमा जी सिंघवी ने किया। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में प्रो. दामोदर शास्त्री-लाडनूं, प्रो. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, प्रो. सत्यप्रकाश जी दुबे-जोधपुर, प्रो. बीना अग्रवाल-जयपुर, प्रो. श्रेयांस सिंघई, डॉ. कमलेशकुमार जैन, डॉ. राजेन्द्रप्रसाद मिश्र, वी.वी.वैकंटरमण आदि ने सम्बोधित किया। संगोष्ठी में यह बात उभर कर आई कि द्वादशारनयचक्र में पुरुषवाद, नियतिवाद, कालवाद, स्वभाववाद, कर्मवाद, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, सांख्य, बौद्ध आदि दर्शनों की सूक्ष्म प्रस्तुति हुई है। संगोष्ठी का समापन प्रो. बीना अग्रवाल की अध्यक्षता में हुआ।

सेवा मंदिर, जोधपुर में 101 वीं विचारगोष्ठी एवं अनेकान्तदृक् का लोकार्पण

सेवा मन्दिर शोध संस्थान, जोधपुर में अक्टूबर 2003 से नियमित रूप से प्रतिमाह तृतीय रविवार को एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया जाता रहा है। 100 गोष्ठियाँ पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 101 वीं संगोष्ठी बृहद्स्तर पर आयोजित की गई, जिसे प्रथम संगोष्ठी के उद्घाटक प्रो. सागरमल जी जैन-शाजापुर ने प्रमुख वक्ता के रूप में सम्बोधित किया। उन्होंने 'धर्म का मर्म' विषय पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी की अध्यक्षता राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश डॉ. विनीत जी कोठारी ने की। जोधपुर शहर विधायक श्री कैलाश जी भंसाली ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्बोधित किया। इस अवसर पर 'अनेकान्तदृक्' पत्रिका के 'विचारगोष्ठी शतक' अंक का अतिथियों द्वारा लोकार्पण किया गया। इस अंक में सेवामंदिर के सभागार में संचालित 100 गोष्ठियों का सारांश एवं प्रमुख वक्ता आदि का विवरण प्रकाशित किया गया है। सेवा मंदिर के प्रमुख संचालक ट्रस्टी श्री श्रेणिक जी पारख भी मुम्बई से यहाँ उपस्थित हुए एवं इस गतिविधि पर उन्होंने प्रमोद व्यक्त किया।

अहिंसा इण्टरनेशनल पुरस्कारों हेतु नाम आमंत्रित

नई दिल्ली- 1973 में स्थापित समाजसेवी संस्था अहिंसा इण्टरनेशनल द्वारा वर्ष-2012 के निम्न पुरस्कारों के लिए प्रस्ताव आमंत्रित हैं-

1. **अहिंसा इण्टरनेशनल डिप्टीमल आदीश्वरलाल जैन पुरस्कार (राशि 31000)-** जैन साहित्य के विद्वान को उनके हिन्दी एवं अंग्रेजी के समग्र साहित्य अथवा कोई मौलिक नवीनतम रचना अथवा कृति की श्रेष्ठता के आधार पर प्रदान किया जायेगा।
2. **अहिंसा इण्टरनेशनल भगवानदास शोभालाल डालचन्द जैन शाकाहार, जीवदया एवं रक्षा पुरस्कार (राशि 21000/-)-** शाकाहार प्रसार तथा जीवदया एवं रक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे कर्मठ कार्यकर्त्ता को उनके कार्य की श्रेष्ठता के आधार पर प्रदान किया जायेगा।
3. **अहिंसा इण्टरनेशनल प्रेमचन्द जैन चिकित्सा-रोगी सेवा पुरस्कार (राशि 21000/-)-** यह पुरस्कार किसी भी संस्था/व्यक्ति/डॉक्टर को उसके द्वारा चिकित्सा के क्षेत्र में सेवा/रचनात्मक कार्य करने पर या कोई चिकित्सा क्षेत्र में नई उपलब्धि प्राप्त करने के आधार पर दिया जायेगा।
4. **(अ)** अहिंसा इण्टरनेशनल विजय कुमार प्रबोध कुमार सुबोध कुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार (राशि 21000/-)

   (ब) अहिंसा इण्टरनेशनल पारसदास अनिलकुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार (राशि

21000/-)

ये पुरस्कार जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय/रचनात्मक उत्कृष्ट योगदान के लिए श्रेष्ठता के आधार पर दिये जायेंगे।

5. **अहिंसा इण्टरनेशनल उजागरमल सलेकचन्द जैन कागजी रचनात्मक समाजसेवा पुरस्कार (राशि 21000/-)**- यह पुरस्कार दिल्ली राजधानी क्षेत्र के किसी भी जैन व्यक्ति को उसके द्वारा समाज के संगठन/उत्थान/विकास आदि के लिए किये गये उल्लेखनीय/रचनात्मक कार्य/ सेवाओं के लिए प्रदान किया जायेगा।

6. **अहिंसा इण्टरनेशनल हरिशचन्द्र रमेशचन्द्र जैन, धर्म प्रचार-प्रसार पुरस्कार (राशि 11000/-)**- यह पुरस्कार किसी भी व्यक्ति को उसके द्वारा जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु श्रेष्ठ कार्य करने के आधार पर दिया जायेगा।

7. **अहिंसा इण्टरनेशनल धनीचन्द्र देवेन्द्रकुमार जैन, मेधावी छात्र पुरस्कार (राशि 11000/)**- यह पुरस्कार दिल्ली, नोयडा, गुडगाँव, गाजियाबाद, फरीदाबाद जनपदों के दसवीं कक्षा में CBSE/ICSE की परीक्षा में सभी विषयों A+ ग्रेड पाने वाले जैन छात्र/छात्राओं को जिसने खेलकूद/वीरता अथवा अन्य किसी क्षेत्र में विशेष रचनात्मक उपलब्धि प्राप्त की हो, को प्रदान किया जायेगा।

उपर्युक्त पुरस्कारों हेतु नाम का प्रस्ताव स्वयं लेखक/कार्यकर्त्ता, संस्था अथवा अन्य कोई भी जानने वाला व्यक्ति 30 जून 2012 तक निम्न पते पर उसके पूरे नाम व पते, जीवन परिचय संबन्धित क्षेत्र में कार्य विवरण व पासपोर्ट आकार के दो फोटो सहित भेज सकता है। पुरस्कार दिल्ली में आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किये जायेंगे। पिछले वर्षों में आई हुई प्रविष्टियों पर भी इस वर्ष के पुरस्कारों के लिए विचार किया जा सकता है। अहिंसा इण्टरनेशनल द्वारा लिये गये निर्णय सभी आवेदकों को मान्य होंगे। सभी प्रबुद्ध महानुभावों से निवेदन है कि वे अपनी प्रविष्टियाँ निम्न पते पर समय से भिजवाएँ। **सम्पर्क सूत्रः-** ***श्री प्रदीप कुमार जैन-सचिव, 174 G.F., अशोका इंक्लेव-1, पावर हाउस रोड, फरीदाबाद-121001 (हरियाणा) फोन : 09810480099 मो., डॉ. नीलम जैन-सचिव, 273/1/1, आदर्श नगर, न्यू रेलवे रोड, गुडगांव-122002 (हरियाणा) मो. 09810809727***

संक्षिप्त-समाचार

अजमेर- तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. के गोटन से अजमेर विचरण के दौरान अनेक आजीवन शीलव्रत बने- 1. श्रीमती चीकूबाई-श्री मंगलाराम जी चौधरी, 2. श्रीमती रुकमाबाई-श्री निम्बाराम जी चौधरी-झड़ाऊ, 3. श्रीमती सुआबाई-श्री घासीराम जी

सांखला-मालियों की ढाणी, 4. श्रीमती मैनाकंवर-श्री नेमीचन्द जी लुणावत-लाडपुरा। विभिन्न ग्राम-नगरों में अनेक अजैन भाई-बहिनों ने ग्यारस, अमावस एवं पूर्णिमा को रात्रि-भोजन के त्याग किए।

जलगांव- श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ द्वारा 18 से 22 अप्रेल 2012 तक आयोजित शिविर में व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 का सान्निध्य प्राप्त हुआ। शिविर में जलगांव, फत्तेपुर, भड़गांव, नरडाणा, शेन्दुर्णी, मुकटी, इच्छापुर, अडावद आदि आस-पास के क्षेत्रों से 145 शिविरार्थियों ने 3 कक्षाओं में शिविर से लाभ प्राप्त किया। प्रतिक्रमण, 25 बोल, कर्मप्रकृति, ज्ञानलब्धि, कर्मग्रन्थ, उत्तराध्ययन सूत्र, आचारांग सूत्र, जम्बूद्वीप के नक्शे का अभ्यास करवाया गया। सतीवृन्द के अलावा भी श्री प्रकाश जी जैन-प्राचार्य, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-जयपुर, श्री दिनेश जी नाहटा-नगरी, सौ. विजया जी मलारा, सौ. रसीला जी बरडिया, श्री हीरालाल जी मंडलेचा, श्री मनोज जी संचेती-जलगांव का अध्यापन में सहयोग रहा। डॉ. श्री वर्धमान लोढ़ा-मालेगांव, श्री मुकेश जी चोरडिया-पारोला, श्रीमती उषा जी कोठारी-जलगांव को विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान से सम्मानित किया गया। शिविर में 5 नये स्वाध्यायी बने।

भरतपुर- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में फाल्गुनी चौमासी पर्व मनाया गया। इस सुअवसर पर उपवास, आयम्बिल, एकासन, पौषध, तेला, भिक्षुदया आदि सम्पन्न हुए। गोपालगढ़ स्थित जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जैन स्थानक में भगवान आदिनाथ के जन्म कल्याण व पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 74वें जन्मदिवस पर उपवास, एकासन व पाँच-पाँच सामायिकें हुई एवं आजीवन 11 जोड़े शीलव्रती बने- 1. श्री घूरेलाल जी जैन-शारदा जैन (इन्द्रानगर, भरतपुर), 2. श्री छत्रमल जी जैन-शान्ति जैन (इन्द्रानगर, भरतपुर), 3. श्री रमेशचन्द जी जैन-लक्ष्मीदेवी जैन (कृष्णानगर, भरतपुर), 4. श्री छगनलाल जी जैन-अगूंरीदेवी जैन (कृष्णानगर, भरतपुर), 5-6. दो जोड़े समराया वाले गुप्त (समराय), 7. श्री कैलाशचन्द जी जैन-मिथलेश जैन (कृष्णानगर, भरतपुर), 8-9. दो जोड़े बयाना वाले (बयाना, भरतपुर), 10. श्री अमीरचन्दजी जैन-चन्द्रावती जैन (रणजीत नगर, भरतपुर), 11. डॉ. पी.सी. जैन-उषा जैन (रणजीतनगर, भरतपुर)।

जोधपुर- बासनी पाल लिंक रोड़ पर रतननगर में गजेन्द्र ज्ञानशाला का 29 अप्रेल, 2012 को शुभारम्भ हुआ। गुरु भक्त श्री भीकमचन्द जी गोलेछा (बाड़मेर वाले) एवं उनके परिवार द्वारा अपने नवनिर्मित रिद्धि विनायक अपार्टमेण्ट में 'गजेन्द्र ज्ञानशाला' के रूप में सामायिक, स्वाध्याय एवं बालकों के शिविर आदि के लिए स्वाध्याय हॉल (फ्लैट)

उपलब्ध कराया गया है, जिसका उद्घाटन जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन द्वारा पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के स्मृति-दिवस वैशाख शुक्ला अष्टमी को किया गया। इस ज्ञानशाला का लाभ केशवनगर, गुलाबनगर, सुभाषनगर, दिग्विजय नगर आदि के श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं एवं बालक-बालिकाओं को प्राप्त हो सकेगा। पूर्व में जो रविवारिय संस्कार शिविर गुलाबनगर में संचालित होता था, अब इस नये भवन में 29 अप्रैल से ही संचालित हो चुका है। *-राजेश भण्डारी, शिविर प्रभारी*

सिकन्दराबाद- महावीर जयंती पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, आचार्य हस्ती फाउण्डेशनके सहयोग से जिनवाणी के 225 आजीवन सदस्य बनाये गए। महावीर जयंती पर विशेष छूट के अन्तर्गत 100 रुपये मात्र में ही आजीवन सदस्यता दी गई, शेष राशि संघ-सदस्यों द्वारा वहन की गई।

जोधपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद् की ओर से 18 वां धार्मिक शिक्षण शिविर 24 मई से 10 जून 2012 तक जोधपुर के विभिन्न नौ केन्द्रों पर आयोजित होगा।

बाड़मेर- ओसवाल जैन दिगम्बर, श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी सम्प्रदायों में जितने प्रकार के बोहरा और उनके उपशाखा गोत्र हैं उनका इतिहास, परम्परा, परिचय, निर्देशिका का सचित्र पुस्तक प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया जा रहा है। जिसमें जैन बोहरा एवं उनकी उपशाखाओं की उत्पत्ति, कुलदेवी, महान् विभूतियों, दीक्षित साधु-साध्वियों, शिलालेख आदि का प्रकाशन होगा। देश के समस्त बोहरा गोत्र और उनकी उपशाखाओं के लोगों के पते के साथ टेलीफोन नम्बर प्रकाशन का प्रमुख भाग होगा। सम्पर्क करें- बोहरा भूरचन्द जैन, अरिहंत भवन, सदर बाजार, बाड़मेर-344001 , फोन- 09530249662

सम्मेद शिखर- पूज्य मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज की 25 वीं दीक्षा जयन्ती पर आयोजित "प्रमाण प्रर्वद्धनोत्सव (4-5 अप्रेल, 2012)" में जैन धर्म की प्रभावना एवं श्रुत साधना में संलग्न देश के अग्रांकित विद्वानों को एक लाख रुपये की नकद राशि, प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया- 1. ब्र.डी.राकेश (सागर), 2. श्री मूलचन्द जी लुहाडिया (किशनगढ), 3. डॉ. रतनचन्द जी जैन (भोपाल), श्री रतनलाल जी बैनाडा (आगरा), 5. डॉ. एल.सी. जैन (जबलपुर) एवं 6. डॉ. नीलम जैन (गुडगांव)।

दिल्ली- भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली में 4 अप्रेल 2012 को 'तीर्थंकर महावीर के सिद्धान्तों की प्रासंगिकता' विषयक संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के प्रकाशन एवं शोध विभाग के निदेशक प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय ने अध्यक्षता की। प्रमुख वक्ता के रूप में प्रभावक सन्त श्री पद्म मुनि जी ने तीर्थंकर महावीर के बहुआयामी व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डालते

हुए कहा कि प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की पूर्ण शक्ति उसके अन्दर छिपी हुई है, जरूरत है उसे पहचानने की। वल्लभ स्मारक के सेक्रेटरी जनरल एवं वरिष्ठ समाजसेवी श्री राजकुमार जी जैन कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। आरम्भ में समागत सभी अतिथियों का स्वागत संस्थान के उपाध्यक्ष श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन ने किया। संगोष्ठी का सुन्दर समन्वयन निदेशक प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' ने किया।

बैंगलोर- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी सुशिष्या महासती श्री श्रुतशीला जी ठाण-3 के नेश्राय में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 74 वां जन्म-दिवस अपूर्व श्रद्धा भक्ति के साथ 'सामूहिक दो-दो सामायिक' साधना से तप-त्याग पूर्वक मनाया गया।

बधाई/चुनाव

श्री दलवीर भण्डारी अन्तरराष्ट्रीय न्यायाधीश बने

दिल्ली- जोधपुर में 1 अक्टूबर 1947 को जन्मे सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री

दलवीर भण्डारी अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश चुने गए हैं। 64 वर्षीय भण्डारी सन् 2018 तक संयुक्त राष्ट्र के न्यायालय को अपनी सेवाएँ प्रदान करेंगे। वे सन् 2005 से सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधिपति हैं। आपने कानून में स्नातकोत्तर की उपाधि शिकागो से प्राप्त की।

डॉ. महावीर गोलेछा को पी-एच्.डी. की उपाधि

विश्व कांग्रेस युवा वैज्ञानिक तथा भारत सरकार के इन्सपायर फेलो डॉ. महावीर गोलेछा को हाल ही सम्पन्न हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के 89 वें दीक्षांत समारोह में जैव चिकित्सा विज्ञान में पी-एच्.डी की उपाधि प्रदान की गयी। डॉ. गोलेछा चिकित्सा विज्ञान में यह उपाधि पाने वाले सबसे युवा भारतीय हैं। उन्हें यह उपाधि अल्जाइमर एवं एपिलेप्सी जैसे मस्तिष्कीय रोगों के उपचार के लिए नारिन्जिन नामक मेडिसिन की खोज के लिए प्रदान की गयी।

उदयपुर- डॉ. ज्योतिबाबू जैन की मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के प्राकृत

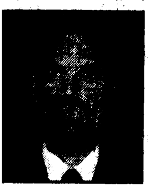

विभाग में सहायक प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति हुई है। आपने एम.ए. में स्वर्ण पदक प्राप्त किया तथा देवसेन की रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया है। डॉ. जिनेन्द्र जैन को इसी विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति मिली है।

जोधपुर- सुश्री कोमल चौपड़ा सुपुत्री श्रीमती ललीता-राजाबाबू जी चौपड़ा एवं सुपौत्री स्व.श्रीमती सज्जनकंवर-स्व. श्री हीरालाल जी चौपड़ा द्वारा एम.बी.बी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर **बधाई।** सुश्री कोमल धार्मिक शिविरों में भी भाग लेती रहती है।

जोधपुर- सुश्री मिताली भण्डारी सुपुत्री श्री छतरचन्द जी भण्डारी ने एम.सी.ए. में स्वर्णपदक प्राप्त किया। यह स्वर्णपदक उन्हें जोधपुर पुलिस कमिश्नर श्री भूपेन्द्र कुमार दक के कर कमलों से समारोह में प्रदान किया गया।

सवाईमाधोपुर- श्री मनीष कुमार जैन सुपुत्र श्री सुरेशचन्द जी जैन को अमरीका में वुनसोकेट (रोड आइलैण्ड) टी.सी.एस. कम्पनी में सिस्टम इन्जीनियर के पद पर नियुक्त होने पर बधाई, सॉफ्टवेयर इन्जीनियर मनीष पिछले 2 वर्षों से TCS Co. गुड़गांव में कार्यरत थे।

हिण्डौन सिटी- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हिण्डौन सिटी द्वारा सम्पादित चुनाव में श्री राजेश जी जैन (जैन बक्शे वाले) सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुने गए।

सी.ए. उत्तीर्ण

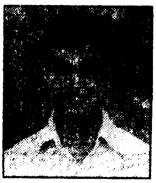

जोधपुर- श्री अनीष कुम्भट सुपुत्र श्रीमती मीना एवं श्री सुनिल कुम्भट, सुपौत्र स्व. श्रीमती कानकंवर एवं स्व. श्री जौहरीमल जी कुम्भट तथा दोहिता श्री नरपतराज जी सिंघवी।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- धर्मपरायण, संतसेवी सुश्राविका श्रीमती रतनकंवर जी (छोटी बाईसा) धर्मपत्नी श्री

रतनराज जी मेहता का 87 वर्ष की आयु में 22 अप्रेल 2012 को स्वर्गवास हो गया। आप संयमी आत्माओं की सेवा में समर्पित महिलारत्न थीं। आप नित्य सामायिक-स्वाध्याय, संवर आदि करती थीं। आपने अपने जीवनकाल में तीन, पाँच, आठ, दस व ग्यारह की तपस्याएँ कीं। आपने 80 वर्ष की उम्र में वर्धमान-तप की तपस्या की। आपका पूरा परिवार धर्म-ध्यान के साथ समाज को अपनी सेवाएँ प्रदान करता है। संत-सतीयों की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहती थीं। आप अपने पीछे संस्कारी परिवार छोड़कर गई हैं। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के पूर्व निदेशक डॉ. सुरेश जी मेहता की चाची थीं।

चेन्नई- सुश्रावक श्री चम्पालाल जी लोढ़ा सुपुत्र श्री मिश्रीमल जी लोढ़ा (हीरादेसर वाले) का

स्वर्गवास 23 मार्च, 2012 को हो गया। आप नित्य सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। आपने शीलव्रत के प्रत्याख्यान अंगीकार किये थे। आप श्री मनीषमुनि जी महाराज के बड़े पिताजी थे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी मांगीदेवी, सुपुत्र श्री राजकुमार, मनोजकुमार एवं सुपुत्री विमलादेवी के भरे पूरे परिवार को छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- दृढ़धर्मी, सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती ज्ञानकँवर जी लोढ़ा धर्मपत्नी स्व. श्री

मोहनमल जी लोढ़ा का 29 अप्रेल, 2012 को संथारा सहित समाधिमरण हो गया। आपके रात्रि चौविहार त्याग, लिलोती त्याग, कच्चे पानी के त्याग के नियम कई वर्षों से चल रहे थे। सामायिक-स्वाध्याय के प्रति उनकी विशेष रुचि थी। वे सरल, सहज व सजगता के साथ जीवन जीने वाली श्राविका थीं। चारित्रवान संत-सतीवृन्द की सेवा में वे सदैव अग्रणी रहती थीं।

इन्दौर- धर्मप्रिय सुश्रावक श्री कनकमल जी संघवी का 7 मार्च, 2012 को देहान्त हो गया।

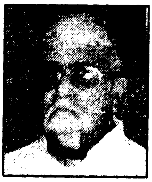

आपका सम्पूर्ण जीवन धर्म और सेवाभावना से अनुप्राणित था। वे सादा जीवन उच्च विचार के जीवंत प्रतीक थे। श्रद्धेय संत-सतियों के प्रति श्रद्धा और उनकी सेवा शुश्रूषा आपके जीवन का परम लक्ष्य था। आपने कनकमल बदामबाई संघवी पारमार्थिक ट्रस्ट के माध्यम से कई धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन किया।

होसपेट- युवा कर्मठ सेवाभावी श्री राजेशकुमार जी मेहता सुपुत्र स्व. श्री जवाहरलाल जी

मेहता का 5 अप्रेल, 2012 को 52 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। आप हँसमुख एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। सेवा के साथ सरलता, सहनशीलता, सहजता एवं विनम्रता जैसे गुणों के कारण आपका संघ-समाज में अच्छा प्रभाव था। आप देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। आपकी माताश्री श्रीमती विजया जी एवं भ्राता श्री प्रदीपजी, प्रकाशजी, अरूणजी धार्मिक कार्यों में अग्रणी हैं।

उज्जैन- धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ, श्राविकारत्न श्रीमती दर्शना जी जैन धर्मपत्नी श्री घनश्याम जी

जैन (उज्जैन वाले) का आकस्मिक निधन 17 अप्रेल, 2012 को हो गया। आप ज्ञान क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में सदा तत्पर रहती थीं। आप सामायिक-स्वाध्याय के प्रति विशेष अनुराग रखती थीं। आपने अपने जीवन में कई व्रत-नियम अंगीकार कर रखे थे। आप अपने पीछे 1 पुत्र व 3 पुत्रियों का सुसंस्कारित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। आपके पति श्री

घनश्याम जी जैन ने सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल में लेखाकार के रूप में कई वर्षों तक सेवाएँ प्रदान की हैं।

भोपाल- अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी, संतसेवी श्रावक रत्न श्री धर्मचन्द जी बाफना का 60 वर्ष

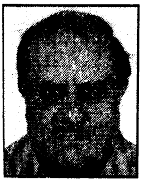

की वय में 21 फरवरी 2012 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन धार्मिक संस्कारों से पूरित था। आप प्रतिदिन सामायिक व्रत की आराधना करते थे तथा हर शनिवार चौविहार उपवास रहता था। पर्युषण में आपके 8-10 की तपस्या तथा चातुर्मास में कई तेले होते थे। स्थानक में संत-सतियों के पदार्पण पर आप उनके साथ प्रतिदिन गोचरी के लिये साथ में जाकर आने के बाद ही स्वयं जल ग्रहण करते थे। आपका जीवन संघ व समाज के लिये प्रेरणादायी था।

सवाईमाधोपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती ज्ञानदेवी जी धर्मपत्नी श्री दौलतचन्द जी जैन का

6 अप्रेल, 2012 को देहावसान हो गया। आप बहुत ही मिलनसार, शांत, हंसमुख व मृदुभाषी थीं। आचार्य श्री के प्रति आपकी व आपके समस्त परिवार की अटूट श्रद्धा थी। आपने 81 वर्षीय जीवन में 4 बार वर्षी तप, 17, 15, 11 व अनेक बार अठाई की तपस्याएँ कीं। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़ गई हैं।

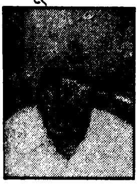

बालोतरा- श्री केवलचंद जी चौपड़ा का 9 अप्रेल, 2012 को 85 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आपका पूरा जीवन सामायिक स्वाध्याय में व्यतीत हुआ। आप प्रतिदिन 7-8 सामायिक करते थे। आपका पूरा परिवार रत्न संघ से जुड़ा हुआ है।

हिण्डौन सिटी- सुश्राविका श्रीमती कमला देवी धर्मपत्नी श्री टीकमचन्द जी जैन (शेरपुर

वालों) का निधन 27 मार्च, 2012 को हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक करती थीं। आप आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति अगाध श्रद्धा रखती थी।

जोधपुर- श्री मिनकराज जी चाम्बड़ मेहता पुत्र स्व. श्री सांवतराज जी चाम्बड़ मेहता का 78

वर्ष की वय में 15 अप्रेल, 2012 को देवलोकगमन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक एवं नवकार मंत्र का जाप करते थे। चार्तुमास में आप प्रतिदिन प्रवचन एवं दया व्रत की आराधना करते थे। आप संघ सेवा तथा समाज सेवा में हमेशा आगे रहते थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

13393 श्री पंकज कुमार जी रूणवाल, 4/161, जवाहरनगर, जयपुर (राजस्थान)
13394 श्री विजयसिंह जी सुकलेचा, आचार्य कृपालानी मार्ग, आदर्शनगर, जयपुर (राज)
13395 Shri L. D. Mehta ji, Sukarwar Peth, , Pune (M.H.)
13396 श्रीमती पूजा जी जैन, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा, जोधपुर (राजस्थान)
13397 श्रीमती ललीता जी जैन, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा, जोधपुर (राजस्थान)
13398 Shri Ashok ji Jain, Bazar Street, Mandiya (Karnataka)
13399 श्री रविन्द्र कुमार जी जैन, सदर बाजार, मंडी, जिला-पटियाला (पंजाब)
13400 श्री सुशील कुमार जी जैन, बी.एस.एन.एल. ऑफिस के पास, भरतपुर (राजस्थान)
13401 श्री सुमत प्रसाद जी जैन, काशीराम जी का चौराया, स्कीम नं. 2, अलवर (राज)
13402 श्री महावीरचन्दजी लुणावत, जैन कॉलोनी, पुष्कर, जिला अजमेर (राजस्थान)
13403 श्री अशोक कुमारजी लुणावत, जैन कॉलोनी, पुष्कर, जिला अजमेर (राजस्थान)
13404 श्री अजीत कुमारजी लुणावत, जैन कॉलोनी, पुष्कर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13405 श्री सन्तोष कुमारजी लुणावत, जैन कॉलोनी, पुष्कर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13406 श्री अरविन्द कुमारजी लुणावत, जैन कॉलोनी, पुष्कर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13407 श्री कमल कुमारजी लुणावत, जैन कॉलोनी, पुष्कर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13408 श्री अनिलकुमारजी दुधेड़िया, फाईसागर रोड़, अजमेर (राजस्थान)
13409 श्री अरविन्द जी जैन, जड़ाव नर्सरी के सामने, मेन रोड़, उदयपुर (राजस्थान)
13410 Shri Hasti Mal ji Bachhawat, Kolkatta (W.B.)
13411 Shri Y. C. Bhandari ji, Clive Row (4th Floor), Kolkatta (W.B.)
13524 Smt. Amita ji Parikh, Andheri (E), Mumbai (M.H.)
13588 श्री विजयराज जी गेलड़ा, बोरावड़ रोड़, मकराना, जिला-नागौर (राजस्थान)
13589 श्री धर्मीचंदजी कोठारी, एल.आई.सी. कॉलोनी, वैशाली नगर, अजमेर (राज.)
13590 श्री महेन्द्रजी बोथरा, फतेह टीबा, मोतीडूंगरी रोड़, जयपुर (राजस्थान)
13591 श्री सुनीलजी भंसाली, प्लाजा सिनेमा, कनॉट पैलेस, नईदिल्ली
13611 श्री ज्ञानचंदजी छाजेड़, पी-17, आनन्दपुरी, मोती डूंगरी रोड़, जयपुर (राजस्थान)
13612 Shri Kawalmal ji Lalwani, Khar (West), Mumbai (M.H.)
13613 श्री एस. के. जैन जी, पश्चिम गणेश विहार-सी, कैशोपुरा, जयपुर (राजस्थान)
13614 Shri Amit ji Jain, Bangalore (Karnataka)
13615 Miss. Priyanka ji Jain, Sawaimadhopur (Rajasthan)
13616 श्री गौरवजी टाटिया, 4 एफ/77, न्यू पावर हाउस रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
13617 श्री सिद्धार्थजी नाहटा, जैन महावीर नगर, गुरों का तालाब रोड़, जोधपुर (राज.)
13618 श्री जयेशजी कुम्भट, टैक्स स्टैण्ड के सामने, लक्ष्मीनगर, जोधपुर (राजस्थान)

महावीर जयन्ती पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ आन्ध्रप्रदेश के सौजन्य से

(मात्र 100 रुपये में आजीवन-सदस्यता)

13412 Shri Vijayrajji Sethia, Tadbund, Secunderabad (A.P.)
13413 Shri Ratanlalji Lodha, Alwal, Secunderabad (A.P.)
13414 Shri Nemi Chand Ji Kavad, Secunderabad (A.P.)

13415 Shri Mahaveerji Lalwani, Hyderabad (A.P.)
13416 Shri Pukhrajji, Kailash Market, Secunderabad (A.P.)
13417 Shri Himanderji Nahar, Secunderabad (A.P.)
13418 Shri Bhawarlalji Balar, Kphb Colony, Hyderabad (A.P.)
13419 Shri S.sampathrajji Bohra, Secunderabad (A.P.)
13420 Smt. Lalitaji Kataria, Secunderabad (A.P.)
13421 Smt. Premlataji Kataria, Secunderabad (A.P.)
13422 Shri Babulalji Kankaria Jain, Hyderabad (A.P.)
13423 Shri Jitender Kumarji Jain Pitalia, Secunderabad (A.P.)
13424 Shri Nirmalji Modi, Sikh Village, Secunderabad (A.P.)
13425 Shri Subhashji Golecha, Secunderabad (A.P.)
13426 Shri Dhanrajji Ranka, Malakpet, Hyderabad (A.P.)
13427 Shri Dhawal Bharat Shah, Hyderabad (A.P.)
13428 Shri Naveen Ji Lukad, Secunderabad (A.P.)
13429 Shri Virender Ji Surana, Secunderabad (A.P.)
13430 Shri S.k.jain Ji, Ncl Homes, Hyderabad (A.P.)
13431 Shri Mohanlalji Jain, Malkajgiri, Secunderabad (A.P.)
13432 Shri Shanthilalji Gandhi, Secunderabad (A.P.)
13433 Shri Praveen Ji Jain, Koti, Hyderabad–95 (a. P.)
13434 Shri Sumer Chandji Mehta, Secunderabad–26 (a. P.)
13435 Shri Motilalji Parasmalji Samdaria, Hyderabad (A.P.)
13436 Shri Naharmalji Tapravat, Malkajgiri, Hyderabad (A.P.)
13437 Shri Bhawarlalji Dugar, Amberpet, Hyderabad (A.P.)
13438 Shri Goutham Chandji Bhurawat, Secunderabad (A.P.)
13439 Shri Umed Singhji Dugar, Secunderabad (a. P.)
13440 Shri Narender Kumarji Bohra, Hyderabad (a. P.)
13441 Shri Bhawar Lalji Chajed, Hyderabad (a. P.)
13442 Shri Parasmalji Gandhi, Malkajgiri, Hyderabad (A.P.)
13443 Shri Pankaj Valji Nandu, Rani Gunj, Secunderabad (A.P.)
13444 Shri Bikam Chandji Dunk, Hyderabad (A.P.)
13445 Shri Meghrajji Munoth, Malkajgiri, Hyderabad (A.P.)
13446 Shri Dilip Kumarji Balgat, Sojat City (rajsthan)
13447 Shri Jain Sukan Rajji Munoth, Hyderabad (a. P.)
13448 Shri Suresh Chandji Pokerna, Secunderabad (A.P.)
13449 Shri Rajender Kumarji Surana, Secunderabad (A.P.)
13450 Shri Abhay Kumarji Jain, Hyderabad (a. P.)
13451 Shri Jagdish Prasadji Naval, Pallamapur (A.P.)
13452 Shri Suresh Chandji Sisodia, Hyderabad (A.P.)
13453 Shri Sunil Kumarji Gandhi, Secunderabad (A.P.)
13454 Shri Ugam Rajji Pokerna, Hyderabad (A.P.)
13455 Shri Amolak Chandji Gandhi, Secunderabad (A.P.)
13456 Shri Manishji Kataria, Hyderabad (A.P.)
13457 Shri Om Prakashji Jain, Hyderabad (A.P.)
13458 Shri Manoj Ji Salecha, Hyderabad (A.P.)
13459 Shri Uttam Chandji Lodha, Secunderabad (A.P.)
13460 Shri Suresh Chandji Jain, Hyderabad (a. P.)
13461 Shri Sanjay Kumarji Baidmutha, Hyderabad (A.P.)
13462 Shri Nirmal Chandji Lodha, Hyderabad (A.P.)
13463 Shri Tara Chandji Kothari, Jetpura, Ajmer (raj)
13464 Shri Padam Ji Kothari, Hyderabad (a. P.)

13465 Shri Nirmal Kumarji Nahar, Hyderabad (A.P.)
13466 Shri Jaintilalji Jain, Ramnagar, Hyderabad (A.P.)
13467 Shri Anand Rajji Bhansali, Amberpet, Hyderabad (A.P.)
13468 Shri Dilsukrajji Jain, Secunderabad (A.P.)
13469 Shri Manoj Kumarji Parakh, Hyderabad (A.P.)
13470 Shri Nemichandji Bhansali, Hyderabad (A.P.)
13471 Shri Prem Rajji Makhana, Secunderabad (A.P.)
13472 Shri Raju Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
13473 Shri Shivrajji Gandhi, Secunderabad (A.P.)
13474 Shri Shatilalji Porwal, Secunderabad (A.P.)
13475 Shri Pukhraji Bohra, Secunderabad (A.P.)
13476 Shri Surender Kumarji Srisrimal, Hyderabad (A.P.)
13477 Shri Sampath Rajji Gandhi, Hyderabad (A.P.)
13478 Shri Pankaj Kumarji Sanghvi, Hyderabad (A.P.)
13479 Shri Ashok Kumarji Jain, Hyderabad (A.P.)
13480 Shri Inderchandji Kothari, Hyderabad (A.P.)
13481 Shri M Gyanchandji Lodha, Secunderabad (A.P.)
13482 Shri Prakash Kumar Surana, Hyderabad (A.P.)
13483 Shri Trilok Ji Jain, Ballapur 'x' Road, (A.P.)
13484 Shri Kharag Singh Choraria, Secunderabad (A.P.)
13485 Shri Tejmalji Jain, Meerpet, Hyderabad (A.P.)
13486 Shri Sajjan Lalji Surana, Secunderabad (A.P.)
13487 Shri Mukesh Surana, Secunderabad (A.P.)
13488 Shri Amarchandji Surana, Secunderabad (A.P.)
13489 Shri Jinenderajji Golecha, Secunderabad (A.P.)
13490 Shri Shantilalji Munoth, Hyderabad (A.P.)
13491 Shri Uttamchandji Kataria, Secunderabad (A.P.)
13492 Shri Prakash Chandji Bohra, Secunderabad (A.P.)
13493 Shri Rahul Ji Sarnot, Daund, Pune (m.h.)
13494 Shri Tejmalji Nagawat, Indira Park, Hyderabad (A.P.)
13495 Shri Motilaljo Rathod, Secunderabad (A.P.)
13496 Shri Vijayrajji Baghmar, Bangalore (karnatak)
13497 Shri Mahaveer Chand Tated, Secunderabad (A.P.)
13498 Shri Mahaveer Chand Bohra, Hyderabad (A.P.)
13499 Shri Kamaleshji Bhansali, Goshmahal, Hyderabad (A.P.)
13500 Shri Mahender Kumarji Jain, Hyderabad (A.P.)
13501 Srimati Neetuji Jain, Hyderabad (A.P.)
13502 Shri Ganpatlalji Jarmutha, Hyderabad (A.P.)
13503 Shri Sohanlalji Katari, Hyderabad (A.P.)
13504 Shri Naveen Kumarji Jain, Hyderabad (A.P.)
13505 Shri Lalithkumarji Sanghvi, Hyderabad (A.P.)
13506 Shri Roshanlalji Kankaria, Hyderabad (A.P.)
13507 Shri Rajesh Ji Jain, Yusufguda, Hyderabad (A.P.)
13508 Shri Vinay Kumarji Mehta, Hyderabad (A.P.)
13509 Shri Jworilalji Balar, Sidamber Bazar, Hyderabad (A.P.)
13510 Shri Mahaveer Ji Kothari, Ashok Nagar, Hyderabad (A.P.)
13511 Shri Motilalji Lalwani, Feelkhana, Hyderabad (A.P.)
13512 Shri Dineshji Kucharia, Hyderabad (A.P.)
13513 Shri Jaintilalji Kataria, Hyderabad (A.P.)
13514 Shri Narpat Singhji Kathotia, Hyderabad (A.P.)

13515 Shri Rajeshji Katotia, Gandhi Nagar, Hyderabad (A.P.)
13516 Shri Dilip Kumar Jain, Hyderabad (A.P.)
13517 Shri Kanyalalji Gugalia, Yusufguda, Hyderabad (A.P.)
13518 Shri Vimal Kumarji Lodha, Hyderabad (A.P.)
13519 Shri S Ravinder Kumarji Solanki, Secunderabad (A.P.)
13520 Shri Mahender Kumarji Lunawat, Hyderabad (A.P.)
13521 Shri Himat Singhji Dhupia, Hyderabad (A.P.)
13522 Shri Rakesh Ji Doshi, Rani Gunj, Secunderabad (A.P.)
13523 Shri Anil Ji Makhana, Secuderabad (A.P.)
13525 Shri Ashokji Surana, Secunderabad (A.P.)
13526 Shri B Anand Kumarji Tated, Hyderabad (A.P.)
13527 Shri Ashok Ji Surana, Secunderabad (A.P.)
13528 Shri Ashok Kumarji Jain, Hyderabad (A.P.)
13529 Shri Amrit Porwad, Secunderabad (A.P.)
13530 Shri Balwant Lunawat, Agapura, Hyderabad (A.P.)
13531 Shri Bikam Chandji Jain, Ameerpet, Hyderabad (A.P.)
13532 Shri Babulalji Mutha, Balamrai, Secunderabad (A.P.)
13533 Shri Bachrajji Pitalia, Kacheguda, Hyderabad (A.P.)
13534 Shri Shri Bharat C Shah, Secunderabad (A.P.)
13535 Shri Chetan Mehta, Barkatpura, Hyderabad (A.P.)
13536 Shri Chanpalalji Kantilalji Dunk, Secunderabad (A.P.)
13537 Shri Dinesh Kumarji Daftari, Raichur (karnataka)
13538 Shri Dhanrajji Kataria, Khairtabad, Hyderabad (A.P.)
13539 Shri B. Gokulchandji Bhurat, Secunderabad (A.P.)
13540 Shri Girishji Kothari, Secunderabad (A.P.)
13541 Dr . Ghisulalji Jain, Hyderabad (A.P.)
13542 Shri Gyan Chandji Bohra, Secunderabad (A.P.)
13543 Shri Sanklecha Ghevariya Muni, Gadag (karnataka)
13544 Shri Jagdishji Golecha, Secunderabad (A.P.)
13545 Shri Manakchandji Singhvi, Secunderabad (A.P.)
13546 Shri M Jeetmalji Betala, Secunderabad (A.P.)
13547 Shri Jhumarmalji Jain, Yusufguda, Hyderabad (A.P.)
13548 Shri Jayendraji Shah, Kacheguda, Hyderabad (A.P.)
13549 Shri Mukesh Kumar Jain, Yusufguda, Hyderabad (A.P.)
13550 Shri Mithalalji Chanodiya, Hyderabad (A.P.)
13551 Shri Mahaveer Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
13552 Shri Mahaveer Ji Jain, Goshmahal, Hyderabad (A.P.)
13553 Shri Mahesh Kumarji Nehnawal, Hyderabad (A.P.)
13554 Shri Prakash Kumarji Dugar, Secunderabad (A.P.)
13555 Shri P Mukesh Ji Jain, Road No 1, Sainikpuri (A.P.)
13556 Shri Naresh Ji Kangoo, Hyderabad (A.P.)
13557 Shri P Poonam Chandji Jain, Hyderabad (A.P.)
13558 Shri Prakash Chandji Taprawat, Hyderabad (A.P.)
13559 Shri D Prakash Ji Jain, Secunderabad (A.P.)
13560 Shri Prakashji Surana, Secunderabad (A.P.)
13561 Shri Rajesh Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
13562 Shri Ratanchandji Kataria, Hyderabad (A.P.)
13563 Shri Rajneesh Sighvi, Osmangunj, Hyderabad (A.P.)
13564 Shri Rakesh Ji Pincha, Abids, Hyderabad (A.P.)
13565 Shri B Sajjan Rajjji Anchalia, Hyderabad (A.P.)

13566 Smt. Sunita Devi Jain, Hyderabad (A.P.)
13567 Shri Sardarmalji Bafna, Yash Towers, Indore (mp)
13568 Shri Shantilalji Pipada, Koti, Hyderabad (A.P.)
13569 Shri Naveenji Jain, Secunderabad (A.P.)
13570 Shri Sampatrajji Jain, Hyderabad (A.P.)
13571 Shri Suklalji Pokerna, Secunderabad (A.P.)
13572 Shri Vinodji Jain, Lalaguda, Secunderabad (A.P.)
13573 Shri Vijay C Shah Ji, Ranigunj, Secunderabad (A.P.)
13574 Shri Vijay Kumar Jain, Secunderabad (A.P.)
13575 Shri Ashok Kumarji Jain, Dewalipura, Baroda (gujarat)
13576 Shri Uttam Chandji Jharmutha, Secunderabad (A.P.)
13577 Shri Mahaveer Chandji Baghmar, Kuchera (raj.)
13578 Shri Mahaveer Chandji Kothari, Secunderabad (A.P.)
13579 Shri Prasan Rajji Kochar, Secunderabad (A.P.)
13580 Shri Mukeshji Kataria, Secunderabad (A.P.)
13581 Shri Manak Chandji Samdadiya, Secunderabad (A.P.)
13582 Shri Rajesh Ji Balai, Secunderabad (A.P.)
13583 Shri Kantilalji Baghrecha, Hyderabad (A.P.)
13584 Shri Dilip Kumarji Kankaria, Warangal (A.P.)
13585 Shri Shantilalji Baghrecha, Hyderabad (A.P.)
13586 Smt. Amitaji Kothari, Secunderabad (A.P.)
13587 Shri Pankaj Manchandji, Secunderabad (A.P.)
13592 Shri Surender Ji Agarwal, Hyderabad (A.P.)
13593 Shri Sampat Ji Jain, Jawahar Nagar, Hyderabad (A.P.)
13594 Shri Sumit Chand Ji Lalwani, Ahmedabad (gujarat)
13595 Shri Sandeep Ji Pagaria, Pal Road, Jodhpur (raj.)
13596 Shri Nirmal Kumar Ji Singhvi, Hyderabad (A.P.)
13597 Shri Jitendar Ji Pitiliya, Hyderabad (A.P.)
13598 Shri Anand Ji Gugliya, Ram Nagar, Hyderabad (A.P.)
13599 Shri Varsha Katariya Jain, Hyderabad (A.P.)
13600 Shri Rajendar Ji Mehta Jain, Hyderabad (A.P.)
13601 Shri Tejmal Ji Duk Jain, Saidabad, Hyderabad (A.P.)
13602 Smt. Lalitabhai Kankariya Jain, Hyderabad (A.P.)
13603 Shri Keval Chand Ji Pitiliya Jain, Hyderabad (A.P.)
13604 Shri Niranjan Ji Chanodiya Jain, Hyderabad (A.P.)
13605 Shri Basant Raj Ji Pitaliya Jain, Hyderabad (A.P.)
13606 Shri Khetmal Ji Gandhi, Tilaknagar, Hyderabad (A.P.)
13607 Smt. Sapna Ji Ghandhi Mehta, Hyderabad (A.P.)
13608 Shri Harak Chand Ji Chanodiya, Hyderabad (A.P.)
13609 Shri Tara Chand Ji Agarwal, Hyderabad-59 (A.P.)
13610 Shri Brij Mohan Ji Chokhani, Secunderabad (A.P.)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

11000/- श्री ज्ञानचन्दजी, विनयचंदजी कोठारी, जयपुर, सुश्राविका श्रीमती तेजकुमारीजी कोठारी का 75 वर्ष की आयु में 16 मार्च, 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

11000/- श्री राजकुमार जी, मुन्नालाल जी लोढ़ा (हीरादेसर वाले) हाल मुकाम चेन्नई, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री चम्पालाल जी लोढ़ा का 23 मार्च, 2012 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

5000/- पारसमल सुशीला बोहरा चेरिटेबल ट्रस्ट-जोधपुर, स्व. श्री पारसमल जी बोहरा की 50 वीं

पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला बोहरा एवं पुत्र-पुत्रवधू श्री अनिल-सुधा बोहरा द्वारा उनकी स्मृति में भेंट।

2500/- श्री नेमीचन्दजी, नीलमचन्द जी, प्रकाशचन्दजी, संजयजी, संदीप जी चोरडिया,जलगांव (महा.), परमपूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 74वें जन्मदिवस पर दर्शन-वन्दन का लाभ लेने एवं आचार्यप्रवर के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्रीमती पारसदेवीजी हीरावत, जयपुर, सप्रेम भेंट।

2000/- श्रीमती मानकंवर जी नाहटा धर्मपत्नी स्व. श्री नेमीचन्द जी नाहटा, भिलाई-छतीसगढ़, श्रीमती भारती जी सांखला की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री राजाबाबू जी, सौरभ जी चौपड़ा, जोधपुर, अपनी सुपुत्री सुश्री कोमल चौपड़ा के एम.बी.बी.एस. परीक्षा में उत्तीर्ण होने की खुशी में भेंट।

511/- श्री सोमप्रकाश जी गौरवकुमार जी जैन-बिलोपा वाले, सवाईमाधोपुर, सप्रेम भेंट।

501/- श्री प्रेमबाबूजी, सुरेशबाबूजी जैन (एण्डवा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. विनयजी जैन सुपुत्र श्री सुरेशबाबूजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री केशरीचंदजी-श्रीमती सावित्रीजी जैन(कंजौली वाले),करौली, सुपुत्र चि. चन्द्रप्रकाशजी जैन संग सौ.कां.खुशबूजी जैन सुपुत्री श्री विमल कुमारजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

501/- श्री दौलतचंदजी जैन, सवाईमाधोपुर, धर्मपत्नी श्रीमती ज्ञानदेवीजी जैन का 06 अप्रेल 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्रीमती संतरादेवीजी-श्री सुरेशचंदजी जैन, सवाईमाधोपुर, सुपुत्र चि. मनीषजी जैन के टी.सी.एस. कम्पनी में अमेरिका में सिस्टम इंजीनियर के पद पर नियुक्ति होने की खुशी में।

501/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, महेन्द्र कुमारजी, अशोक कुमारजी, मनोज कुमारजी जैन (कुण्डेरा वाले), सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री रामफूलजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री लल्लूलाल जी, धर्मेन्द्रकुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. सन्नी (कुलदीप) सुपुत्र श्री धर्मेन्द्रकुमार जी जैन का शुभ विवाह सौ. सपना सुपुत्री श्री रमेशचन्द जी जैन, इन्दौर के संग 25.4.12 को सम्पन्न होने की खुशी में।

501/- श्री जिनेश कुमार जी जैन, जयपुर, चि. रोहितराज जैन का शुभ विवाह सौ. ज्योति सुपुत्री अमीचन्द जी जैन, खेरली के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

501/- श्री घनश्याम जी जैन, जयपुर, धर्मपत्नी श्रीमती दर्शना जैन का 17.04.2012 को आकस्मिक निधन होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री सतीश कुमारजी जैन, गाजियाबाद, पुत्रवधू स्वातिजी जैन धर्मपत्नी श्री चिरागजी जैन के प्रवास की सफलता की कामनाओं के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री दिनेशजी नवलखा, बोरीवली-मुम्बई, श्री प्रकाशचंदजी नवलखा के 75वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती कमलादेवी जी चाम्बड, जोधपुर, श्रीमान् मिनकराज जी चाम्बड मेहता का 15 अप्रेल, 2012 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री नरेन्द्र जी, नवीन्द्र जी, डॉ.नवनीत जी, सिद्धित जी मेहता, जोधपुर, स्व. श्री पारसमल जी एवं स्व. श्रीमती उगमकंवर जी मेहता की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री निर्मलचन्द जी संजयकुमार जी बाघमार, जबलपुर, सप्रेम भेंट।

500/- श्री विनय जी लुणावत, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री राजेन्द्र जी लुणावत सुपुत्र स्व. श्री सुमेरमल जी लुणावत का 23.04.2012 को देवलोकगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में।

500/- श्री कमलचन्द जी बैद, जयपुर, वर्षीतप के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

3500/- श्री आनन्दचन्द जी, श्री सुरेश चन्द जी मेहता, जोधपुर, की ओर से संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री विनय जी लुणावत, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री राजेन्द्र जी लुणावत सुपुत्र स्व. श्री सुमेरमल जी लुणावत का 23.04.2012 को देवलोकगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

2500/- श्री नेमीचन्दजी, नीलमचन्द जी, प्रकाशचन्दजी, संजयजी, संदीप जी चोरडिया,जलगांव (महा.), परमपूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 74वें जन्मदिवस पर दर्शन वन्दन का लाभ लेने एवं आचार्यप्रवर के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री केशरीचंदजी-श्रीमती सावित्रीजी जैन (कंजौली वाले), करौली, सुपुत्र चि. चन्द्रप्रकाशजी जैन संग सौ.कां. खुशबूजी जैन सुपुत्री श्री विमल कुमारजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री विनय जी लुणावत, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री राजेन्द्र जी लुणावत सुपुत्र स्व. श्री सुमेरमल जी लुणावत का 23.04.2012 को देवलोकगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ-शाखा बजरिया, को साभार प्राप्त

501/- श्री प्रेमबाबू जी सुरेशबाबू जी जैन 'एण्डवा वाले', सवाईमाधोपुर, चि. विनय जैन सुपुत्र श्री सुरेशबाबू जी जैन का शुभविवाह सौ. प्रियंका सुपुत्री श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन के साथ सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को प्राप्त साभार

200000/- श्री गौतमराज जी सुराणा, चेन्नई, की ओर से सहयोग।

15000/- श्री दिलखुशराज जी मेहता, वडोदरा, की ओर से सहयोग।

11111/- श्रीमती लाडश्री लाभचन्द जी नाहर, सूरत, की ओर से सहयोग।

1000/- श्रीमती मानकंवर जी नाहटा धर्मपत्नी स्व. श्री नेमीचन्द जी नाहटा, भिलाई (छतीसगढ़), श्रीमती भारती जी सांखला की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री चंदनमल जी, सतीश कुमार जी पालरेचा-सी.ए., मुम्बई, सतीश जी के वैवाहिक जीवन के 23 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनके परिवार की ओर से भेंट।

500/- महिला मण्डल संगठन, चांदनी चौक-दिल्ली, की ओर से सहयोग।

आगामी पर्व

ज्येष्ठ कृष्णा 6	शुक्रवार	11.05.2012	पूज्यश्री कुशलचन्द्र जी म.सा. की 229 वीं पुण्य तिथि
ज्येष्ठ कृष्णा 8	रविवार	13.05.2012	अष्टमी
ज्येष्ठ कृष्णा 30	रविवार	20.05.2012	चतुर्दशी, पक्खी
ज्येष्ठ शुक्ला 8	मंगलवार	29.05.2012	अष्टमी
ज्येष्ठ शुक्ला 14	रविवार	03.06.2012	चतुर्दशी, पक्खी, आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. की 167वीं पुण्य तिथि
आषाढ कृष्णा 2	बुधवार	06.06.2012	क्रियोद्धारक दिवस
आषाढ कृष्णा 8	सोमवार	11.06.2012	अष्टमी
आषाढ कृष्णा 14	सोमवार	18.06.2012	चतुर्दशी, पक्खी

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन: 0141-2710946, 94614-56489 (मोबाइल)
Email-ahassansthan@gmail.com

प्रवेशार्थ आवेदन-पत्र

अपना नवीन फोटो लगायें

1. नाम ....
2. पिता का नाम..
3. जन्मतिथि..
4. पत्राचार का पूर्ण पता..

....

5. मोबाइल नं. .... निवास दूरभाष नम्बर .... ईमेल...............................
6. शैक्षणिक योग्यता विवरण

कक्षा/डिग्री	संस्थान/कॉलेज	बोर्ड/विश्वविद्यालय	उत्तीर्ण वर्ष	प्राप्तांक/प्रतिशत

7. विशिष्ट योग्यता / उपलब्धि..
8. धार्मिक अध्ययन ....

....

(आ) पारिवारिक विवरण

(1) पारिवारिक कुल सदस्य........... (2) परिवार का किस धर्म से सम्बन्ध........................

(3) परिवार में धार्मिक गतिविधियाँ ....

(इ) संस्थान में प्रवेश का उद्देश्य एवं लक्ष्य ....

....

(ई) सम्पर्क सूत्र (स्थानीय श्रावक)

(1) नाम.. (2) नाम ....

पता .... पता ....

दूरभाष/ मोबाइल.................................. दूरभाष/ मोबाइल ....

(उ) विशिष्ट संदर्भ सूत्र-

नाम .... पता ....

....दूरभाष/ मोबाइल ....

मेरे द्वारा दी गई उक्त जानकारी सत्य है।

आवेदन में दी गई जानकारी के गलत होने पर फार्म निरस्त किया जा सकता है।

अभिभावक हस्ताक्षर छात्र हस्ताक्षर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

गजेन्द्र निधि की इकाई

(तत्त्वावधान-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

प्रधान कार्यालय : घोड़ों का चौक, जोधपुर-342 001 (राज.)

फोन - 0291-2630490, फैक्स : 0291-2630490, website : jainratnaboard.com, email : info@jainratnaboard.com

आगामी परीक्षा (Examination Date) **22-07-2012**

आवेदन-पत्र
(Application Form)

आवेदन की अन्तिम दिनांक (Last Date of Application) **30-06-2012**

1. परीक्षार्थी का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री (Name of Candidate Shri/Smt./Miss) ....

2. पिता/पति का नाम (Name of Father/Husband) ....

3. आयु (Age) .... जन्म तिथि (Date of Birth) ....

4. शैक्षणिक योग्यता (Academic Qualification) ....

5. पत्राचार का पूरा पता (Complete Postal Address) ....

....

जिला (Dist.) .... प्रान्त (State) .... पिन कोड नं. (Pin Code No.) ☐☐☐☐☐☐

फोन नं. (Phone No.) STD Code .... (R.) .... (O.) ....

अनिवार्य रूप से भरें (M.)................... email address : ....

6. **पूर्व परीक्षार्थी निम्न जानकारी अपने प्रवेश-पत्र अथवा अंक तालिका से अवश्य भरें।**
(Old Student Please fill-up following information as per Admission Card or Mark-Sheet.)

पूर्व परीक्षा की दिनांक __/__/____ (Date of Examination which Appear) रोल नम्बर .... (Roll No.) कक्षा .... (Class) प्राप्तांक .... (Marks Obtained)

7. कक्षा (जिसमें परीक्षार्थी प्रवेश चाहता है) .... (पूर्व में उत्तीर्ण कक्षा के आगे के लिये आवेदन करें)
(Class to be appeared)

8. परीक्षा केन्द्र (Examination Centre) .... केन्द्र कोड संख्या (Centre Code No.) ☐

9. परीक्षा का माध्यम (Medium of Examination) हिन्दी (Hindi) ☐ अंग्रेजी (English) ☐

मैं इस बोर्ड द्वारा आयोजित आध्यात्मिक परीक्षा में भाग लेना चाहता/चाहती हूँ। मैं बोर्ड की परीक्षा के सभी नियमों व निर्देशों का पालन करूँगा/करूँगी।

(I want to participate in Religious examination as conducted by this Board. I shall abide by all rules & regulations of Board Examination)

दिनांक (Date) ..../........../..........

आवेदक के हस्ताक्षर
(Signature of Applicant)

नोट : 1. परीक्षार्थी की न्यूनतम आयु 10 वर्ष होना अनिवार्य है।
(Candidate must have 10 years of age.)

2. सुचारू व व्यवस्थित परीक्षा हेतु अन्तिम दिनांक के पूर्व अपना आवेदन जमा करायें।
(For well manage Application Form should be submitted last date. Please Co-oprate us.)

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 66 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 14 से 21 अगस्त 2012** तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **15 जुलाई 2012** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम......................जिला.............प्रान्त................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन..
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या..
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.......................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?........................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स- 2636763, मो.-98280-32215 (संयोजक), 94610-13878 (सचिव), 94142-67824 (का. प्रभारी) ,ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा से प्रतिकार करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदनें व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती
डेवलोपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तृष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है ।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती   जयगुरु हीरा   जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
TMT REBARS
yes, the best

DRI Plant

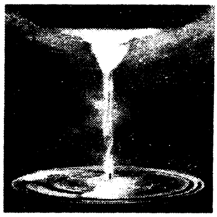
Electric Arc Furnace

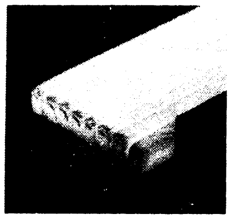
Billets

Rolling Mill

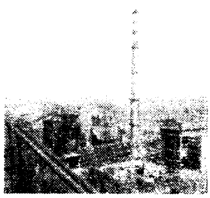
Captive Power Plant

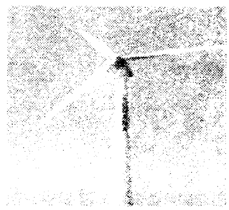
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय !

हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का ।
लाभ बड़ा इसके पालन का ।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

समस्त गुरु भाईयों को सादर जय जिनेन्द्र !

आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के जन्म दिवस वर्ष 2010-11 को अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा शताब्दी वर्ष के रूप में मनाने के लिए आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई । यह एक पंचवर्षीय एवं बहुउद्देश्यीय योजना है, जिसे पाली में संघ द्वारा दो वर्ष के लिए आगे विस्तार कर दिया गया है ।

इस वर्ष योजनान्तर्गत छात्र-छात्राओं के 370 नवीनीकरण आवेदन पत्र एवं 200 नवीन आवेदन पत्र हमें प्राप्त हुए हैं । नवीन आवेदन करने वाले छात्र-छात्राओं में से इस वर्ष 125 विद्यार्थियों का चयन हुआ है ।

गत पांच वर्षों से योजना में छात्रवृत्ति कोष द्वारा छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति वितरण आप जैसे सरलमना, धर्मनिष्ठ गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग के कारण हो पाया है और इस वर्ष भी हमें छात्रवृत्ति कोष में आप जैसे उदारमना दानदाताओं के पूर्ण सहयोग की आवश्यकता है, जिससे हम सब मिलकर छात्र-छात्राओं का भविष्य उज्जवल बनाने में सहायक बन सकें । आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी आप इस योजना के उद्देश्य को पूरा करने में संघ का सहयोग करेंगे ।

हमारा यह विश्वास है कि यह योजना न केवल छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से भी नींव का पत्थर साबित होगी । छात्रवृत्ति योजना के तहत् संचालित शिविरों के माध्यम से अनेक छात्र-छात्राएँ संघ के कर्मनिष्ठ स्वाध्यायी एवं ऊर्जावान कार्यकर्त्ता के रूप में उभरे हैं। परिषद् के प्रत्येक कार्यक्रम व आयोजन आपके स्नेह व निरन्तर सहयोग से ही गतिमान हैं तथा इस योजना की सफलता में भी आपके गतिमान निरन्तर सहयोग की अपेक्षा है ।

अनन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते हैं, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं । कोष का खाता विवरण इस प्रकार है -

Scholarship Fund Bank A/c Details
A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168

सहयोग राशि भेजने एवं योजना संबंधित अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

1. **Ashok Kavad**, Chennai (9381041097)
2. **Sumtichand Mehta**, Pipar (9414462729)
3. **Mahendra Surana**, Jodhpur (9309087760)
4. **Budhmal Bohra**, Chennai (9444235065)
5. **Rajkumar Golecha**, Pali (9829020742)
6. **Manoj Kankaria**, Jodhpur (9414563597)
7. **Praveen Karnavat**, Mumbai (9821055932)
8. **Kushalchand Jain**, Sawai Madhopur (9460441570)
9. **Jitendra Daga**, Jaipur (9829011589)
10. **Mahendra Bafna**, Jalgaon (9422773411)
11. **Harish Kavad**, Chennai (9500114455)
12. **Manish Jain**, Chennai (9543068382)

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53, Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from:

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 05 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मई, 2012 ★ ज्येष्ठ, 2069

Kalpataru
AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विरदराज सुराणा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन